मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 59 | अंक : 08 | फरवरी, 2019 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹15

सत्यमेव जयते

श्री गोविन्द सिंह डोटासरा
राज्य मंत्री
शिक्षा (प्रारम्भिक एवं माध्यमिक) विभाग
(स्वतंत्र प्रभार)
पर्यटन एवं देवस्थान विभाग
राजस्थान सरकार

शिक्षक होने की सार्थकता

शिक्षा विभाग के माध्यम से राज्य के शिक्षा अधिकारियों, संस्थाप्रधानों, शिक्षकों एवं मंत्रालयिक व सहायक कर्मचारियों के वृहत परिवार से जुड़कर मुझे आत्मिक प्रसन्नता एवं गौरव की अनुभूति हो रही है। शिक्षा के माध्यम से ही समाजोत्थान एवं राष्ट्र निर्माण का महान कार्य संभव है। इस महान कार्य के लिए इतने महत्त्वपूर्ण विभाग का उत्तरदायित्व प्रदान कर हमारे यशस्वी मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत जी ने मेरे में जो विश्वास प्रकट किया है, उसके लिए मैं उनके प्रति विनम्र आभार व्यक्त करता हूँ।

महात्मा गाँधी सदाचार और निर्मल जीवन का आधार शिक्षा को ही मानते थे। आज भौतिक विकास की अंधी दौड़ में मानवीय मूल्य और उच्च सामाजिक प्रतिमान जैसे विलुप्त होते जा रहे हैं। भारतीय संस्कृति में मानवता एवं प्राणी मात्र के प्रति उपकार व सेवा भावना पर जोर दिया गया है। मैं चाहूँगा कि हमारे शिक्षक विद्यार्थियों में इन नैतिक एवं चारित्रिक गुणों का विकास करने में अपनी 'गुरु-भूमिका' निभाएँ, इसी में उनके शिक्षक होने की सार्थकता निहित है।

वर्तमान सत्र 2018-19 कक्षागत शिक्षण, अधिगम एवं क्रीड़ा व विविध पाठ्येतर सहगामी गतिविधियों के आयोजन के उपरान्त अब वार्षिक परीक्षाओं के दौर में पहुँच गया है। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान की प्रायोगिक परीक्षाएँ शुरू हो गई हैं और सैद्धांतिक परीक्षाएँ अगले माह में होनी हैं। इस निर्णायक समय में मेरी गुरुजन से अपील है कि वे अपना सर्वोत्तम 'Best' विद्यार्थियों को अर्पित करें ताकि वे परीक्षाओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन कर उत्तम परिणाम हासिल कर सकें। विद्यार्थी ही नहीं वरन् उनके माता-पिता भी बड़ी आशा भरी नजरों से आपको देख रहे हैं। उनकी उम्मीदों को आप गुरुजन ही पूरा कर सकते हैं।

स्वामी विवेकानंद ने एक बार कहा था, ''मनुष्य में जो सम्पूर्णता गुप्त रूप से विद्यमान है, उसे प्रकट करना ही शिक्षा का कार्य है।'' मुझे पूर्ण विश्वास है कि शिक्षा रथ के सारथी शिक्षक अपने प्रभावी शिक्षण एवं अनुकरणीय कार्य व्यवहार से विवेकानन्द जी की इस अपेक्षा के अनुरूप विद्यार्थी तैयार करने में खरे उतरेंगे।

मैं भी एक शिक्षक पुत्र हूँ। मेरे मन में शिक्षकों के प्रति अपार आदर और स्नेह भाव है। किसी भी देश समाज का भविष्य उनके विद्यालयों में आज निर्मित हो रहा है और उसके निर्माता शिक्षक हैं। शिक्षक बनना किसी सौभाग्य से कम नहीं होता अपनी प्रारंभिक स्कूली शिक्षा के दौर के गुरुजन को जब मैं स्मरण करता हूँ तो मेरा सिर श्रद्धा से झुक जाता है कितने संवेदनशील मेहनती और बाल हितैषी थे वे गुरुजन! मैं आज की पीढ़ी के शिक्षकों से ऐसी ही अपेक्षा रखता हूँ।

शुभकामनाओं के साथ!

(गोविन्द सिंह डोटासरा)

"भारतीय संस्कृति में मानवता एवं प्राणी मात्र के प्रति उपकार व सेवा भावना पर जोर दिया गया है। मैं चाहूँगा कि हमारे शिक्षक विद्यार्थियों में इन नैतिक एवं चारित्रिक गुणों का विकास करने में अपनी 'गुरु-भूमिका' निभाएँ, इसी में उनके शिक्षक होने की सार्थकता निहित है।"

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 59 | अंक : 8 | माघ-फाल्गुन कृ. २०७५ | फरवरी, 2019

प्रधान सम्पादक
नथमल डिडेल

वरिष्ठ सम्पादक
संतोष शर्मा

सम्पादक
मुकेश व्यास

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ **15**

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 75
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 150
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 200
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
फैक्स : 0151-2201861
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in
shivirasecedubkn@gmail.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- परीक्षा : मूल्यांकन का माध्यम 5
  आलेख
- शुद्ध बुद्धि-प्रवर्तकम् 6
  सतीश चन्द्र श्रीमाली
- वसंत के पावन प्रसंग 7
  रामगोपाल राही
- छत्रपति शिवाजी महाराज 8
  विजयसिंह माली
- रेडियो का सुहाना सफर 10
  सुभाष चन्द्र कस्वाँ
- नवजीवन है वसंत 11
  नरपत दान
- विश्वविख्यात भारतीय वैज्ञानिक 12
  शंकर लाल माहेश्वरी
- स्कूल में रेलगाड़ी 15
  गोपाल सिंह राठौड़
- बदलते परिवेश में शिक्षा, शिक्षक व शिक्षार्थी 16
  सम्पत लाल शर्मा 'सागर'
- राजस्थान की लोककथाएँ 17
  जयप्रकाश राजपुरोहित
- सहजन : कुपोषण का अंत 19
  दीपक जोशी
- लेखाशास्त्र 22
  विकास चन्द्र 'भारू'
- प्रशिक्षण क्यों, किसे व कैसे 31
  डॉ. डी.डी. गौतम
- राजकीय विद्यालयों का बदलता स्वरूप 34
  दिलीप परिहार
- दसवीं बोर्ड परीक्षा की तैयारी 36
  'दीक्षा ऐप' के साथ
  नीरज काण्डपाल
- विज्ञान : प्रायोगिक परीक्षा की उपादेयता 37
  राजेन्द्र कुमार स्वामी
- मोबाइल और इंटरनेट में उलझा बचपन 38
  दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश'

रपट

- पाई ओलंपिक का भव्य आगाज 39
  सत्यपाल गोदारा
- गुरु वंदन एवं पूर्व विद्यार्थी संगम 40
  लक्ष्मी चौधरी
- आधुनिक तकनीक से विद्यार्थी पाठ्यक्रम का अच्छे व प्रभावी ढंग से अध्ययन कर सकेंगे-हरीश चौधरी 41
  रामदयाल
- 'एकलव्य' एवं 'मीरा' पुरस्कार शिक्षा राज्यमंत्री के कर कमलों से 41
  मोहन गुप्ता 'मितवा'
- 60वां रोवर मूट व 46वीं रेंजर मीट 42
  नीरज जैन
- विद्यार्थियों की दस दिवसीय अन्तर राज्य शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा 2018-19 42
  विजय सारस्वत

स्तम्भ

- पाठकों की बात 4
- आदेश-परिपत्र 25-30
- पञ्चाङ्ग (फरवरी, 2019) 30
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 30
- शाला प्रांगण 47
- चतुर्दिक समाचार 49
- हमारे भामाशाह 50
- व्यंग्य चित्र-**रामबाबू माथुर** 21, 37

पुस्तक समीक्षा 43-46

- छोटा-छोटा सुख-दुख
  सम्पादक : बुलाकी शर्मा
  समीक्षक : **डॉ. मदन गोपाल लाढ़ा**
- माँ, लेखक : डॉ. शिवराज भारतीय
  समीक्षक : **डॉ. मूलचंद बोहरा**
- मेह बाबो आयो, लेखक : ओम प्रकाश तँवर
  समीक्षक : **विश्वनाथ भाटी**
- पथरीले पथ का पथिक
  लेखक : हुक्मीचन्द शर्मा
  समीक्षक : **रामजीलाल घोड़ेला**

मुख्य आवरण : नारायणदास जीनगर, बीकानेर

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

▼ परिचय

श्री ओम प्रकाश कसेरा
निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा और
पंचायती राज (प्रारम्भिक शिक्षा) विभाग

भारतीय प्रशासनिक सेवा के ऊर्जावान युवा अधिकारी श्री ओम प्रकाश कसेरा ने 7 जनवरी 2019 को निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा और पंचायती राज (प्रारम्भिक शिक्षा) विभाग का पद भार ग्रहण किया। आप का जन्म दिनांक 05 अक्टूबर 1982 है। वाणिज्य विषय में स्नातक होने के साथ आप C.W.A., C.S., C.A. तथा M.BA. उपाधि प्राप्त हैं।

श्री कसेरा पूर्व में सब डिविजनल ऑफिसर बारां; मैनेजिंग डायरेक्टर, राजस्थान मेडिकल सर्विसेज कॉर्पोरेशन लिमिटेड, जयपुर; कमिश्नर म्यूनिसिपल कॉर्पोरेशन, जोधपुर; कलक्टर एण्ड डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट जैसलमेर; कलक्टर एण्ड डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट प्रतापगढ़ के रूप में पदस्थापित रहे।

श्री ओम प्रकाश कसेरा विनम्र, सरल, दृढ़निश्चयी और शिक्षा के प्रति संवेदनशील हैं। आप विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ राजस्थान को शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट पहिचान दिलाने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

▼ चिन्तन

विस्मरन्ति स्वरूपं ये
व्यक्ता चोत्तरदायिता।
यैः पतन्ति तु पातस्य
गर्ते ते निश्चितं नराः।।

अर्थात्-जो आत्मस्वरूप को भूलते और उत्तरदायित्वों से विमुख होते हैं, वे पतन के गर्त में गिरते हैं।

(प्रज्ञो. प्र. मं., अ. 2.27)

पाठकों की बात

- तिरंगे आवरण पृष्ठ से सजे जनवरी 2019 के अंक के हाथों में आते ही गणतंत्र दिवस की उमंगें लहराने लगी। विभाग के नए मंत्री का स्वागत, मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह, राष्ट्रध्वज की विकास यात्रा एवं भारतीय युवा शक्ति के नायक-स्वामी विवेकानंद, गोविन्द नारायण कुमावत का कॅरियर डे एवं नेताजी सुभाष चन्द्र बोस पर प्रकाशित लेख सूचना एवं शिक्षाप्रद लगे। कान्ता कल्ला का 'बच्चों में जगाएँ पढ़ने की रुचि' एवं सत्यनारायण पंवार का नैतिक शिक्षा के कारक आलेख वर्तमान समय की आवश्यकता बनकर सामने आए कि कैसे इस भागमभाग के दौर में हम बच्चों को पुस्तकों एवं नैतिक शिक्षा का महत्त्व नहीं बता पा रहें हैं। बच्चों को उनके जन्मदिवस या अन्य किसी विशेष अवसर पर उपहार में साहित्य भेंटस्वरूप देना एक सराहनीय विचार है, जिसका हर अभिभावक को पालन करना चाहिए। नूतनबाला कपिला की 'एक बालिका जिसने सोच बदल दी' संस्मरण ने भी एक गम्भीर विषय की ओर सबका ध्यान खींचा है। आदेश परिपत्र, शिविरा पंचांग, शाला प्रांगण आदि स्थाई स्तम्भ भी उपयोगी थे। पत्रिका में समसामयिक विषय या मासिक इतिहास के स्थाई स्तम्भों को जोड़कर अधिक उपयोगी बनाया जा सकता है। शानदार अंक के लिए 'टीम शिविरा' का आभार।

नरेश बिशु ऊपनी, **बीकानेर**

- माह जनवरी 2019 के अंक का पृष्ठ पलटते ही 'छपते-छपते स्वागत! अभिनन्दन! के माध्यम से श्री गोविन्द सिंह डोटासरा राज्य मंत्री शिक्षा विभाग (प्राथमिक एवं माध्यमिक) स्वतंत्र प्रभार पर्यटन विभाग एवं देवस्थान विभाग का स्वागत किया गया है। साथ ही उनका जीवन परिचय पढ़कर यह आशा जगी कि एक नौजवान मंत्री के हाथों में विभाग की कमान एवं नन्हें-मुन्ने विद्यार्थियों के भविष्य की बागडोर आई है तो और बेहतर होगा एवं अपनी ऊर्जा एवं नेतृत्व कुशलता से सरकारी विद्यालयों में आम जनता का विश्वास और बढ़ेगा। मुकेश व्यास की विशेष रपट 'मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह-2018' को पढ़कर इस बात कि कल्पना हुई कि यदि प्रत्येक कर्मचारी इन सम्मानित मंत्रालयिक कार्मिकों की तरह हो जैसा कि निदेशक महोदय ने बताया तो शिक्षकों का एक बहुत बड़ा भार कम हो जाए एवं उनके अनावश्यक कार्यालयों के चक्कर समाप्त हो जाएँगे। कमलनारायण पारीक के 'भारतीय युवा शक्ति के नायक-स्वामी विवेकानन्द पर प्रकाशित लेख जानकारीप्रद था जिसमें स्वामीजी के सम्पूर्ण जीवन के घटनाक्रम को अच्छे से संक्षेप में समेटा है। सिद्धार्थ कुमार गौरव द्वारा शाला सिद्धि पर प्रकाशित लेख पढ़कर इसके सम्बन्ध में इसके प्रयोजन की जानकारी प्राप्त हुई एवं यह प्रयास भी बेहतर लगा, परन्तु साथ ही यह बात भी उठी कि इस प्रकार के ऑनलाइन कार्य का समस्त भार अन्ततोगत्वा शिक्षक को वहन करना होता है, इसमें अधिक ऑनलाइन पोर्टल विकसित कर दिए कि बिना मानव संसाधन के तो अब ये शिक्षण में बाधक नजर आने लगे हैं। डॉ. श्याम मनोहर का प्राचीन भारत में समय की सापेक्षता लेख एवं उसमें शामिल पौराणिक भारतीय कथाओं का उल्लेख का आइन्स्टीन से पूर्व ही समय की सापेक्षता के उदाहरण भारतीय वेद शास्त्रों में होना बताया जो कि गौरवान्वित करने वाला था। गत अंकों की तरह ही स्थाई स्तम्भ संग्रहणीय थे। लेखकों एवं सम्पादक मण्डल को एक और बेहतर अंक के लिए बधाई।

योगेश चन्द्र तीतरी, **राजसमंद**

- शिविरा पत्रिका माह जनवरी-2019 के अंक में बालिका शिक्षा से संबंधित नूतन बाला कपिला का आलेख 'एक बालिका जिसने सोच बदल दी' बालिका शिक्षा हेतु प्रेरणाप्रद है। शिक्षकों को बाल विवाह रोकने में अहम भूमिका निभानी चाहिए। इस आलेख में लड़कियों को शिक्षा पूर्ण कर मजबूत बनाने की बात प्रेरणास्पद है। हमारे विद्यालयों में 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' अभियान के तहत सभाओं एवं रैलियों का आयोजन करना चाहिए। हमें अभिभावकों को बालिकाओं की लाभार्थी योजनाओं से अवगत कराना चाहिए। आज हमारे समाज में स्त्रियों, बालिकाओं की स्थिति काफी हद तक सुधरी है, परन्तु पूर्ण रूप से नहीं। यह तभी संभव है जब बालिकाएँ शिक्षित हों तथा अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाएं। अतः समाज को बालिका शिक्षा के प्रति जागरूक करना चाहिए। जनवरी के अंक में राज्यस्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी सम्मान समारोह की चित्र वीथिका देखकर आनंद की अनुभूति हुई। सम्पादक मण्डल को बधाई व धन्यवाद।

मनोज जे. दीक्षित, **नई दिल्ली**

सत्यमेव जयते

नथमल डिडेल
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

परीक्षा : मूल्यांकन का माध्यम

शिक्षा निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षक अध्यापन के द्वारा और विद्यार्थी अपने अध्ययन से सत्रपर्यन्त कड़ी साधना करते हैं। सत्रान्त में शिक्षक और विद्यार्थी सर्वश्रेष्ठ परिणाम की आशा करते हैं। परीक्षा उनके मूल्यांकन का माध्यम बनती है। हमारा दायित्व है कि विद्यार्थी आनन्ददायी वातावरण में सहजता से परीक्षा दें। विद्यार्थियों पर परीक्षा का तनाव नहीं हो वे भयमुक्त होकर अपने विषय में प्राप्त ज्ञान को सर्वश्रेष्ठ रूप में प्रदर्शित कर सकें, उच्चतम अंक प्राप्त करें। मुझे जानकारी है कि विद्यालयों में शिक्षकों ने सत्रपर्यन्त विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण अध्यापन करवाया है। परीक्षा की दृष्टि से विशेष कक्षाएँ आयोजित करके न केवल उनकी समस्याओं का हल किया है अपितु उनमें सर्वश्रेष्ठ देने का आत्मविश्वास भी जाग्रत किया है। परीक्षा कार्यक्रम घोषित हो चुका है, बोर्ड परीक्षाएँ मार्च में हैं। अभी भी जहाँ आवश्यक है शिक्षक अपने विद्यार्थियों के लिए निदानात्मक और उपचारात्मक कक्षाएँ लगाएं और विद्यार्थियों की शत-प्रतिशत सफलता सुनिश्चित करें।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए हमारे शिक्षकों ने सत्रपर्यन्त भगीरथी प्रयास किए हैं वहीं राजकीय विद्यालयों के भौतिक स्वरूप में चार चाँद लगाने में हमारे भामाशाहों का योगदान सराहनीय रहा है। 'डोनेट टू ए स्कूल' के तहत भामाशाहों विशेषत: शिक्षकों ने अपने क्षेत्र के विद्यालयों के लिए बढ़-चढ़ कर सहयोग किया है। विभाग अपने शिक्षक भामाशाहों के इस योगदान के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता है, साथ ही आशा करता है कि समाज के अन्य लोगों में भी शिक्षा के लिए सहयोग देने की भावना बलवती होगी।

28 फरवरी, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस है। विज्ञान दिवस एक दिन उत्सव मनाकर इतिश्री कर लेने का अवसर नहीं है यह दिवस हमें प्रेरणा देता है कि हम दृढ़प्रतिज्ञ होकर अपने विद्यार्थियों और समाज के प्रत्येक नागरिक में वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा जाग्रत करेंगे। 22-23 जनवरी 2019 को इन्स्पायर अवार्ड मानक [**Inspire** (Innovation in Science Pursuit For Inspired Research) **Manak** (Million minds augmenting national aspiration and knowledge)] राज्यस्तरीय प्रदर्शनी बीकानेर में बाल वैज्ञानिकों द्वारा बनाये गये मॉडल देखकर लगा कि राजस्थान में भी बच्चों में असीम प्रतिभा है, जरूरत है तराशने की और उन्हें उचित प्लेटफॉर्म प्रदान करने की।

आप सभी को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

(नथमल डिडेल)

"शिक्षा निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षक अध्यापन के द्वारा और विद्यार्थी अपने अध्ययन से सत्रपर्यन्त कड़ी साधना करते हैं। सत्रान्त में शिक्षक और विद्यार्थी सर्वश्रेष्ठ परिणाम की आशा करते हैं। परीक्षा उनके मूल्यांकन का माध्यम बनती है। हमारा दायित्व है कि विद्यार्थी आनन्ददायी वातावरण में सहजता से परीक्षा दें। विद्यार्थियों पर परीक्षा का तनाव नहीं हो वे भयमुक्त होकर अपने विषय में प्राप्त ज्ञान को सर्वश्रेष्ठ रूप में प्रदर्शित कर सकें, उच्चतम अंक प्राप्त करें।"

वसन्त पंचमी

शुद्ध बुद्धि - प्रवर्तकम् दिवस

❐ सतीश चन्द्र श्रीमाली

हम में हमारी पुरातन वैदिक संस्कृति पर गर्व होना चाहिए और उन शोधकर्त्ता ऋषियों के प्रति आदर के भाव रखने चाहिए जिन्होंने मानव कल्याण के लिए मानव देह पर होने वाले प्रकृति के प्रभाव से हमें अवगत करवाने का कार्य किया। तभी व्यक्ति ''शरीरम् माध्यम खलु धर्म साधनम्'' की सार्थकता को पूर्ण कर पाता है।

पृथ्वी के प्रत्येक प्राणीमात्र को सूर्य-चन्द्र प्रभावित करते हैं। इसी विषय को सविस्तारपूर्वक हमारे ऋषियों ने अपने तपोबल से प्राप्त दिव्य दृष्टि से प्रामाणिकता के साथ समझा-परखा। तत्पश्चात् उन्होंने मानवमात्र के कल्याण हेतु इसे जन-जन तक अवगत करवाने का विविध माध्यमों से कार्य किया। जब हम ऋषियों द्वारा रचित आर्ष ग्रन्थों का पारायण करते हैं तो ज्ञात होता है कि ऋषियों का चिन्तन था कि मानव समाज में अल्प बुद्धि के साथ जन्म लेने वाले शिशु को उसकी आयु-वृद्धि के अनुसार यदि शिक्षा नहीं मिलेगी तो वह अशिक्षित ही रहेगा। उसका जीवन पशुवत् रहेगा। अतः उसे आयु के अनुसार अनिवार्य रूप से शिक्षा दी जानी चाहिए। इसी चिन्तन का प्रतिफल है, हमारे ऋषियों द्वारा प्रणित भाषा शास्त्र जिसमें शब्दों की व्युत्पत्ति का सविस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। जब हम वर्णमाला उसके उच्चारण का शरीर के अवयवों पर होने वाले प्रभावों के सम्बन्धों के बारे में अध्ययन करते हैं तो ज्ञात होता है कि इनका सम्बन्ध काल (समय) से भी जुड़ा हुआ है, जिनमें दिवस (प्रातः मध्याह्न सायं-रात्रि) तिथि पक्ष (शुक्ल-कृष्ण), वार, नक्षत्र, मास आदि सम्मिलित हैं और इन सभी का निर्धारण सूर्य-चन्द्र की गति से हुआ है।

संगीत शास्त्र में प्रत्येक राग का काल (समय) निर्धारित हुआ है। चूंकि विद्वानों का मानना है कि कालानुसार प्रत्येक राग के उच्चारित वर्णों में जो तीव्रता है, उसका शरीर पर, उसके उच्चारण-श्रवण का प्रभाव होता है। अतः असमय उच्चारित राग के गायन को निषेध माना गया है।

इसी प्रकार हमारे पर्व दिवस भी प्रकृति से जुड़े हुए हैं। उनके आयोजनों में भी प्रकृति (देवी-देवताओं) की पूजा-स्तुति में शब्दों और समय की प्रधानता रहती है। इसी क्रम में हमें माघ मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मनाए जाने वाले पर्व दिवस 'वसन्त पंचमी' के बारे में

जो वर्णन प्राप्त है, वह भी जानने योग्य है। वसन्त पंचमी का पर्व शिक्षा-ज्ञान प्रदायिनी भगवती सरस्वती जी के जन्म दिवस के रूप में उनकी पूजा-अर्चना कर मनाया जाता है। इस दिन लोग पीत वस्त्र धारण करते है। विद्यालयों में भी विद्यादायिनी श्री माँ शारदा की पूजा अर्चना की जाती है। देवालयों को पीले रंग के पुष्पों से सजाया जाता है। चूंकि पीला रंग उष्ण-प्रकृति का प्रतीक है, जो जड़ता को समाप्त करता है। यह ज्ञान-विद्या-एकाग्रता-मानसिक एवं बौद्धिक उन्नति का प्रतीक है। वैदिक काल में अध्ययनरत ब्रह्मचारी पीतवस्त्र ही धारण करते थे।

माघ मास का शुक्ल पक्ष एवं इसी पक्ष की पंचमी तिथि को क्रमशः 'मेधा विवर्धनम्' एवं 'बुद्धिवर्धनम्' माना गया है। वस्तुतः यह दिवस 'शुद्ध बुद्धि-प्रवर्तकम्' दिवस है। जिसे तन्त्र ग्रन्थों में वर्णित किया गया है। प्राणतोषिणी तन्त्र में उल्लेखित है कि पंचमी तिथि का पूजन करके तत्पश्चात् सरस्वती जी का पूजन करना चाहिए (ततस्तु पूजयेद् देवी शारदा वाग्-विलासिनीम्) पंचमी तिथि के मन्त्र में वाग्भव बीजाक्षर 'ऐं' का वर्णन है। यही मन्त्र सरस्वती जी के पूजन में प्रयुक्त हुआ है। इस मन्त्र के सन्दर्भ में वर्णित है-

क्रोध-कालात्मकं कुर्याद् भौतिकं वाग्भवं स्मृतम्।
नाद-बिन्दु-समायुक्तं समाधायोग्र-भैरवीम्।
बीज येतत् तु कथितं शुद्ध-बुद्धि-प्रवर्तकम्।।

उक्त वर्णन में आया है कि क्रोध बुद्धि को कलुषित करने का हेतु है जिससे मनुष्य का पतन होता है। अतः आचार-विचार की शुद्धता के साथ मन्त्र की उपासना ही शुद्ध-बुद्धि-प्रवर्तक मानी गयी है। जिसका प्रारम्भ दिवस 'वसन्त-पंचमी है।

उक्त मन्त्र एवं देवी की उपासना करने वाले उपासकों-साधकों के ज्ञान का प्रभाव हमें आज भी समय-समय पर दृष्टिगोचर होता है, जब हम उनके द्वारा अलौकिक ज्ञान से युक्त उनके क्रियमाण कर्म को देखते हैं। प्रसंगवश मैं उल्लेखित करना चाहूँगा कि कुछ समयावधि पूर्व ही दूरदर्शन पर एक इलेक्ट्रोनिक मीडिया ने अपने चैनल पर एक कार्यक्रम-दर्शाया था। जिसमें जैन सम्प्रदाय के एक संन्यासी जिनकी आयु लगभग 15-17 वर्ष की थी। उनसे उस कार्यक्रम में उपस्थित जनसमूह में से 200 व्यक्तियों ने विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछे। सम्पूर्ण प्रश्नों को सुनने के पश्चात् उन्होंने उसी क्रम में पुनः सभी प्रश्नों के प्रत्युत्तर दिए। एक भी प्रश्न न तो क्रम से विलग था और न ही अनुत्तर। उनकी मेधा की विलक्षणता को देख सभी दर्शनार्थी अचम्भित हो गए। जब उनसे पूछा गया कि ऐसा कैसे सम्भव है। उन्होंने कहा-यह माँ शारदा की उपासना एवं गुरुजनों के आशीर्वाद से सम्भव है। उनके मंच पर वाग्भव बीज मन्त्र 'ऐं' के बड़े-बड़े पोस्टर भी लगे हुए थे।

अतः हमें ज्ञानार्जन के श्रेष्ठ फल की प्राप्ति के लिए विद्याध्ययन के साथ-साथ हमारे आचार-विचार की शुद्धता-पवित्रता पर विशेष ध्यान रखना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति में बुद्धि है जो प्रकृति प्रदत्त है। जिसका उल्लेख श्रीमद्भगवद् गीता में इस प्रकार से किया गया है-

बीजं माँ सर्वभूतानां विद्धिपार्थ सनातनम्।
बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेज स्विनामहम्।।
(अध्या.07 श्लोक 10)

अर्थात्- बुद्धिमानों में बुद्धि मैं हूँ। बुद्धि के कारण ही वे बुद्धिमान कहलाते है। अगर उनमें बुद्धि न रहे तो उनकी बुद्धिमान संज्ञा नहीं रहेगी।

अतः व्यक्ति को समझना चाहिए उसके अन्दर स्थित बुद्धि प्रकृति प्रदत्त है, उसे पवित्र

रखकर ही ज्ञानार्जन करना चाहिए। यदि अनुचित मार्गों का अनुसरण कर स्वार्थ साधने की चेष्टा करते हैं तो ऐसा मार्ग ही बुद्धिमान संज्ञा को नष्ट करने वाला होता है और व्यक्ति अज्ञानी कहलाता है।

अतः बुद्धिमान को ज्ञानी से कम महत्त्व दिया गया है चूंकि ज्ञानी व्यक्ति सदैव विवेक युक्त बुद्धि एवं सतोगुण से युक्त होता है तथा उसके कर्म सतफल देने वाले होते हैं। इसलिए भगवान ने उसे अपना स्वरूप बताते हुए कहा है- 'ज्ञानी त्वामैव मे मतम्''।

इसके विपरीत प्रकृति रखने वालों के प्रसंग में कहा गया है-

मोघाशा मोघकर्माणो मोघज्ञाना विचेतसः।
राक्षसीमासुरीं चैव प्रकृतिं मोहिनी श्रिता।।
(अध्या 9 श्लोक-12)

अर्थात्- जो आसुरी राक्षसी और मोहिनी प्रकृति का ही आश्रय लेते हैं, ऐसे अविवेकी मनुष्यों की सब आशाएँ व्यर्थ होती हैं, सब शुभ कार्य व्यर्थ होते हैं, सब ज्ञान व्यर्थ होते हैं अर्थात् उनकी आशाएँ, कर्म और ज्ञान सत्फल देने वाले नहीं होते हैं।

अतः बुद्धि को सतोगुण से युक्त एवं चरित्र को श्रेष्ठ बनाए रखने के लिए जिनकी पालना करना आवश्यक है वे हैं-

अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।
दान दया दमः शान्ति सर्वेषां धर्म साधनम्।।

साथ ही साथ यह समझना आवश्यक है कि सरस्वती जी के स्वरूप में दर्शायी गयी प्रतीकात्मक वस्तुएँ यथा-वीणा, पुस्तक एवं अक्षमाला (वर्णमाला) के प्रत्यक्ष रूप में अपनाकर ही व्यक्ति ज्ञानवान बन सकता है, चूंकि ये ही साहित्य-संगीत और कला के स्वरूप हैं।

अन्तः प्रवाही ज्ञान की यह सरस धारा ही सरस्वती भगवती का स्वरूप है, जो प्रत्येक व्यक्ति में अनवरत प्रवाही है और वाणी के द्वारा प्रकट होती है। अतः प्रत्येक अभिभावक को अपने बालक-बालिकाओं को शिक्षा से जोड़ने का व्रत इस दिवस पर लेना चाहिए तथा उन्हें उच्च शिक्षा एवं उच्च चरित्र की ओर अग्रसर करने का सतत प्रयास करना चाहिए।

जस्सूसर गेट रोड़,
धर्म कांटे के पास, बीकानेर (राज.)
मो. 9414144456

वसंत-पंचमी

वसंत के पावन प्रसंग

❐ रामगोपाल राही

वसंत को ऋतुओं का राजा भी कहा जाता है। वसंत पंचमी के बारे में शास्त्रों तथा ग्रंथों में अलग अलग ढंग से लिखा व कहा गया है। वस्तुतः वसंत पंचमी माँ सरस्वती का अवतरण व प्रकाट्य दिवस समझा जाता है। अतीत से इस दिन माँ शारदे, सरस्वती की पूजा की जाती है वसंत पंचमी का अपना ऐतिहासिक महत्त्व भी रहा है। वसंत पंचमी की कथा कहें या कहानी वो कुछ इस तरह है। मान्यताओं के अनुसार सृष्टिकर्त्ता ब्रह्माजी ने सृष्टि के आरंभ काल में भगवान विष्णु के आदेश से जीवों तथा खासकर मनुष्य की रचना की। ब्रह्माजी ने सृष्टि जगत की रचना तो कर दी पर ब्रह्माजी अपनी ही सृजना पर संतुष्ट नहीं थे, उन्होंने अपनी रचना देख अनुभव किया कि सृष्टि जगरचना में कहीं कमी रह गई है जिसके कारण चारों ओर मौन छाया हुआ है, सन्नाटा है, कोई हलचल नहीं सब सुनसान निर्जन जैसा है। अपने द्वारा इस सृष्टि रचना से ब्रह्माजी बहुत उदास व निराश थे, ऐसे में ब्रह्माजी को एक युक्ति सूझी। अब ब्रह्माजी ने भगवान विष्णु से अनुमति ले अपने कमंडल से पृथ्वी पर जल छिड़का इस पर पृथ्वी पर कंपन होने लगा तथा इसी के चलते वृक्षों के झुरमुटों के बीच से एक अद्भुत शक्ति का प्रकाट्य हुआ। यह एक चतुर्भुजी देवी थी जिसके एक हाथ में वीणा, दूसरा हाथ वर मुद्रा में तथा अन्य दोनों हाथों में एक में पुस्तक व दूसरे में माला थी। देवी को देख ब्रह्माजी ने देवी से वीणा बजाने का अनुरोध किया। ब्रह्माजी के अनुरोध पर देवी ने जैसे ही वीणा वादन किया, वीणा के मधुर नाद से संसार के समस्त जीवों को वाणी प्राप्त हो गई। उल्लेखनीय है इसीलिए माँ सरस्वती को वाग्देवी कहा जाता है।

माँ सरस्वती के वीणा वादन से जल धाराओं में हलचल व कोलाहल होने लगा। हवा में सरसराहट होने लगी थी। यह सब देख स्वयं ब्रह्माजी ने प्रकाट्य वीणा वादिनी देवी सरस्वती को सरस्वती, वागेश्वरी, भगवती शारदा वीणावादिनी, वाग्देवी नामों से पुकारा। उल्लेखनीय है तभी से माँ सरस्वती की इन्हीं नामों से पूजा होती आई है। वस्तुतः माँ सरस्वती का वैभव अद्भुत है। माँ सरस्वती विद्या और बुद्धि प्रदाता है। संगीत में मधुर वीणा स्वर देने के कारण माँ शारदा संगीत की देवी भी है। माघ मास शुक्ल पंचमी के दिन माँ सरस्वती का अवतरण दिवस है, इसलिए वसंत पंचमी को माँ सरस्वती के जन्म दिवस के रूप में मनाते हैं। ऋग्वेद में श्लोक है-हे प्राणों की देवी! सरस्वती वाजेभिर्वजिनी वती मणित्रयस्तु। अर्थात्-परम चेतना माँ सरस्वती हमारी दृष्टि प्रज्ञा तथा मनोवृत्तियों की संरक्षिका है। वस्तुत वसंत ऋतु में प्रकृति खिल उठती है रंग रंगीले नयनाभिराम फूलों से बहारों का आगाज होता है। वसंत बहार का शृंगार, मंद-मंद बयार, हरीभरी खिली-खिली प्रकृति ऐसे होता है वसंत का अपना अद्भुत अनुपम सुन्दरता का आगाज। अनुपम वसंत ऋतु फाल्गुन साल का अंतिम मास, चैत्र साल के प्रथम नाम में होती है, वसंत ऋतु का समय काफी सुहावना होता है। इस ऋतु में सभी प्राणियों में उल्लास भरा होता है।

वसंत ऋतु की परम्पराएँ-इस दिन बच्चों को पहला अक्षर सिखाया जाता है तथा वसंत ऋतु के समय में ही कामदेव की पूजा की जाती है। उल्लेखनीय कामदेव का एक नाम अनंग है। जिसका शरीर नहीं होता अर्थात् यह बिना शरीर के मनुष्य की देह में बसते हैं। कामदेव के बाण प्रेमबाण होते हैं। परम्पराओं के अंतर्गत विद्या देवी सरस्वती की पूजा की जाती है। इस अवसर पर पहनावा भी परम्परागत होता है। पुरुष कुर्ता व स्त्रियाँ पीले वसंती रंग की साड़ियाँ पहनती है तथा सांस्कृतिक गायन वादन होता है, जो सरस्वती को समर्पित होता है। अन्य प्रसंग यह पर्व हमें त्रेता युग की याद दिलाता है। भगवान राम सीता की खोज के चलते शबरी के घर गए थे। भगवान का शबरी के घर पहुँचने का दिन वसंत पंचमी का दिन था। पृथ्वीराज को हराने पर हमलावर गौरी अफगानिस्तान ले गया। गौरी पृथ्वीराज के शब्दबाण का कमाल देखना चाहता था। चन्दबरदायी के संकेतात्मक दोहे पर पृथ्वीराज ने तीर मारा जो गौरी के सीने में लगा। यह घटना 1192 में वसंत पंचमी के दिन ही हुई थी।

वार्ड-4, पो. लाखेरी,
जिला-बूँदी (राज.)-323615
मो. 9982491518

स्वराज और सुशासन के प्रणेता

छत्रपति शिवाजी महाराज

❒ विजयसिंह माली

स्वराज और सुशासन के प्रणेता छत्रपति शिवाजी महाराज का जन्म फाल्गुन बदी तृतीया दिनांक 19 फरवरी, 1630 को पूना के निकट शिवनेरी दुर्ग में शाहजी भौसले की पत्नी जीजाबाई की कोख से हुआ। उन्होंने बचपन से ही अपनी मातृभूमि को स्वतंत्र कराने व स्वराज्य की स्थापना का सपना देखा। 16 वर्ष की अल्प आयु में ही उन्होंने अपना पहला युद्ध लड़ते हुए तोरणा दुर्ग पर विजय प्राप्त की और फिर एक के बाद एक कई किलों पर विजय प्राप्त की, अफजल खाँ, शाईस्त खाँ जैसे कई सेनापतियों को परास्त कर स्वराज की नींव रखी। ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी शालीवाहन शक 1596 दिनांक 6 जून, 1674 को उनका राज्याभिषेक हुआ। 3 अप्रैल, 1680 ई. को उन्होंने रायगढ़ दुर्ग पर अपनी देह का त्याग किया।

शिवाजी ने लोगों को स्वराज का अर्थ समझाया, स्वराज के लिए जीने और जीतने की अदम्य इच्छा, साथियों और समाज में विकसित की। सुदूर मावल क्षेत्र में रहने वाले मावलों, समुद्र के किनारे बसने वाले समाजों को जिस ढंग से स्वराज का अर्थ समझा सकते थे, उन्हें समझाया। न समझने वालों को धैर्यपूर्वक बारम्बार स्वराज की अनिवार्यता समझाई। अपने साथ रहने व चलने वाले रणबांकुरों को स्वराज के लिए जीवन भर अविचल जीने तथा लड़ते रहने का मंत्र दिया। उन्होंने जन के साथ गण कान्होजी जैधे, बाजी पासलकर जैसे सरदारों का भी साथ लिया। उन्होंने समर्थ गुरु रामदास, संत तुकाराम जैसे संतों का भी स्वराज के लिए आशीर्वाद प्राप्त किया। उन्होंने शासन प्रशासन व सैनिकों में यह बात कूट-कूट कर भर दी थी कि वह जो कुछ भी कर रहे हैं, स्वराज के लिए ही कर रहे हैं। शिवाजी के मन में स्वराज को लेकर जो पवित्र भाव था, वह सूक्ष्म तरंग बन कर दूर दराज तक फैले स्वराज के लाखों लोगों के हृदय में समा गया था।

शिवाजी के अभिभावकों ने शिवाजी के शरीर और मन में निर्भयता के बीज बचपन में ही

बो दिए थे। शिवाजी ने पुरुषार्थ और परिश्रम से उसको सींचा। शिवाजी की निर्भयता राज्य संचालन के हर क्षेत्र में दिखाई देती थी। शिवाजी वित्तीय अनुशासन को समझने वाले शासक थे। राजकोष व्यवहार की छोटी मद पर भी उनकी सूक्ष्म दृष्टि रहती थी। उनके राज्य में उत्पादक, व्यापारी व उपभोक्ता के हितों का सदैव संरक्षण होता था, प्रोटेक्शन टैरिफ का कठोरता से क्रियान्वयन करवाया जाता था। स्वराज की राजधानी रायगढ़ से 7 दिसम्बर, 1671 को नरहरि आनंदराव सरसुभेदार कुंडल को प्रेषित पत्र से इस बात की पुष्टि होती है। उन्होंने हरेक विषय में तकनीक के आयात पर बल दिया न कि वस्तुओं के आयात पर। कारीगरों व व्यापारियों को संरक्षण दिया। उनके राज्य में कुल 12 महल (डिपार्टमेंट) व 18 कारखाने थे। कल्याण व भिवंडी में जलपोत निर्माण के कारखाने लगवाए। पुरन्दर किले में तोप का कारखाना लगवाया। ये सब प्रयत्न स्वराज के संसाधन को स्वराज में बनाए रखने के लिए किया गया। फलतः रोजगार व स्वावलम्बन बढ़ा।

शिवाजी ने अपने स्वराज में सुशासन स्थापित करने के लिए शासन प्रशासन में गति के महत्त्व को समझा, अरबी घोड़ों की अच्छी नस्ल मंगवाई। वित्तीय प्रबन्धन के क्षेत्र में उच्च पदस्थ अधिकारियों को उनके गलत निर्णयों के लिए हमेशा बड़ी सजा दी। उन्होंने अपने राज्य में समान कर प्रणाली लागू की। स्वराज के राजस्व प्रधान अण्णाजी दत्तों से प्रत्येक गाँव में कृषि भूमि नापने, पैदावार गणना करने व आपदा में हानि का आकलन करने के लिए गाँव में चार प्रमुख किसानों व तीन शासकीय कर्मचारियों का मूल्याकंन दल बनाया जिससे कार्य में पारदर्शिता व विश्वनीयता आई। किसानों को विभिन्न आपदाओं के कारण होने वाली हानि की भरपाई साधन मुआवजे के रूप की जाती थी। नकद सहायता को प्रोत्साहन नहीं दिया जाता। शिवाजी के राज में वृद्ध, बीमार व बच्चों को छोड़कर किसी को भी कोई वस्तु मुफ्त में देने का विधान नही था। शिवाजी की कर प्रणाली इतनी न्याय संगत थी कि समाज में उसको लेकर किसी प्रकार का असंतोष नहीं था। शिवाजी के वित्तीय प्रबन्धन का ही कौशल था कि जब शिवाजी संसार से गए तो स्वराज के राजकोष में 9,00,00,000 रुपये नकद जमा थे। शिवाजी की कार्यशैली की विशेषता थी कि उन्होंने हमेशा व्यवस्था को खड़ा करने का प्रयत्न किया। उनके राज्य में सामान्य प्रशासनिक विभागों में नौकरी पाने का मुख्य आधार गुणात्मकता था। व्यक्ति के गुण, रुचि और क्षमता के अनुसार कार्य के लिए उनका चयन किया जाता था। चयन प्रक्रिया पूर्ण कर राज्यसेवा मे भर्ती किए गए कर्मचारियों से शिवाजी का प्रशासनिक तंत्र विविध प्रकार के काम लेता था। तानाजी मालसुरे जैसे सैन्य अधिकारी से कोंकण की सड़के ठीक करवाई, सर सेनापति नेताजी पालकर से जावली की लड़ाई में घुड़सवारों के दल का नेतृत्व करवाया। गृह विभाग की गुप्तचर व्यवस्था अत्यन्त प्रभावी थी। राज्य में प्रतिदिन होने वाली गतिविधियों व घटनाओं की सूचनाएँ तुरन्त पहुँचती थी। यही कारण था कि शिवाजी की आगरा में नजरबंदी व शिवाजी की दक्षिण विजययात्रा के दौरान राज्य से बाहर रहने के बावजूद कोई अव्यवस्था उत्पन्न नहीं हुई।

शिवाजी ने कृषि के महत्त्व को समझा। उस हेतु पुणे शहर में पर्वतों के नीचे अंवील ओढ़ा झरने पर तथा पूना के पास कोंडवा में बाँध बनवाया। सैनिकों को वर्षाकाल में कृषिकार्य में लगाने का प्रावधान किया। विभिन्न प्रकार की पैदावार का आग्रह किया। जागीर प्रथा को कम किया। शिवाजी न्यायप्रिय शासक थे। उन्होंने न्याय सही व समय पर देने का प्रयास किया। रांझे गाँव के पाटिल को बलात्कार का आरोप सिद्ध होने पर हाथ-पैर तोड़ने की सजा दी। अपने पिता के मित्र कान्होजी जैधे के रिश्तेदार खंडोजी खोपड़े द्वारा राष्ट्रद्रोह का अपराध करने पर बायां पैर व दाहिना हाथ काटने की सजा दी। अष्टप्रधान व्यवस्था के न्यायाधीश युद्ध की मुहिम में भाग नहीं लेकर न्याय उपलब्ध कराते थे। शिवाजी की विदेश नीति स्वराज के हितों पर आधारित थी। उन्हें दूर व पास के शत्रुओं की पहचान थी। उनकी वाणिज्य नीति अर्थ: मुलोहि धर्म पर केन्द्रित थी। उन्होंने अर्थ के महत्त्व को सगझ उसे अधिक से अधिक मात्रा में राजकोष में लाने के प्रयत्न किए। स्वराज में व्यापार के लिए अनुकूल वातावरण तैयार किया। मस्कट के इमाम सहित मध्य एशिया के कई देशों से उनके बड़े गहरे संबंध थे। मस्कट के साथ व्यापार खूब फला फूला। उन्होंने सदियों बाद समुद्र बंदी तोड़ते हुए भारतीय तटपर विदेशों से व्यापार करने के लिए व्यावसायिक नवदल का गठन किया। सिंधु दुर्ग का निर्माण कराया। बंदरगाहों पर व्यापार अधिकारी नियुक्त किए। उन्होंने एक-एक व्यापारी को व्यापार के माध्यम से सम्पर्क में लेकर लाभ पहुँचाया तथा व्यापार भी बढ़ाया। विदेशों में भी शिवाजी के शासन की व्यापार मित्र के रूप में छवि बनी। स्वराज्य में चलने वाले सिक्के होने की ढलाई के अंग्रेजों के प्रस्ताव को ठुकराया। उन्होंने मनुष्यों के गुलाम के रूप में व्यापार पर रोक लगवाई।

शिवाजी तकनीकीज्ञ तो नही थे लेकिन तकनीकी के अनुरागी अवश्य थे। नए जहाज निर्माण केन्द्र बनवाएँ। संगमेश्वरी नामक छोटे युद्धक जहाजों का भी निर्माण किया। समुद्र के किनारे सिंधु दुर्ग के निर्माण में जिंक धातु व पद्म दुर्ग में रसायन युक्त चूने का प्रयोग कर वैज्ञानिक समझ का परिचय दिया। शिवाजी ने राज्य के विकास में सड़क एवं नौ परिवहन के महत्त्व को समझा। अबाधित जलमार्ग के लिए पद्म दुर्ग विजय दुर्ग व सिंधु दुर्ग का निर्माण करवाया। नौ सैनिक के रूप में समुद्र से खेलने वाली स्थानीय जातियों को भर्ती में प्राथमिकता दी। शिवाजी की राज्य व्यवस्था में स्थायी व अस्थायी दोनों प्रकार के कर्मचारी थे। स्वराज में हर माह प्रतिपदा के दिन नकद पारिश्रमिक दिया जाता था। प्रत्येक युद्ध के पश्चात सैनिकों को हुई व्यक्तिगत हानि के मूल्यांकन हेतु जख्म दरबार लगता था। शिवाजी के शासन काल में केवल अधिकारों का ही विचार नहीं होता था बल्कि दायित्व बोध और कर्त्तव्य भी उसी प्रमाण में याद दिलवाए जाते थे। सेनानायक प्रतापराव द्वारा बहलोल खाँ को गिरफ्तार कर छोड़ने को शिवाजी ने अनुशासनहीनता मानते हुए कड़ी फटकार लगाई फलतः प्रतापराव ने बहलोल खाँ पर पुन: हमला किया व वीरगति को प्राप्त हुआ। शादी ब्याह पर कर्मचारी या सैनिक को शासकीय सहायता दी जाती थी। कोई कर्मचारी साहुकार से कर्ज लेकर घर के प्रसंग पूरे करे यह शिवाजी को स्वीकार्य नही था। शिवाजी अत्यंत परिश्रमी थे। राज्याभिषेक के कुछ दिनों बाद जब जीजामाता का देहावसान हुआ तो भी उन्होंने शोक के बावजूद शासकीय कार्य से अवकाश नहीं लिया। शिवाजी ने अपने अधीनस्थों की कर्त्तव्यपरायणता को सराहा व पुरस्कृत भी किया।

शिवाजी महाराज ने राज्य व्यवहार में भाषा को विशेष महत्त्व दिया। राज्य संचालन में संस्कृत निष्ठ मराठी शब्दों का चयन कर उनका प्रयोग प्रारंभ करवाया व प्रयत्नपूर्वक उन्हें राज्य व्यवस्था में स्थापित किया। स्वराज्य की शासन व्यवस्था के लिए उन्होंने 1400 शब्दों का कोष बनाया और नाम दिया-राज्य व्यवहार कोष। उन्होंने इतिहास लेखन भी करवाया। पंडित गागा भट्ट से शिवार्कोदय: व करण कौस्तुभ नामक पुस्तक संस्कृत में लिखवाई। उन्होंने वेश भूषा, अलंकार आभूषण सभी में भारत की सांस्कृतिक झलक को बनाए रखा। शिवाजी ने दुर्गों के पुराने नाम बदल कर नए संस्कृत नाम जैसे-रायरी का रायगढ़, साकण का संग्राम दुर्ग, रोहिड़ा का विचित्र गढ़, तोरड़ा का प्रंचड गढ़, पट्टा का विश्राम गढ़। शिवाजी की सेना अनुशासित, आज्ञापालक, प्रशिक्षित व पराक्रमी सेना थी। अन्य सेनाओं में सैनिक पैसे या व्यक्ति के लिए लड़ते थे। जबकि शिवाजी ने अपने आचरण से सैनिकों को प्रेरित किया। शिवाजी की सेना की सभी इकाइयों में तालमेल था। शिवाजी की व्यूहरचना हर बार नई होती थी। अचानक पैंतरा बदलकर प्रहार करने की क्षमता थी। शिवाजी युद्ध के पहले व बाद में अपने सभी सैनिकों से मिलते थे। जितने वे अनुशासन के लिए कठोर थे उतने ही घायल सिपाही के लिए कोमल व ममतामयी थे। शिवाजी पर्यावरण हितैषी थे उन्होंने आज्ञा पत्र जारी कर प्रजा में यह सन्देश पहुँचाया था कि जहाँ तक सम्भव हो, सूखे, मृत हो चुके पेड़ों के ही प्रयोग से विभिन्न प्रकार के कार्य पूरे किए जाए, जब अत्यंत आवश्यक हो और कोई हरा पेड़ काटना पड़े तो उसके मालिक की स्वीकृति से ही वह पेड़ काटा जाए। इन्होंने अपने राज्य में स्त्री के सम्मान को प्रधानता दी और उससे दुर्व्यवहार करने वाले को कठोर से कठोर दंड दिया।

शिवाजी को राज्य व्यवहार में भ्रष्टाचार बिल्कुल अस्वीकार्य था। उनके सौतेले मामा मोहिते ने रिश्वत ली, यह जानकरी उन्हें मिली तो उन्होंने उसे तत्काल कारागार में डाल दिया। 13 मई, 1671 को अधीनस्थ अधिकारी को लिखे पत्र से भी इस बात की पुष्टि होती है। शिवाजी सचमुच वरदवंत, भाग्यवंत, जयवंत, सत्यवंत, सुकृतिवंत, रूपवंत, गुणवंत, आचारवंत, कलावंत, विद्यावंत, क्रियावंत, विचारवंत, लक्षणवंत, कुलवंत, लक्ष्मीवंत, कीर्तिवंत, युक्तिवंत, सामर्थ्यवंत, धैर्यवंत, सामर्थ्यवंत, बुद्धिवंत, शक्तिवंत व यशवंत थे।

शिवाजी आज स्मृतिशेष है पर आज भी स्वराज को शक्ति प्रदान करते हैं। जिस स्वराज की उन्होंने स्थापना की, वह आज कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक, द्वारिका से लेकर ईटानगर तक, लक्षद्वीप से लेकर अण्डमान निकोबार तक, विस्तारित भारत देश के रूप मे विश्व मानचित्र पर दिखाई देता है। शिवाजी के व्यक्तित्व - कृतित्व को धारण कर हम अपने इस स्वराज को सुराज मे बदलने के लिए कृत संकल्पित है।

प्रधानाचार्य
रा.बा.उ.मा.वि सादड़ी,
जिला-पाली (राज.)
मो: 9829285914

विश्व रेडियो दिवस

रेडियो का सुहाना सफर

❒ सुभाष चन्द्र कस्वाँ

उन्नीस सौ साठ के मध्य दशक में जब रेडियो पर सिगनेचर ट्यून बजती... आवाज आती 'यह आकाशवाणी है' उसके पश्चात कहा जाता अब आप...से समाचार सुनिए तब पता चल जाता कि यह आवाज देवकी नंन्द पाण्डे अथवा रामानन्द प्रसाद सिंह की है या विनोद कश्यप अथवा अशोक वाजपेयी की। उस समय सूचना व मनोरंजन का करीबी साधन रेडियो ही था। किसी के पास रेडियो की उपलब्धता उसकी सम्पन्नता का अहसास करवाती थी। छोटे-बड़े शहरों में शाम को पान की दुकानों पर रेडियो में समाचार व फिल्मी गानों को सुनने के लिए पान के बहाने लोगों का हुजूम लग जाता था। गाँव भी इससे अछूते नहीं थे। ससुराल जाने वाला व्यक्ति माँग कर रेडियो ले जाता था। गाँव के छोटे बड़े लोग शाम को खाना खाकर रेडियो के पास जमा हो जाते। जमाई व ससुर दोनों की शान में इजाफा हो जाता। रेडियो के जन्म से लेकर 1980 तक उसकी चमक बनी रही। 1980 में सी.एन.एन. (केबल-न्यूज नेटवर्क) की पहुँच से रेडियो के पाँव डगमगाने लग गए। रेडियो ने अपना सफर कई रूपों में तय किया। एक छोटे डिब्बे के पश्चात् इसने 'टेबल सेट' का रूप धारण किया तत्पश्चात् 'हैंड सेट' व 'पॉकेट सेट' के आकार में उभर कर सामने आया। आज हम मोबाइल फोन में एफ. एम. जोड़कर मुट्ठी में लेकर चलने लगे हैं।

सन् 1900 में जब मारकोनी ने पहली बार इग्लैंड से अमेरिका को बेतार से संदेश भेजा तभी से रेडियो की शुरूआत हुई। लेकिन एक से अधिक लोगों तक एक साथ संदेश भेजकर रेडियो पर ब्रॉडकॉस्टिंग करने वाले पहले व्यक्ति रेगिनाल्ड फेसेंडेन थे जिन्होंने 1906 में अपनी वॉयलिन की स्वर लहरियाँ बिखेर कर एक नया चमत्कार कर डाला। भारत में रेडियो प्रसारण की शुरूआत मुंबई और कोलकाता में 1927 में दो निजी ट्रांसमीटरों से होने वाले प्रसारण से हुई। 1930 में रेडियो प्रसारण का राष्ट्रीयकरण हुआ व नाम रखा गया-भारतीय प्रसारण सेवा। सन्

1957 में इसका नाम बदलकर आकाशवाणी कर दिया। आजादी के बाद मुंबई फिल्म उद्योग ने तेज गति पकड़ी। फिल्मी गीतों को सुनने की भारी माँग थी। आकाशवाणी ने फिल्मी गीतों पर यह कह कर प्रतिबंध लगा दिया था कि कुछ गाने समय से अधिक आगे के हैं इससे युवा वर्ग पर बुरा असर पड़ेगा। इस प्रतिबंध का फायदा श्रीलंका ब्रॉडकॉस्टिंग कॉरपोरेशन की विदेश सेवा यानि रेडियो सीलोन ने उठाया। इस रेडियो स्टेशन पर भारतीय हिन्दी गाने बजाए जाते थे। प्रायोजित कार्यक्रम कमाई का एक बड़ा जरिया बन गया। आकाशवाणी को जब यह लगा कि ध्येय में सफलता संदिग्ध है तब 3 अक्टूबर, 1957 को मुंबई में विविध भारती प्रसारण सेवा की शुरूआत की जिसमें फिल्मी गानों को विविध कार्यक्रमों में परोसकर रेडियो सीलोन को दिखा दिया कि यह ताकत तो हमारे पास पहले से ही मौजूद थी। विविध भारती प्रसार ने इस प्रकार के रोचक कार्यक्रम अपने श्रोताओं के सम्मुख पेश किए जिससे श्रोताओं की संख्या दिन-रात बढ़ने लगी। फौजी भाईयों की फरमाइश, बेला के फूल, मेरी व आपकी पंसद के फरमाइशी गाने, हवामहल, समाचार व अमीन सयानी द्वारा प्रस्तुत 'बिनाका गीतमाला कार्यक्रम' जिसमें उनके द्वारा संबोधन भाइयों और बहिनों कार्यक्रम में जोश भरने लगा। उनके बोलने के नए व निराले अंदाज की वजह से देश का पहला रेडियो जौकी का श्रेय उनके खाते में जाता है। इस दौर में बी.बी.सी. लोगों की पसंद का दूसरा बड़ा रेडियो स्टेशन बन गया।

रेडियो का रिश्ता हमारे शरीर में गति करने वाले ऐतिहासिक खून से भी जुड़ा हुआ है। महात्मा गाँधी ने अंग्रेजों के विरूद्ध 'भारत छोड़ो' नामक संदेश रेडियो स्टेशन के मार्फत ही दिया था। भारत के रेडियो इतिहास में नवम्बर 1941 एक कभी न भूलाने वाला दिन था जब नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने अपने रेडियो संदेश में भारतीयों से यह कहा था, 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।' यह ऐतिहासिक संदेश जर्मनी से प्रसारित किया गया। इसके बाद रंगुन से भारतीयों के लिए समाचार व संदेश प्रसारित किए जाने लगे। 1971 के भारत-पाक युद्ध में लोंगेवाला सेक्टर में रहने वाले भारतीयों को तसल्ली व धीरज रेडियो ने ही बंधाया था कि पाक टैंको को नष्ट कर दिया है जो इसे ओर बढ़ रहे थे।

टी.वी. की बादशाहत के सामने एक बार तो रेडियो ने अपने अस्तित्व को खतरे में मान घुटने टेक दिए थे। बुश, मर्फी व फिलिप्स जैसी रेडियो बनाने वाली कम्पनियाँ हिल उठी। मर्फी व बुश कम्पनी ने अपना कारोबार समेट लिया। सिर्फ फिलिप्स कम्पनी ही इस तूफान में डटी रही। फिलिप्स कम्पनी को पता था इस सर्व सुलभ व सस्ते साधन के दिन फिर फिरेंगे और वही हुआ जिसकी आशा व अंदेशा था। एफ.एम. यानि फ्रीक्वैंसी मोड्यूल के रूप में रेडियो अपनी दूसरी पारी खेलने के लिए मैदान में आ उतरा। रेडियो फिर जीवित हो उठा।

भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी राष्ट्र के लिए संदेश हेतु रेडियो को उपयुक्त साधन मानती थी। गाँव व शहरों तक इसकी पहुँच आसान थी इसलिए वे आमजन को संदेश देने हेतु रेडियो को ही। तवज्जों देती थी। इसके पश्चात् दूसरे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ही हैं जो 'मन की बात' कार्यक्रम के जरिए लोगों से आज भी रेडियो पर रूबरू हो रहे हैं। अक्टूबर, 2014 से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात'

कार्यक्रम के तहत रेडियो को प्रथम बार प्रयोग में लिया। 27 जनवरी, 2015 भारत में मेहमान बनकर आए अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा के साथ मिलकर रेडियो पर जन संवाद किया। दोनों के संयुक्त संवाद से लगा मानो रेडियो एक बार फिर आबाद होने जा रहा है। समय-समय पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विद्यार्थियों, किसानों व युवाओं से गुप्तगू की। लम्बे अर्से के पश्चात् इस प्रकार के कार्यक्रम से रेडियो पर विज्ञापन की दरों में भी बढ़ोतरी हुई है जो रेडियो के उज्ज्वल भविष्य किलोहर्ट्ज व मीटरहर्ट्ज में जान फूँकने वाली साबित होगी। रेडियो आज हमारे अतीत का गौरव व भविष्य की उम्मीद बनता जा रहा है।

आज रेडियो शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान, सूचना, खेल, मनोरंजन, जन-संवाद, राजनीति व आर्थिक जगत की सम्पूर्ण जानकारियाँ हमारे सम्मुख पेश करता है। आज की युवा पीढ़ी जिस दीवानगी के साथ टी.वी., इन्टरनेट व स्मार्टफोन्स के पीछे भाग रही है उसमें थोड़ी कमी लाकर रेडियो से सम्पर्क साधे है तब उसे पता चल जाएगा कि यह सस्ता साधन उनकी अपेक्षाओं को कामयाब बनाने में किसी भी लिहाज से कमतर नहीं है। इन्टरनेट, टी.वी. व स्मार्ट फोन जिसका अत्यधिक उपयोग हमारी आँखों व सेहत पर बुरा असर डालता है वहीं रेडियो उससे हमें बचा लेगा। अश्लीलता व अपराधवृत्ति जिसका प्रयोग टी.वी. जिस धड़ल्ले से कर रहा है उससे हमारे किशोरों व युवाओं की मनोदशा व सोच में परिवर्तन आ रहा है। ऐसे में वे भी कुण्ठित हो बड़े-बड़े अपराधों में फंस जाते हैं। आज के बदलते युग में रेडियो की प्रासंगिकता देख संयुक्त राष्ट्रसंघ के अंग यूनेस्को ने 13 फरवरी को विश्व रेडियो दिवस घोषित कर दिया। आधिकारिक रूप से 2012 से इस दिवस को मनाना भी शुरू कर दिया। इस छोटे से उपहार का बड़ा करिश्मा देखकर क्यों नहीं हम आज अपने आपको आधुनिक न होने के भय से नाता जोड़ने से दूरी बनाएँ और वह सब पाए जिसकी चाहत के लिए 'दूसरे भटकाव' हमने पाल रखे हैं।

प्राध्यापक (से.नि.)
ग्राम पोस्ट- हेतमसर, वाया-नूँआ
जिला-झुंझुनूं (राज.)-333041
मो. 9460841575

वसंत पंचमी

नवजीवन है वसंत

❒ नरपत दान

वसंत पंचमी का त्यौहार मतलब प्रकृति का यौवन यानि वसन्त आ गया है। बागों में फूलों की बहार छाने लगी है। चर हो या अचर सबके जीवन में उल्लास भर गया है। चारों ओर खिला खिला सा संसार है। ये वसंत जीवन में हंसी खुशी प्रेम और सदाचरण सिखाने का त्यौहार है। रूह की चौखट पर कुछ मादक मादक सी हलचल है और हो भी क्यों नहीं अरे यह तो वसंत के आने की आहट है और यह वसंत आगमन तो प्रकृति का उत्सव है। वसंत का मौसम जिसमें न बर्फ का कुहरा है न ग्रीष्म का उबाल, न बरखा की उमस हैं।

जी हाँ... यह कोई ऐसी आम ऋतु नहीं बल्कि ऋतुओं का राजा वसंत है। छह ऋतुओं में इस ऋतु का काल रंगीन है। ये देखो इस ऋतु के आते ही प्रकृति नव आवरण ओढ़ने लगी है। हमें अंतस के भीतर तक सुकून दे रही है। जीवन को आनन्द से भर देने का कह रही है।

वो देखो महीनों से शिशिर के सन्ताप से कोठरो में दुबके विहंग अब स्वछन्द गगन में विचरण को आतुर हैं। कोयल मधुर मधुर गीत सा कुछ गुनगुना रही है। वृक्षों की टहनियाँ जो पत्तो से विहीन हो गई अब हरी भरी नव पल्लव को धारण करने लगी है। बागों में नवजात पुष्प हर्षित हो रहे हैं। कहीं कली कली खिलने को कुलबुला रही है तो कहीं कौपलें-फूटने को उतावली हो रही है। वृन्त-वृन्त पर तितलियों की चहलकदमी शुरू हुई है। भ्रमर की गुंजन से सारा व्योम मधुर स्वर से गुंजायमान हो रहा है। जाड़े से निर्वस्त्र खेत खलिहान अब सरसों का पीताम्बर पहन रहे हैं। आम में अब बौर आने लगी हैं। भौर की किरण कोहरे से भीगी सहमी नही है अब... अब तो वो गगन में पीताभ बिखेर कर मुस्करा रही है।

पौष के जाड़े से ठिठकी वसुंधरा अब नव दुल्हन सा सौंदर्य धारण करने को अकुला रही है। प्रफुल्लित हो रही है। मदमस्त हो रही है। क्योंकि यह प्रकृति का यौवन है। वासन्ती बयार भी अब धीरे धीरे अपना रूख बदल रही है। कुछ खुशबू समेट रही है तो कुछ खुशबू बिखेर रही हैं और अपने झोंको से हमे कह रही है जैसे में फूलों को दिल में और उनकी महक होठों में रख के चलूँ...उसी तरह तुम भी दिल मैं प्यार के फूल रख दो और अपनी जुबां, अपने लफ्ज़ो से उसकी महक न्योछावर कर दो। तुमसे भी सब प्यार करेंगे। ये वासन्ती आसमां जो कल तक जाड़े से श्वेत था अब रंग बदल कर कुछ गहरी नीली आभा का कलेवर लिए हैं। हमें सिखा रहा है परिवर्तन का नियम जो कल तक आसमां कोहरे से ढका था अब आजाद है, स्वच्छ है। हमें भी स्वच्छ जीवन शैली जीने और जीवन का आवरण बदलने का संकेत दे रहा। सूरज भी बोल रहा है कि कल जहाँ शीत से मेरी तपिस कम थी मगर अब मेरे रूप से सकल प्राणियों में नवीन ऊर्जा का संचार होने लगा है। यह सिर्फ वसन्त का ही कमाल है।

अल सुबह चिड़ियों की चहचहाट... इतनी निरन्तर, इतनी चंचल, इतनी कर्णप्रिय...जैसे गहरी नींद में सोये लोगों को कह रही हो.. अरे! उठो जागो प्यारे! कुदरत का नजारा तो देखो। निकला स्वर्णिम दिनकर फैली मोहक रश्मि, छितराई बदली, उड़ते वृन्द और आनन्द में डूबा सारा जहाँ... अरे ये वसंत का महीना है। ये जन्नत का नजारा है। डूब जाओ इसमें खो जाओ इसमें जीवन की पोटली खुशियों से भर जाएगी। वसंत एक रात भी वासन्ती चाँदनी रात... एक दम धवल निर्मल, उज्ज्वल और शीतलतायुक्त... मानो सन्देश दे रही है... जीवन का रस लेना है। तो तुम भी मेरी तरह वसंत का चाँद बन जाओ। आचरण धवल कर दो। मन निर्मल कर दो। तन उज्ज्वल और वाणी शीतल कर दो फिर मुस्कान तुम्हारे होठों से सदासर्वदा चिपकी रहेगी।

ये मौसम कह रहा... ऊर्जा, लगन, आत्मविश्वास से जीवन में सौंदर्य भरने का और परोपकार, दया, सेवा का भाव हृदय में रखने का है। आओं हम सब मिलकर हर वर्ष की भाँति नव वसन्त का स्वागत करें। नव शुरूआत करें, जीवन में नव संचार करें। माँ सरस्वती का आह्वान करें, नमन करें।

वरिष्ठ शिक्षक
रा.उच्च.मा.वि.चोचरा, बाड़मेर
मो. 9413880146

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

विश्व विख्यात भारतीय वैज्ञानिक

❒ शंकर लाल माहेश्वरी

''आज का युग वैज्ञानिक युग कहलाता है। भौतिक जगत में विज्ञान के चमत्कारों में असम्भव को संभव, परोक्ष को प्रत्यक्ष दिखलाने में काफी सफलताएँ प्राप्त की है। भौतिक सुख सुविधाओं, आवागमन, संचार माध्यमों के साधनों को सुलभ बनाया है। प्रायः जीवन के अधिकांश क्षेत्र विज्ञान से प्रभावित हो रहे है। इंटरनेट, कम्प्यूटर, टीवी., मोबाइल फोन, संचार और आवागमन आदि के साधनों के विकास के कारण संसार में बाह्य दूरियाँ कम होती जा रही है। दैनिक जीवन में उपयोग के लिए बिजली द्वारा संचालित शारीरिक सुविधा प्रदान करने वाले पंखे, कूलर, एयर कण्डीशनर, वॉशिंग मशीन, रेफ्रीजरेटर एवं अन्य घरेलू उपकरण आदि उसके लिए आज्ञाकारी नौकर के समान कार्य कर रहे हैं। इनके अभाव में जीवन अस्त व्यस्त होने लगता है। बिजली, चुम्बकीय, सौर, पेट्रोल, परमाणु, रसायन, हवा, पानी आदि ऊर्जाओं के स्रोतों की खोज से मानव को भौतिक रूप से शक्तिशाली बनाने में विज्ञान की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता।'' *डॉ. चंचल मल चौरड़िया*

भारत देश प्राचीन काल से ही ज्ञान विज्ञान का प्रमुख केन्द्र रहा है। हमारे पौराणिक धर्म ग्रंथों में इसका विस्तृत उल्लेख है। महाभारत काल में संजय का जब स्मरण होता है तो वह धृतराष्ट्र को युद्ध क्षेत्र का आँखो देखा हाल ज्यों का त्यों सुनाने में सक्षम था। उस समय की दूर संचार व्यवस्थाएँ कितनी उन्नत रही होगी? रामायण काल में पुष्पक विमान की गाथाएँ शीघ्रगामी परिवहन साधनों का परिचायक है। कहा जाता है कि जब भारत देश जगत गुरु की उपाधि से विभूषित था विश्व का सबसे प्रथम विश्व विद्यालय 700 ईस्वी पूर्व तक्षशिला में स्थापित किया गया। इसमें 60 से अधिक विषयों के दस हजार पाँच सौ से अधिक छात्र अध्ययनरत थे। नालन्दा विश्वविद्यालय चौथी शताब्दी में स्थापित हुआ जो शिक्षा के क्षेत्र में महानतम उपलब्धियों में एक है। बाद में विकास क्रम अवरुद्ध हो गया। इस संबंध में प्रख्यात साहित्यकार डॉ. नरेन्द्र कोहली ने भोपाल में आयोजित हिन्दी दिवस समारोह में कहा था 'तुर्क, अरबी और अफगानी हमलावरों ने भारत में सबसे पहले संस्कृत पाठशालाएँ बन्द की और फिर तक्षशिला और नालन्दा विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों को जलाकर भोजन पकाया। पुस्तकों को जलाने से हमारा ज्ञान राख में मिल गया।'

भारतीय इतिहास के कई गौरवशाली प्रसंग ऐसे है जो हमारे देश को विश्व गुरु का दर्जा दिलाने में सक्षम रहे हैं। भारत भूमि पर कई विद्वान वैज्ञानिक अवतरित हुए जिन्होंने सैकड़ों वर्षों पूर्व ही वैज्ञानिक आविष्कारों से भारत भूमि को गौरवान्वित किया हैं जो आज भी प्रासंगिक है। अंक पद्धति, शून्य का आविष्कार, साँप सीढ़ी का खेल, रेडियो, वायरलेस, संचार सेवा, गणित के स्केल जैसे अनेक आविष्कार भारत भूमि की ही विशेष देन है। इतना ही नहीं दशमलव पद्धति, शूल्व सूत्र, शल्य क्रिया आदि अनेक आविष्कार प्राचीन काल में ही इस धरा धाम पर सफल हो चुके है। वर्तमान में भी पश्चिमी वैज्ञानिक भारतीय ज्ञान तत्वों को अपने अनुसंधान का आधार बना रहे है। प्राचीन भारतीय विज्ञान वेत्ताओं में जिनका प्रमुखता से नाम लिया जाता है उनमें से वेद व्यास, आदिशंकराचार्य, वराहमिहिर, आर्य भट्ट, सुश्रुत व भास्कर जैसी महान विभूतियाँ रही है। जो विज्ञान जगत के जाज्वल्यमान नक्षत्र के रुप में प्रकाशवान है। यदि भारत के वर्तमान समय के वैज्ञानिकों को नामांकित करे तो उनमें प्रमुखतः जगदीश चन्द वसु, सत्येन्द्र नाथ बोस, रामानुजम, प्रफुल्ल चन्द रॉय के नाम सर्वोपरि है।

''भारतीय वैज्ञानिकों ने अपने कर्मो और वचनों से सिद्ध किया है कि हमारी उज्ज्वल वैज्ञानिक परम्परा रही है तथा हमारे श्रेष्ठ वैज्ञानिक बन्धुओं ने अध्यात्म विज्ञान एवं तकनीकी का समन्वय कर मानव जाति के अनुकूल किरण का निर्माण किया जिसकी आवश्यकता आज का विश्व महसूस करता है।'' **–स्वामी विवेकानन्द**

प्रस्तुत लेख में भारत भूमि पर अवतरित उन प्रमुख वेज्ञानिकों कों का उल्लेख करना आवश्यक है जिन्होंने वर्तमान में हो रहे अविष्कारों को भूमि प्रदान की और अवधारणा से अवगत कराया।

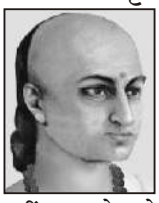

आर्यभट्ट–समूचे ब्रह्माण्ड के रहस्यों को उद्घाटन करने वाले खगोल विशेषज्ञ आर्यभट्ट का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उस समय लोग सही ढंग से गिनती की गणना करना भी नहीं जानते थे। आर्यभट्ट की महानतम उपलब्धियों के कारण भारत सरकार ने 19 अप्रेल 1975 में जब प्रथम कृत्रिम उपग्रह छोड़ा तो उसका नाम आर्यभट्ट रखा। आर्यभट्ट ने संस्कृत के तीन ग्रंथों की रचना की–दस गीतिका, आर्यभटीय और तन्त्र। आर्य भटीय इनका प्रमुख ग्रंथ माना गया है। इस ग्रंथ का आधार ज्योतिष से संबद्ध है। प्रस्तुत ग्रंथ में वर्गमूल, घनमूल, समानान्तर एवं विभिन्न श्रेणी के समीकरणों का वर्णन है। इसी ग्रंथ में खगोल विज्ञान से संबंधित सामग्री भी निहित है।

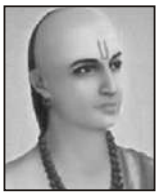

भास्कराचार्य द्वितीय–प्राचीन काल के प्रमुख खगोलशास्त्री एवं गणित के प्रकाण्ड विद्वान भास्कराचार्य द्वितीय थे। आप उज्जैन में स्थित वेधशाला के अधिष्ठाता थे। यह उस समय की गणित एवं खगोल शास्त्र का प्रमुख केन्द्र था। जब इनकी आयु 36 वर्ष की थी तभी इन्होंने सिद्धान्त शिरोमणि नामक ग्रंथ की रचना की। जिसके चार खण्ड थे।

1.लीलावती 2.बीजगणित 3. गोलाध्याय 4. ग्रह गणिताध्याय।

भास्कराचार्य जी ने न्यूटन से पहले ही गुरुत्वाकर्षण की अवधारणा को उजागर कर दिया था। सिद्धान्त शिरोमणि में इस तथ्य को प्रकट किया गया हैं कि पृथ्वी आकाशीय पदार्थों को विशेष ऊर्जा से अपनी ओर आकृष्ट करती है

इसीलिए आकाशीय पदार्थ पृथ्वी पर आकर गिरता है। इनका जन्म 1114 ईस्वी में हुआ था।

मंहर्षि चरक–चरक आयुर्वेद विशारद के रूप में प्रख्यात है। इन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ चरक संहिता में आयुर्वेद के सिद्धान्तो का वर्णन किया है। जिसमें आयुर्वेद द्वारा रोग नाशक एवं रोग निरोधक औषधियों का विवरण है। चरक ही प्रथम ऐसे चिकित्सक के रूप में प्रस्तुत हुए हैं। जिन्होंने पाचन और शारीरिक प्रतिरक्षा की अवधारणा को उद्घाटित किया है। शरीर में पित्त, कफ और वायु के संबंध में विस्तारपूर्वक विश्लेषण किया है। जिसे आज भी उपचार हेतु आधार माना जाता है।

आचार्य सुश्रुत–शल्य चिकित्सा का प्रचार प्रसार करने वाले महान चिकित्सक आचार्य सुश्रुत को चिकित्सा जगत में सदैव याद रखा जाएगा। इनका जन्म 6वीं शताब्दी ईसा पूर्व हुआ था। इनके द्वारा रचित सुश्रुत संहिता में 300 से अधिक शल्य चिकित्सा पद्धतियों का वर्णन है। इसी ग्रंथ में एक सौ बीस शल्य चिकित्सा उपकरण तथा सर्जरी की आठ श्रेणियों का भी विवरण अंकित है। सुश्रुत वैद्यक की कई शाखाओं के विशेषज्ञ भी थे। मूत्राशय में पथरी निकालने की शल्य क्रिया, प्रसव कराने, मोतियाबिन्द की शल्य चिकित्सा तथा टूटी हड्डियों को जोड़ने की शल्य क्रिया में विशेषज्ञ थे। शल्य चिकित्सा से पूर्व रोगी को मद्यपान कराना तथा विशेष प्रकार की औषधियों द्वारा संज्ञा हरण करके शल्य क्रिया करने से दर्द नहीं होता और बिना व्यवधान के शल्य क्रिया सम्पन्न की जा सकती है।

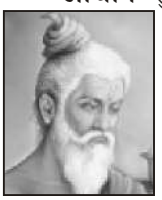

डॉ. जगदीश चन्द्र बोस–डॉ. बोस एक महान वैज्ञानिक थे। इनके आविर्भाव के समय विज्ञान संबंधी शोध कार्य नगण्य थे। ऐसे समय में इन्होंने शोध कार्य की परम्परा को प्रारम्भ किया और शोध के आधार पर ही अपने द्वारा किए गए आविष्कारों को प्रामाणिकता प्रदान की। इन्होंने भौतिकी, जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान तथा पुरातत्व के गहन गंभीर तथ्यों का अध्ययन किया। डॉ. बोस विश्व के प्रथम ऐसे वैज्ञानिक थे जिन्होंने रेडियों और सूक्ष्म तरंगों की प्रकाशकीय पर विशेष कार्य किया। वनस्पति विज्ञान के अन्तर्गत भी इनके खोजपूर्ण सिद्धान्तो को समूचा विश्व प्रामाणिक मानता है। यह वह समय था जब स्वामी विवेकानन्द, रविन्द्र नाथ टैगोर और राजा राममोहन रॉय ने सामाजिक उत्थान के लिए विशेष कार्य किया। डॉ. बोस को अमरीका से पेटेन्ट मिला जो देश के लिए गौरव की बात है।

डॉ. सी. वी. रमन–श्री रमन प्रसिद्ध भौतिक शास्त्री थे। इन्होंने प्रकाश के प्रकीर्णन पर विशेष महत्त्वपूर्ण कार्य किया। इसी कार्य के लिए उन्हें सन् 1930 में भौतिकी का प्रतिष्ठित नोबल पुरस्कार मिला था। इनका यह आविष्कार रमन प्रभाव के नाम से ही जाना जाता है। रमन प्रभाव स्पेक्ट्रम पदार्थों की पहचान करने और उनकी आंतरिक परमाणु योजना का ज्ञान प्राप्त करने का महत्त्वपूर्ण साधन माना गया है। रमन को 1954 ईस्वी में भारत रत्न की उपाधि से विभूषित किया गया। सन् 1957 में इन्हें लेनिन पुरस्कार प्रदानभी किया गया।

श्रीनिवास रामानुजन–भारत भूमि पर अवतरित विश्व विख्यात वैज्ञानिक श्रीनिवास रामानुजन का नाम गणित के क्षेत्र में विशेष रूप से उजागर हुआ। श्रीनिवास अयंगर गणित के क्षेत्र में गौस यूलर और आर्किमिडिज से किसी प्रकार कम नहीं थे। इनके द्वारा संख्या सिद्धान्त अनन्त शृंखला, गणितीय विश्लेषण और निरन्तर भिन्न करने के सूत्रों की देन रही है।

प्रफुल्ल चन्द्र रे–भारत के प्रसिद्ध रसायनज्ञ के रूप में आपकी ख्याति विश्व स्तर पर रही। बंगाल केमिकल्स एवं फार्मास्यूटिकल्स नामक प्रसिद्ध दवा कम्पनी के आप संस्थापक रहे है। इन्होंने अपनी प्रतिभा के बल पर देश से लुप्त रसायन शास्त्रीय विद्या को नया प्रकाश दिया। रसायन उद्योग की स्थापना करके उद्यमिता को प्रधानता दी। आप न केवल एक रसायनज्ञ ही थे अपितु एक आदर्श शिक्षक, संस्कृतिप्रेमी तथा विविध प्रकार की प्रतिभाओं के धनी रहे हैं। आपकी विशिष्ट प्रतिभा का आंकलन करते हुए तत्कालीन प्रसिद्ध विज्ञान पत्रिका 'नेचर' में इनकी आत्मकथा के प्रकाशित होने पर लिखा था। 'आत्मकथा के लेखन में संभंवत प्रफुल्ल चन्द रे से अधिक विशिष्ट जीवन चरित्र किसी और का हो ही नहीं सकता' इनकी आत्मकथा '' द लाइफ एण्ड एक्सीपीरेंस ऑफ बंगाली केमिस्ट'' थी। आप एक शिक्षाविद और वैज्ञानिक के रूप में सदैव याद रहेंगे।''

सत्येन्द्र बोस–श्री बोस ने अणु के क्षेत्र में महान कार्य किया भौतिक शास्त्र में बोसान और फर्मियान नाम के दो अणुओं में बोसान अणु का नामकरण सत्येन्द्र नाथ बोस के नाम से ही नामांकित हुआ। इन्होंने तत्कालीन महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंसटाइन के साथ मिलकर बोस आइंसटीन स्टेटिस्टिक्स का अनुसंधान किया।

हरगोविन्द खुराणा–डॉ. हरगोविन्द खुराणा भारतीय मूल के अमरीकी नागरिक थे। इन्हे जेनेटिक कोड की भाषा समझने और उनकी प्रोटीन संश्लेषण में भूमिका बताने के लिए सन् 1968 में चिकित्सा विज्ञान के नोबल पुरस्कार से विभूषित किया गया। इन्होंने आनुवांशिक कोड डी एन ए का विश्लेषण किया और उसकी खोज की। श्री खुराणा ने मार्शल और रोबोट हॉर्ले के साथ मिलकर कार्य किया था। श्री खुराणा ने अपने अनुसंधान से पता लगाया कि कोशिका के आनुवंशिक कूट कोड को ले जाने वाले न्यूक्लिक अम्ल एसिड, न्यूक्लिक ओटाइड्स किस प्रकार से कोशिका के प्रोटीन सिंथेसिस को नियन्त्रित करते हैं। डॉ. खुराणा ने कृत्रिम जीन के साथ डी एन ए. लाइगेज का भी संश्लेषण किया जो डी एन ए. के अलग अलग भागों को परस्पर जोड़ता है। इस प्रकार संश्लेषित कृत्रिम जीन वर्तमान में बायो तकनीक क्लोंनिंग तथा नए प्रकार के पादप व

जीवों को विकसित करने में बहुलता से उपयोग किए जा रहे है। श्री खुराणा का विश्व को यह विशेष देन रही है।

डॉ. मोक्षगुंडम विश्वैशरैया–

श्री विश्वैश्वरैया को वर्तमान भारत के विश्वकर्मा के रूप में पूजनीय माना जाता है। आपने अपने सम्पूर्ण जीवन को ही विश्व की सेवा में समर्पित कर अपने महान व्यक्तित्व का परिचय दिया। इन्होंने अपने अथक प्रयास से देश को कई इन्जीनियर और वैज्ञानिक राष्ट्रसेवा के लिए तत्पर करते हुए एक आदर्श पहल की थी। आप स्वयं एक वैज्ञानिक एवं इंजीनियर थे। अपने विशिष्ट कार्यो की दृष्टि से इन्हे 'भारत रत्न' की उपाधि से अंलकृत किया गया। डॉ. विश्वैश्वरैया धुन के पक्के, ईमानदार, परिश्रमी व्यक्तित्व के धनी थे। आपको अपनी कार्य शैली तथा कार्य निष्ठा के लिए ब्रिटिश सरकार ने सर की उपाधि प्रदान की। इन्होंने ऊर्जा की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पावर स्टेशन भी स्थापित किया था। औद्योगिकरण को विकसित करने तथा प्रेस को स्वतन्त्रता दिलाने तथा समाज हित की अनेकानेक योजनाओं को भी संचालित किया।

सलीम अली–

प्रकृतिवादी व्यक्तित्व के धनी श्री सलीम अली के पक्षी विज्ञान को विकसित करने में सराहनीय योगदान दिया इनकी इस क्षेत्र में विशेष सेवाओं के कारण ''बर्ड मेन ऑफ इण्डिया'' के नाम से भी जाना जाता है। पक्षी जगत के लिए सलीम अली ने विशिष्ट प्रकार के अनुसंधान करते हुए अपने प्राकृतिक ज्ञान संपदा का पूरा उपयोग किया तथा विश्व में अपना वर्चस्व स्थापित किया।

विक्रम साराभाई–

अंतरिक्ष विज्ञान के जनक श्री विक्रम साराभाई ने भारत में अंतरिक्ष प्रोग्राम की स्थापना करते हुए 40 अंतरिक्ष प्रोग्रामों की नींव रखी। इन्होंने विशेषतः आणविक ऊर्जा, इलेक्ट्रोनिक्स के क्षेत्र में विशेष योगदान दिया। श्री विक्रम साराभाई के नाम पर तिरुअंतपुरम में थुबाइक्वेटोरियल रॉकेट लांचिग स्टेशन ठी ई आर एल एस और संबंधित अंतरिक्ष संस्थाओं का नाम बदलकर विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र रख दिया जो बाद में ''इसरो'' के एक विशेष अनुसंधान केन्द्र के रूप में प्रस्तुत हुआ।

डॉ. होमी जहागीर भाभा–

भारतीय परमाणु ऊर्जा के जनक डॉ. भाभा इन्हे ''आर्किटेक्ट ऑफ इण्डियन एटेमिक एनर्जी प्रोग्राम भी कहा जाता है।'' हमारे देश का पहला परमाणु परीक्षण 1974 में पहली बार इन्ही के सहयोग से सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में भारत को शक्ति सम्पन्न बनाने में डॉ. भाभा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। जिस समय विश्व में नाभिकीय विज्ञान को कोई भी नहीं जानता था ऐसे समय में डॉ. भाभा के नाभिकीय ऊर्जा से विद्युत उत्पादन को साकार रूप देने में सफलता अर्जित की है।

सुब्रह्मणयम चन्द्रशेखर–

श्री सुब्रह्मणयम को अपनी वैज्ञानिक उपलब्धि पर सन् 1983 में भौतिकी शास्त्र के लिए नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ था। डॉ. सुब्रह्मणयम ने श्वेत बोने नाम के नक्षत्रों की खोज की थी। इस वैज्ञानिक द्वारा किए गए अनुसंधान के दुनिया की उत्पत्ति के रहस्य को सुलझाने में विशेष योगदान मिला। यह भारतीय प्रसिद्ध वैज्ञानिक सी.वी. रमन के भतीजे थे। आपका नाम बीसवीं शताब्दी के वैज्ञानिकों में श्रद्धापूर्वक स्मरण किया जाता है। इन्होंने खगोल भौतिकी शास्त्र तथा सौरमण्डल से संबंधित कई विषयों पर कई पुस्तकें लिखकर अपनी मूल्यवान सेवाएँ प्रदान की।

अब्दुल कलाम–

भारतीय गणतन्त्र के ग्यारवें राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम का नाम न केवल राष्ट्रीय नेता के रूप में अपितु महान वैज्ञानिक के रूप में जाना जाता है। आप भारत देश के उन महान वैज्ञानिकों में से हैं जिन्होंने विश्व को अपने अनुसंधान द्वारा गौरवान्वित किया है। उन्हे भारतीय मिसाइलों और परमाणु हथियार कार्यक्रम को संचालित करने वाला कुशल वैज्ञानिक कहा जाता है।

वेंकटरमण रामकृष्णन–

भारतीय मूल के प्रसिद्ध वैज्ञानिक वेंकट रमण रामकृष्णन का जन्म भारत के चिदम्बरम जिले में हुआ था। इन्हे सन् 2009 में रसायन विज्ञान के क्षेत्र में सराहनीय उपलब्धियों के कारण नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया था। कोशिका के अन्दर प्रोटीन का निर्माण करने वाले राइबोसोम की कार्य प्रणाली एवं उसकी संरचना के विशिष्ट अध्ययन के लिए प्रदान किया गया था।

भारत रत्न डॉ. सी एन आर राव–

डॉ. राव ने स्पेक्ट्रम विज्ञान के उन्नत उपकरणों द्वारा ठोस पदार्थो की भीतरी संरचनाओं पर कार्य सम्पादन किया था। आपको ''भारत रत्न'' की उपाधि से भी सम्मानित किया गया। इन्होंने सूक्ष्मदर्शी स्तर पर ठोसों में होने वाली प्रक्रियाओं को समझ कर संबंधित रिसर्च पेपर भी तैयार किए थे। इन्होंने पदार्थ के गुणों और उनकी आणविक सरंचना के मध्य प्रक्रिया की समझ को विकसित किया। आप भारत राष्ट्र के प्रधानमन्त्री के वैज्ञानिक सलाहकार प्रमुख भी रहे है। साथ ही इन्टरनेशनल सेंटर फॉर मेटेरियल्स साइन्स के डायरेक्टर पद पर भी कार्य किया। आप पुरड्यु विश्वविद्यालय आक्सफोर्ड केंब्रीज विश्वविद्यालय के विजटिंग प्रोफेसर भी रह चुके है। इतना ही नहीं आप ने जवाहर लाल नेहरू सेंटर फोर एडवान्सड साइंटिफिक रिसर्चड के संस्थापक निदेशक के रूप में भी कार्य किया है।

भारत देश अति प्राचीन काल ही से वैज्ञानिक अनुसंधान करते हुए अभूतपूर्व उपलब्धियों से गौरवान्वित होता आया है। हमारे देश की संस्कृति में विज्ञान व धर्म के मध्य किसी भी प्रकार का विरोधाभास नहीं हैं। आज की युवा पीढ़ी सक्षम है तथा विज्ञान व तकनीकी के क्षेत्र में अपार संभावनाओं को साकार करने में इनकी महत्ती भूमिका रहती है। मंगल मिशन में आने वाली समस्याओं को ढूंढ निकालने वाले हमारे वैज्ञानिक आध्यात्मिक शक्ति और विज्ञान को समन्वित करते हुए देश का स्वर्णिम भविष्य बनाने में तत्पर व संलग्न है।

पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी,
पोस्ट-आगूचा, जिला-भीलवाड़ा-311022
मो. 9413781610

नवाचार

स्कूल में रेलगाड़ी

❒ गोपाल सिंह राठौड़

किशनपुरा (सीकर) के स्कूल में रेलगाड़ी, यह अपनी तरह का एक अनूठा प्रयोग है जो राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय, किशनपुरा, जिला सीकर में किया गया है। विद्यालय के बरामदें के भीतर कक्षा कक्षों पर विद्यालय में कार्यरत मेहनती, ईमानदार, कर्त्तव्यनिष्ठ व उत्कृष्ट कलाकार मोहन लाल मौर्य के द्वारा रेल के डिब्बों का साकार रूप दिया गया है। रंग व साज सज्जा कर इस कदर तैयार की गई मानो वास्तविक रेलगाड़ी का डिब्बा हो। उद्देश्य साफ है, बच्चों को किताबी ज्ञान के साथ-साथ कला का व्यावहारिक ज्ञान भी होना आवश्यक है हो सकता है हमारे विद्यार्थियों में से किसी विद्यार्थी में इस कला के गुण जन्मजात हो सकते हैं, उसको इस प्रकार के नवाचार से वास्तविक लाभ मिल सकता है। बच्चों में एक नए कार्य के प्रति रुचि, रूझान, जागरूकता तथा कौतुहल अधिक होता है। बच्चे कक्षा कक्षों में बैठकर एक नए अहसास का अनुभव करते हैं मानो वे रेलगाड़ी के डिब्बों में बैठे हुए अध्ययन कर रहे हैं। सीकर जिला मुख्यालय से 25 किलोमीटर दूर स्थित गाँव किशनपुरा, पंचायत समिति पिपराली में आता है। इस प्रकार की डिजाइन तैयार करने का विचार अलवर जिले में स्थित एक विद्यालय को देखकर आया कि इस प्रकार का डिजायन तैयार किया जाए तो काफी सुन्दर लगेगा। छोटे बच्चों में काफी रुचि व उत्सुकता जाग्रत होगी जिससे सरकारी स्कूल के नामांकन में भी अच्छी बढ़ोतरी की संभावना बनेगी। रंग-रोगन का खर्च एक बार स्वयं के खर्चे पर किया गया है हमें ग्रामीण भामाशाहों पर भरोसा है वह इस नेक काम में अपनी पूरी भागीदारी द्वारा इस प्रकार के कार्यों में लगातार सहयोग दिया जाता रहा है। इस नवाचार से पूरे गाँव व आस पास के क्षेत्र में एक नया माहौल विद्यालय के प्रति बना है जिससे छात्रों के नामांकन में निश्चित बढ़ोतरी होगी। बच्चों में विद्यालय में साफ-सफाई के प्रति जागरूकता उत्पन्न हुई है। विद्यालय परिसर की सफाई रखने की भावना छात्रों में विकसित होती जा रही है जो इस नवाचार का लाभकारी परिणाम है। इस नवाचार को देखने स्थानीय विधायक श्री विरेन्द्र चौधरी विद्यालय में पधारे तथा ट्रेन के साथ सेल्फी भी ली तथा इस कार्य के लिए विद्यालय

के प्राचार्य तथा स्टाफ की भी जमकर तारीफ की तथा विद्यालय के विकास में अपना सहयोग प्रदान करने का पूर्ण भरोसा दिलाया। समस्त ग्रामीणों के द्वारा भी इस कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई है बच्चें भी यह कहते नजर आते हैं हमारा सरकारी विद्यालय निजी विद्यालयों की तुलना में ज्यादा श्रेष्ठ है।

यहाँ पर नवाचारों की कड़ी में बालसभा पर सबसे ज्यादा बल दिया जाता है जिसमें प्रति शनिवार को छात्रों की किसी न किसी महापुरुष की जीवनी, जीवन चरित्र उनके कार्यो व उपलब्धियों की विस्तार से चर्चा की जाती है तथा महापुरुषों के गुणों की व्यापाक जानकारी छात्रों द्वारा प्रदान की जाती है तथा बच्चों को भी उन गुणों को अपनाने और सीखने की शिक्षा प्रदान की जाती है। इससे छात्रों में अच्छे नैतिक गुणों का विकास निश्चित रूप से होता है वे भविष्य में हमारे देश के अच्छे नागरिक बनेंगे, छुट्टियों में आने वाली जयन्तियों को भी बालसभा में स्थान देकर उनके लाभों को प्राप्त करने का सुप्रयास किया जाता है इससे छात्रों में श्रेष्ठ नैतिक गुणों के विकसित होने में बड़ा लाभ मिलता है। बाल सभा में नैतिक व आध्यात्मिक व सांस्कृतिक ज्ञान से सम्बंधित प्रश्न भी पूछे जाते हैं जिससे छात्रों में हमारी प्राचीन सभ्यता व संस्कृति का ज्ञान बढ़ता है तथा रुचि जाग्रत होती है। यह रेलगाड़ी बच्चों को भविष्य की मंजिल की ओर ले जाने में सफल होगी ऐसी आशा है। छात्रों को पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में ज्यादा से ज्यादा भाग लेने का अवसर दिया जाता है जिससे छात्रों का सर्वांगीण विकास हो सके। यहाँ पर छात्र प्रत्येक गतिविधि में भाग लेते है। खेलों में गत वर्ष में दो छात्राओं ने राज्य स्तर पर भी भाग लिया। बोर्ड की ओर से आयोजित सृजनात्मक प्रवृत्तियों में छात्र/ छात्राएँ भाग लेते रहे हैं। पिछले सत्र में दो छात्राओं का चयन जिला स्तर पर हुआ था। नि:शुल्क भ्रमण की योजना का लाभ भी उठाते हैं। इस वर्ष एक छात्रा सुनीता गुर्जर का चयन भारत भ्रमण योजना के अन्तर्गत भी हुआ जिसमें छात्रा को गुजरात व महाराष्ट्र के कई दर्शनीय स्थलों को देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

नवाचार से छात्रों में एक नई सोच सकारात्मक प्रेरणा, मेहनती बनने व अन्य गुणों का सहज में विकास करना हमारा लक्ष्य रहा है इसमें हमें निश्चित रूप से सफलता प्राप्त हो रही है शिक्षा विभाग से भी हमें अच्छा सहयोग व परामर्श प्राप्त होता रहा है जिससे नवाचारों को हम ओर प्रभावी ढंग से लागू करने में कामयाब होंगे।

प्रधानाचार्य
रा.आ.उ.मा.वि. किशनपुरा
जिला-सीकर (राज.)
मो: 9413890452

शौक्षिक चिन्तन

बदलते परिवेश में शिक्षा, शिक्षक व शिक्षार्थी

❒ सम्पत लाल शर्मा 'सागर'

शिक्षा का उद्देश्य अज्ञान के अन्धकार को दूर करके विद्यार्थी के अन्तस्त मैं ज्ञान रश्मियों का आलोक बिखेरना है शिक्षा हमें असत्य से सत्य की ओर अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाली दिव्य साधना है, मनुष्य में देवत्व का अमृत बिखेरने वाली सहस्र धारा है, शिक्षा मनुष्य को सही अर्थो में मनुष्य बनाती है। शिक्षा के अभाव में मनुष्य का जीवन व्यर्थ और मूल्य रहित हो जाता है मनुष्य के अंदर सात्विक और पाश्विक दोनों प्रकार की प्रवृत्तियाँ पाई जाती है। शिक्षा सात्विक प्रवृत्तियों के उभार पाश्विक प्रवृत्तियों के दमन को कार्य करती है। इसलिए शिक्षा के वृक्ष पर पाण्डित्य और ज्ञान के फल के साथ-साथ शील और सदाचार का फल भी लगना चाहिए किन्तु अफसोस है कि वर्तमान शिक्षा अध्यात्मवाद से हटकर भौतिकवाद के गर्त में प्रविष्ट हो गई है, लार्ड मैकाले को भारत में कुशल लिपिकों का निर्माण करना था उसने शिक्षण प्रशिक्षण की जो पद्धति निर्मित की वही पद्धति आज तक सम्पूर्ण भारत में पूर्ण भक्तिभाव से अपनाई जा रही है। इसी पद्धति के माध्यम से भारत के अभिमन्यु और परीक्षित तैयार किए जा रहे हैं।

शिक्षा पहले एक साधना थी आज व्यवसाय बन गई है। शिक्षा पहले शिक्षार्थी के लिए साध्य थी, आज वह नौकरी प्राप्त करने का एक साधन मात्र बन गई है। आज की शिक्षा व्यवस्था मानवीय मूल्यों के संरक्षण का बोझ ढोने वाली सिद्ध हो रही है। आज का शिक्षक अपने पाठ्यक्रम में इतना व्यस्त है कि उसे बालक में मानवीय गुणों का विकास करने का समय ही नहीं है, हमारी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था ने अध्यापक को परिणाममूलक बना कर रख दिया है, अध्यापक की उपादेयता, श्रेष्ठता, कर्त्तव्यपरायणता, विद्धता, कर्मठता, विचारशीलता आदि सभी गुणों का आकलन उसके द्वारा पढ़ाए गए विषय के परीक्षाफल से आकलित किया जाता है।

विद्यालय में सभी विषयों के अध्यापक होते हैं जो अपने-अपने विषयों से सम्बन्धित पाठ पढ़ा रहे हैं लेकिन किसी ने शिक्षार्थियों में त्याग, बलिदान, देश प्रेम, सदाचार, विद्वता, सत्यता, मानवता आदि गुणों का सृजन करने तथा स्वयं भी बालकों के सामने आदर्श प्रस्तुत करने का कार्य किया है। यह विचारणीय है। आवश्यकता इस बात की है कि माध्यमिक कक्षाओं में ऐसी शिक्षा प्रणाली लागू की जाए जो नैतिकता व देश प्रेम की भावना से ओत-प्रोत हो ताकि हमारा आज का शिक्षार्थी कल का सुयोग्य नागरिक बन सके तथा सुमार्ग पर चलते हुए भारत को परम वैभव की ओर ले जाने में अपना सकारात्मक योगदान दे सके।

पहले गुरु के रूप में शिक्षक मनुष्य को ईश्वर प्राप्ति का मार्ग बताता था आज वह अपने कक्ष में छात्रों के साथ बैठकर वार्तालाप का आनंद लेता है। कभी विद्या मंदिर इहलोक तथा परलोक सुधारने का मार्गप्रशस्त करते थे तो आज वे दलगत राजनीति, परस्पर द्वेषभाव और अपराधों के केन्द्र बनते जा रहे हैं, कहाँ खो गया भारत का वह स्वर्णिम अतीत? न संदीपनी जैसे गुरु रहे न कृष्ण जैसे तपः पूत शिष्य, न रामकृष्ण परमहँस जैसे महर्षि रहे न विवेकानंद जैसे श्रद्धालु शिष्य कल की ही बात है अपने गुरु के आदेश पर शिष्य विवेकानंद ने संपूर्ण भारत में आध्यात्मिक ज्ञान का आलोक वितरित किया था, कितना शीघ्र पतन हो गया उस विश्वगुरु भारतवर्ष का। शिक्षण के पतन का सारा दोष शिक्षकों पर आरोपित नहीं किया जा सकता है। वस्तु स्थिति यह है कि आज का शिक्षक शिक्षा की मशीनीकृत प्रक्रिया में एक कलपूर्जा बनकर रह गया है, वह कक्षा में स्वतन्त्र अभिव्यक्ति देने में झिझकता है। उसके निजी चिंतन या मनन को कोई महत्त्व नहीं है, वह निर्धारित पाठ्यक्रम निर्धारित अवधि में पढ़ाने के लिए बाध्य है। निर्धारित समय सारिणी के अनुसार वह एक कक्षा से दूसरी कक्षा में फुटबॉल की भाँति गमनागमन करता रहता है। फिर भी यह कहना असंगत न होगा कि शिक्षक समाज का निर्माता है अतः वह अपने कर्त्तव्यों से मुख मोड़कर नहीं बैठ सकता। समाज कितना ही दूषित हो, उसे अपने कर्त्तव्य रथ पर आरुढ़ हो कर ज्ञान का आलोक बिखेरना चाहिए, प्रत्येक अध्यापक डॉ. राधाकृष्ण अथवा डॉ. जाकिर हुसैन नहीं बन सकता किन्तु आदर्श शिक्षक बनकर वह अपने शिष्यों के लिए प्रेरणास्रोत अवश्य बन सकता है।

वर्तमान में प्रायः यह देखा जाता है कि शिक्षार्थी शिक्षा ग्रहण करने की प्रक्रिया को पवित्र नहीं मानते वह मानते हैं कि वर्तमान में अध्यापन एक व्यवसाय और शिक्षक एक कुशल ज्ञान का व्यापारी है अतः गुरु शिष्य परम्परा को विशेष महत्त्व नहीं दिया जाता है, विद्यालय का भवन शिक्षार्थी को दैनिक कैदखाना लगता है, अनुशासित अधिगम वातावरण उसे नीरस लगता है, अध्यापक का मार्गदर्शन उसे बकवास लगता है शिक्षक की शिक्षण कला उसे ढोंग सी लगती है फलत! विद्यालयीन शिक्षा की स्थिति दिनों दिन सोचनीय बनती जा रही है, अब शिक्षार्थी धन के द्वारा ज्ञान को खरीदने में विश्वास करने लगे हैं, बालक व पालक दोनों के हृदय में शिक्षक के प्रति वह सम्मान नहीं रहा जो पहले हुआ करता था। शिक्षा का स्वरूप कितना की विकृत हो शिक्षार्थी के लिए उसका विद्यालय मंदिर से कम महत्त्वपूर्ण नहीं होना चाहिए। विद्यालय के गुरुजन उसके मनस्तिष्क में ज्ञान का आलोक बिखरने वाले प्रकाशपुंज है अतः सब प्रकार से वे वन्दनीय है। उनके प्रति श्रद्धा और सम्मान का भाव होना चाहिए। वहीं शिक्षार्थी देश और समाज का नाम रोशन करते है जो सदाचारी, श्रद्धालु और परिश्रमी होते है।

आज शिक्षा में नए-नए प्रयोग हो रहे हैं, शैक्षिक उन्नयन के लिए शिक्षक के आदेश और उपदेश की अपेक्षा उसका कार्य-व्यवहार, सुझाव एवं निर्देश अधिक प्रभावशाली सिद्ध हुए है यही कारण है कि सम-सामयिक परिप्रेक्ष्य मैं शैक्षिक उन्नयन हेतु शिक्षकों को आदेशात्मक या उपदेशात्मक शिक्षा देने की आवश्यकता नहीं है बल्कि उसे मात्र संदेशात्मक शिक्षा देने की आवश्यकता है। यही संदेशात्मक शिक्षा काम्य सिद्ध होगी क्योंकि ये शिक्षार्थी को श्रद्धा और विश्वास में बांधती है। ओशो ने कहा है कि शिक्षक होना बड़ी साधना है आइए हम सब इक्कीसवीं सदी के भारत की नवनिर्मिति में इसी साधना को सकारात्मक सोच के धरातल पर व्यावहारिक फलक प्रदान करे ताकि भारत विश्व गुरु की संज्ञा को प्रमाणित कर सके।

प्राध्यापक, रा.आ.उ.मा.वि.जवासिया
पो. गिलूण्ड (राजसमन्द)-313207
मो: 8003264828

संस्कार एवं शिक्षा

राजस्थान की लोककथाएँ

❒ जयप्रकाश राजपुरोहित

राजस्थान की सभ्यता तपते मरुस्थल, वेगवती आँधी, बल खाती नदियों, भ्रमित करते बीहड़ों और चुनौती देती अरावली के साथ-साथ विकसित हुई है। राजस्थान के जन का मनस् संघर्ष और संकट के प्रासादों पर लहराते जीवन की विजय पताका बनकर युगों से फहरा रहा है। इस धरती के हर 'ढोले' ने अपने हाथ-पैरों को परिश्रम का प्रतीक बनाया है तो हर 'मरवण' संस्कृति का सपना अपने रंग-बिरंगे नार्युचित पौरुष से साकार बनाए हुए है। राजस्थान की कलात्मक परम्पराएँ अपने वीरता, सौन्दर्य, शक्ति, दानवीरता, मातृत्व, भ्रातृत्व, स्वाभिमान जैसे अनेक गुणों से विकसित हुई है, जिनका मोल अनमोल ही है।

कोई भी सभ्यता अपनी पीढ़ियों और समाज को संस्कार देने के अनेकानेक उपाय बनाती और संजोती है। राजस्थान की लोक संस्कृति का विकास उत्सव-पर्व, भाषा-बोली, पहनावा, भोजन शैली, खेल-कूद आदि से हुआ है। भाषा किसी भी संस्कृति का परिचयात्मक आयाम होती है। राजस्थान की भाषा पीढ़ियों से अपने समृद्ध रूपों से समाज को संस्कारित करती आ रही है। भाषा के साथ ही इसकी कथाओं, कविताओं, गीतों, मुहावरों और लोकोक्तियों का भी जन्म हो जाता है। राजस्थान की लोकभाषा अपने गर्भ में लोककथाओं के ऐसे अनूठे रत्न समेटे हुए है जैसे कि यह धरती माता अपने गर्भ में मानव के लिए हितकर धातु-रत्नादि रक्षित किए हुए हैं।

वह प्रत्येक व्यक्ति जो किसी अन्य को कुछ सिखा रहा होता है, शिक्षक की भूमिका में होता है। इसीलिए माता और परिवार व्यक्ति का प्रथम गुरु होता है। राजस्थान के गाँव-गाँव और गली-मौहल्ले की चौपाल निवासी के लिए किसी पाठशाला से कम नहीं होती जहाँ पीढ़ियों से राजस्थानी बातों-ख्यातों-लोककथाओं और लोकोक्तियो का सरस वर्णन हुआ करता है। एक ओर दादी-नानी घर में तो दूसरी तरफ चौपाल में बैठे व्यावहारिक जीवन-विज्ञान के विद्वज्जन लोगों को नीति-ज्ञान-कौशल-विवेक का प्रशिक्षण देते हैं। इन अनौपचारिक पाठशालाओं का महत्त्व निर्णायक भूमिका में रहता है। राजस्थान की लोककथाएँ इन पाठशालाओं के पाठ्यक्रम का प्रमुख माध्यम है। डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय ठीक कहते हैं कि लोक साहित्य ग्रामीण

जनता और दादी-नानियों की पीठ पर सवारी गाँठकर आगे बढ़ता है।

सीखने के लिए आवश्यक वातावरण का एक सर्वप्रमुख भाग है-रुचि। अगर सीखने में रुचि होती है, अथवा रुचि जागत कर दी जाती है तो मान लेना होगा कि सीखना शुरू हो चुका है। लोककथाओं की कथ्य शैली, कथा के सजीव वर्णन से रुचि जागती है। वक्ता अपने हाव-भाव से ही श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देता है। आँखों और पुतलियों की संरचना में परिवर्तन, हाथों और शरीर की आकृति से कथानुरूप माहौल बना देना ये सभी लोककथा कहने वाले के बाएँ हाथ का खेल होता है जो मार्ग से जाते हुए व्यक्ति को भी रोक देता है। चंद्रमा की मनोहर चाँदनी में जब दादी माँ पोते-पोतियों और उनके पड़ौसी मित्रों को भी मरुधरा के इतिहास और परंपरा से निकली कथाएँ सुनाती है तो कौन कह सकता है कि ये कहानी होती है, जंगल और वन्यजीव, साधु और शैतान, देवता और राक्षस बच्चों के सामने साकार हो जाते हैं। उस बाल सुलभ कथा साक्षात्कार का पता तब चलता है जब राक्षस के जिक्र पर बालक काँपते तो राक्षस की देवता से पिटाई पर निश्शंक होते दिखते हैं। बिना किसी कृत्रिम रोशनी के भी चंद्रकिरणें कथाओं का वो वातावरण तैयार कर देती है जो शायद वीडियो फिल्में भी न कर पाएं।

लोकोक्ति और मुहावरों का विस्तृत रूप भी लोक कथाओं में अभिव्यक्त होता है क्योंकि इन दोनों के पीछे कोई न कोई कथा-कहानी होती है। जब बातों-बातों में किसी अनुभवी व्यक्ति के मुँह से कोई लोकोक्ति या मुहावरा निकल जाता है तो पास बैठे उत्सुक श्रोता इसकी पूर्व भूमिका पूछे बिना नहीं रह पाते और वक्ता भी भाव में आकर पूरी कथा सुना देता है। पूछने वाले जितने जिज्ञासु होते हैं उतने ही कथावाचक भावप्रवण होते है और जैसे ही कथा सुनाने लगते है तो किसी समाज-विज्ञान के शिक्षक से कम नहीं लगते है।

इन लोक कथाओं में एक प्रवाह दिखता है जो सृष्टि के उद्भव से लेकर इसके प्रवर्द्धन और समकाल तक मानव की कल्पनाओं और शोध का समग्र प्रस्तुत करता है। बहुत से रीति-रिवाज भी इन लोक कथाओं में से ही निकले दिखते हैं। रीतियों के प्रारम्भ होने और उसके प्रचलन से घटनाओं का कारणभूत आधार समझ में आता है। यही घटनाएँ लोक कथाएँ बन जाती है। जैसे गोगाजी के जीवन से बनी लोककथा ने गोगानवमी के रीति रिवाज का कब स्वरूप ले लिया कौन जानता हैं? पशुपालकों के दैनिक पशु रक्षण से कब संत-महापुरुषों का संबंध स्थापित हुआ, लोक जीवन में प्रचलित हुआ, इन सबका रहस्य ये लोक कथाएँ ही किंचित खोल पाती है। मायरा भरने आए भाई के लिए गाए 'टोडरमल वीर' गीत के बोलों के पीछे की लोककथा अवसर मिले तो अपनी दादी-नानी से जरूर पूछिए और भाई-बहिन के कालजयी प्रेम का आनंद लीजिए। ढोला-मरवण और मूमल-महेंद्र की प्रेम कहानी शताब्दियों से लोक गायकों के माध्यम से विवाहादि के अवसर पर तो गूँज ही रही है, आज भी रहस्य रोमांच और काव्यात्मकता से सनी-पगी यें लोक कथाएँ प्रेमी हृदयों को उद्वेलित कर देती है अगर इन्हें अनुभवी रसराज कथावाचकों के मुख से सुना जाए।

कुछ लोककथाएँ थोड़े बहुत बदलाव के साथ सभी क्षेत्रों में प्रचलित हैं जिनमें वीरता, संस्कार, कर्त्तव्यनिष्ठा आदि के साथ स्थानीय महापुरुषों या अपने पूर्वजों का नाम जोड़ा जाता

है। जैसे शेर का सामना करते समय वीर पुरुष द्वारा अपना राजस्थानी साफा (पगड़ी) उसके मुँह में डालकर उसे हरा देना। जैसे पशुओं के सींगों पर मशालें बाँधकर शत्रु राज्य की सेना को रात में भगा देना आदि। वीरता और बलिदान राजस्थान की मिट्टी की मूल विशेषताएँ हैं और राजस्थान के किसी भी अंचल की लोककथा इससे अछूती नहीं है। कर्त्तव्यपालन के लिए मृत्यु को बाएँ हाथ का खेल बनाकर रची लोककथाएँ गाँव-गाँव और खेड़े-खेड़े के अमर बलिदानियों के रोमांचक कारनामों से भरी पड़ी है। पशुधन और वनधन यहाँ जनधन के समान ही अमूल्य है अतः पशु और वृक्षों के रक्षक पूर्वजों की कथाएँ हमारी संस्कृति की धरोहर है। जीवन को बुलबुले की तरह मानने वाले वीर पुरुषों की कथाएँ सुनकर युवा हृदयों का खून उबाल मारता है। शायद वीरों के तेज और संतों के तप से यहाँ गर्मी अधिक पड़ती है। नाथ परंपरा योगियों और संतों के चमत्कारों और सरलता के किस्से जन-जन में व्याप्त हैं। संतों के प्रति सम्मान के बहाने ये कथाएँ सज्जन लोगों के प्रति सम्मान जगाती है, जिसकी कमी आज चहुँ ओर दिखाई पड़ रही है।

कहानियों को रोचक और मनोरंजक बनाने के लिए चोर, ठग, धाड़वी, मानवेतर किरदारों का समावेश है। अतिशयोक्ति अलंकार से अलंकृत होकर भी ये कथाएँ सामयिक लगती है क्योंकि कथाओं का मूल भाव मानवोचित भावनाओं का विकास करना होता है। व्यक्तिगत कमियों और विशेषताओं का बोध करवाना इनका उद्देश्य होता है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की स्वयं की शक्तियाँ और दुर्बलताएँ होती है और उन्हें पहचाने बिना वांछित सफलता नहीं मिलती।

लोक संस्कृति मर्मज्ञ श्री कोमल कोठारी ने कहा है कि ''सामाजिक जीवन के घनीभूत अनुभवों से परिपोषित होकर ये लोक कथाएँ जीवन के निपट यथार्थ एवं सक्रिय सत्य को पहिचानने की क्षमता रखती हैं। इन कथाओं का प्रयोग एवं उपयोग समाज के व्यावहारिक संचालन, नैतिक संतुलन, पारस्परिक स्नेह, भौतिक जीवन के हर्षोल्लास एवं जीवन की अमूर्त्त अभिलाषाओं की परिपूर्ति के लिए किया जाता रहा है।'' इस प्रकार लोककथाओं में मानवीय जीवन की सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति देखी जा सकती है।

बात और ख्यात राजस्थानी लोक कथाओं के दो प्रमुख प्रकार है। बात वस्तुतः वार्ता का ही रूप है जो किसी घटना विशेष पर कहानी होती है। ख्यात किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के जीवन का वर्णन हो सकती है। बालकों को पशु-पक्षियों और काल्पनिक पात्रों की कहानियाँ अधिक प्रिय होती हैं, जिनका भी सुदीर्घ संग्रह कथावाचकों के पास होता है। मिठाई देने वाली माँ और दादी माँ से अधिक प्रिय बहुधा कथा संग्रही दादी माँ हुआ करती है। जब विस्फारित नेत्रों से बच्चे कथावाचक को कथा के बीच में प्रश्न पूछते हैं तो जो द्विमार्गी संचार होता है वो देखने लायक होता है क्योंकि ऐसे ही दो तरफा संचार को शिक्षण का आधार माना जाता है।

लोक कथाएँ भी ऐसी समयबद्ध होती है जो आवश्यकतानुसार परोसी जा सके। 1-2 मिनट की लघु कथाओं से लेकर ऐसी लोक कथाएँ भी हैं। जिन्हें कई-कई दिन तक सुना-सुनाया जा सके। त्वरित संदेश देने के लिए लघु-कथाओं का प्रयोग होता है। शीत ऋतु की धूनी तपते और ग्रीष्म की ठंडी रातों में चौपालों पर अनुभवी वृद्ध लोग कई-कई दिनों तक चलने वाली वृहत कथाएँ भी सुनाते हैं। शिशिर का पाला और ग्रीष्म की तपन से कुछ समय बाहर निकलकर लोग इन कथाओं के काल्पनिक संसार और इतिहास में खो जाते हैं, जहाँ से हर श्रोता को अपनी-अपनी पसंद के पात्र और भाव मिलते हैं। ये पात्र और भाव ही समाज में जीवंत हो जाते हैं जब इन कथाओं के संस्कार व्यक्ति के अन्तर्भूत होते हैं।

अगर हम मरुभूमि के किसी भी गाँव-कस्बे में घूमें तो आश्चर्यजनक रूप से नई-नई कहानियाँ उभर कर सामने आती है। कोई भी चबूतरा, देवली, कुआँ, तालाब, छतरी, खंडहर, हवेली और मंदिर कथा के बिना नहीं है। पीढ़ियों से ये कथाएँ कैसे जीवंत है ये रोचक विषय है पर इससे भी रोचक है इस संकलन का मूल भाव-संस्कार। एक-एक पाई जोड़कर बनवाया-खुदवाया कुआँ-बावड़ी-तालाब धन का सोद्देश्य संचय और जल का महत्त्व सिखाती है। सुघड़ हो या औघड़-छतरी और देवली किसी वीरोचित या समाजोद्धार के लिए जीवन दान का प्रण सामने रखती है। खंडहर किसी व्यक्तित्व के उत्कर्ष और पतन की कहानी लोककथा के रूप में सुनाता है तो साथ ही बताता है काल के क्रूर गाल में समाते मानव के सुनिश्चित अंतिम पड़ाव की कहानी। इन लोककथाओं में यथार्थ है भी और नहीं भी पर इनके सार में कोई न कोई यथार्थपरक प्रेरक तत्व मिल ही जाता है।

आज भी गाँव के छोटे से बाजार में किसी चौकी पर बैठे वृद्धजन प्रतीक्षा में रहते हैं कि कोई लोककथाओं का जिज्ञासु आए तो वे खजाना उसके समक्ष खोलें या फिर किसी पीपल गट्टे के नीचे तपती दुपहर में बातों ही बातों में ये कथा कहानियाँ निकल पड़ती है। सर्दी की रातों में अलाव लोककथाओं के शीत को सामयिक उष्णता से भर देता है। खेतों में चौमासे में रहने वाले ग्रामीण परिवार इन लोककथाओं के सहारे अपने श्रम सिंचित दिवस को खुशनुमा बना देते है। नानी-दादी आज भी लोककथाओं का संसार अपने अनुभवी मस्तिष्क में समेटे है जिसे ग्रामीण परिवेश और भी समृद्ध करता है। मानवीय संवेदना और सम्बन्धों का जो सजीला स्वरूप इन लोककथाओं में अमर है उसे काल के थपेड़े घायल कर पाए हैं लेकिन शायद इस अमर लोक कथा संसार का मानवोपयोगी स्वरूप इसे पुन-पुनः हमें अपनी ओर बुलाता रहेगा। यों तो हर लोककथा वाचक एक शिक्षक ही होता है, लेकिन विद्यालय और महाविद्यालय के शिक्षक भी लोककथाओं के इस विराट संसार में अपने विद्यार्थियों को ले जाए तो सुसंस्कृत विद्यार्थी का स्वप्न अवश्य ही साकार होगा-

दादी-नानी ने कही कहानी
फिर अनुभव से पगी जुबानी
संस्कारों का पाठ पढ़ाती
सुनो कहो फिर कोई कहानी। लोक कथा ये लोक गीत ये
लोक जीवन की भली व्यथा ये
भले बूरे का बोध कराती
सुनो कहो फिर कोई कहानी। ज्ञान विकसता है पढ़ने से
अनुभव से ही बुद्धि सँवरती,
अनुभव का सारांश ग्रहण कर
सुनो कहो फिर कोई कहानी।

रा.आ.उ.मा.वि. ग्राम पो.-हदाँ
तहसील-कोलायत, जिला-बीकानेर (राज.)
मो: 9414012028

स्वस्थ मानव शरीर

सहजन : कुपोषण का अंत

❒ दीपक जोशी

भूमिकाः–स्वस्थ मानव शरीर के लिए हमारे भोजन में सभी आवश्यक पोषक तत्त्वों की पर्याप्त मात्रा अत्यावश्यक है। हमारे लिए आवश्यक पोषक तत्त्वों में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा, विटामिन, खनिज लवण तथा जल प्रमुख हैं। अधिकांशतः कुपोषण का कारण प्रोटीन, विटामिन तथा खनिज लवणों की कमी पायी जाती है। जो मानव शरीर में विभिन्न कुपोषण जनित रोगों का कारण बनती है। साथ ही कुपोषण के कारण मानव शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाने से कई संक्रामक तथा असंक्रामक रोगों का खतरा बढ़ जाता है। विकासशील देशों में कुपोषण एक विकट समस्या है, जो प्रतिवर्ष कई मौतों का कारण बनती है, विशेषकर बच्चों में।

National Institute of Nutrition (N I N) ने कुछ समय पूर्व एक शोध द्वारा एक Food Composition Table तैयार की। जिसके लिए N I N ने 528 खाद्य पदार्थों में 151 पोषक तत्वों की जाँच की। इस Table के आधार पर Indian Dietic Association (I D A) ने मुख्य भारतीय खाद्य पदार्थों पर शोध कार्य किया, जिसके अनुसार पिछले 30 वर्षों से भारतीय भोजन में मौजूद पोषक तत्वों में निरन्तर कमी आई है।

I D A के अनुसार पहले के मुकाबले गेहूँ में 9% कार्बोहाइड्रेट की कमी, बाजरे में 8.5% कार्बोहाइड्रेट की कमी, मूंग दाल में 6.12.% आयरन की कमी, मसूर दाल में 10% प्रोटीन की कमी तथा आलू व टमाटर में विटामिन B, मैग्निशियम व जिंक की मात्रा में 66 से 73% की कमी, साथ ही सेव में आयरन की मात्रा भी पहले की तुलना में 60% कम पाई गई।

इसके साथ–साथ भारत की मिट्टी में भी पिछले 30 वर्षों में 43% जिंक, 18.3% बोरॉन, 12% आयरन, 5.6% मैग्निशियम तथा 5.4% कॉपर की कमी आंकी गई है।

खाद्य पदार्थों की पोषकीय मात्रा में इतनी गिरावट चिंता का विषय है साथ ही कुपोषण जनित रोगों का कारण भी।

विशेषज्ञों के अनुसार खाद्य पदार्थों के पोषकीय गुणों में इस गिरावट का कारण पैदावार बढ़ाने के लिए उपयोग में लिए जाने वाले रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक,खरपतवारनाशी आदि हैं। जो कि मिट्टी की उर्वरा शक्ति को निरंतर कम किए जा रहे हैं।

आज के समय में कुपोषण अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के लिए प्रमुख चिंता का विषय है। यहाँ तक कि विश्व बैंक ने इसकी तुलना 'ब्लेक डेथ' नामक महामारी से की है।

भारत एक तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है और भारत सरकार बड़े स्तर पर कुपोषण के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम चला रही है, परन्तु परिस्थितियाँ विकट है। विभिन्न स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार दुनिया भर के कुपोषितों में 19 करोड़ कुपोषित लोग भारत में हैं। भारत में लगभग 21% बच्चे कुपोषण के शिकार हैं तथा 51% महिलाएँ एनीमिया से पीड़ित है। भारत में बचपन में होने वाली मौतों में से 50% का कारण भी कुपोषण है साथ ही मातृ मृत्यु का प्रमुख कारण भी। अतः कुपोषण को 'चिकित्सीय आपात स्थिति' के रूप में देखने की अति आवश्यकता है। साथ ही आवश्यकता है ऐसे खाद्य पदार्थों की खोज कर उन्हें चलन में लाने की जो पोषकीय गुणों से भरपूर तथा आमजन के लिए सुलभ हो। इन्हीं में से एक प्रथम दृष्टया नाम है **'सहजन'**।

परिचयः– **सहजन** का वानस्पतिक नाम मोरिंगा ओलिफेरा है। जो कि उष्ण तथा उपोषण कटिबंधीय पादप है।

Moringa oleifera- (मीठा सहजन)

पत्तियाँ– छोटी, स्वाद में मधुर।
फूल– बड़े, मधुर, सफेद।
फली– लम्बी पतली, नरम, मुड़ी हुई, स्वाद में मधुर।
बीज– तीन कोण वाले सफेद।

Moringa Concanesis- (कड़वा सहजन)

पत्तियाँ– बड़ी।
फूल– कुछ छोटे, पीले।
फली–छोटी, मोटी, कठोर, स्वाद में कड़वी।
बीज– हल्के पीले।

- कड़वा सहजन प्रायः जंगलों में पाया जाता है।
- मोरिंगा वंश में 14 प्रकार की जातियाँ है, जिनमें मोरिंगा ओलिफेरा प्रमुख है।
- इसे सहजना, सुजना, सेंजन, सुहिंजना, सिंगफली, ड्रमस्टिक, बेंजोयलट्री, हॉर्स रेडिश, शीग्रु, मुनगा आदि नामों से भी जाना जाता है। यह मुख्यतः भारत, अफ्रीका, अमेरिका, इंडोनेशिया तथा फिलीपिन्स में पाया जाता है। जिनमें भारत प्रथम स्थान पर है। भारत में यह पश्चिम बंगाल, उड़ीसा तथा दक्षिणी भारत में अधिक उगाया जाता है।
- सहजन का वृक्ष अत्यंत सुंदर व आकर्षक होता है। इसका वृक्ष सामान्यतः 10m. ऊँचाई वाला होता है किन्तु लोग इसे 1½ –2m. की ऊँचाई से प्रतिवर्ष काट देते हैं ताकि इसके फल–फूल, पत्तियों तक हाथ आसानी से पहुँच सके।
- सहजन के वृक्ष शुष्क आवास में कम पानी में भी उगाए जा सकते हैं तथा लगभग हर प्रकार की मिट्टी में पनपते हैं। यहाँ तक कि बेकार बंजर एवं कम उर्वरा भूमि में भी इसकी खेती आसानी से की जा सकती है।

- पौधारोपण के 6 माह में ही इसमें पुष्पन आरंभ हो जाता है। सामान्य परिस्थितियों में प्रायः पुष्पन प्रतिवर्ष एक बार अप्रेल-जून माह में होता है। जबकि वर्ष भर नियत तापीय तथा पर्याप्त वर्षा वाली परिस्थितियों में पुष्पन वर्ष में दो बार या पूरे वर्ष भर होता है।
- सहजन के बीज एवं शाखा के टुकड़ों दोनों से प्रवर्द्धन किया जा सकता है, बीजों से प्रवर्द्धन बेहतर है।
- इसकी उन्नत किस्मों में रोहित-1, कोयम्बटूर-2, पी. के. एम- 1, पी. के. एम-2 प्रमुख है।
- सहजन के वृक्ष का प्रत्येक भाग जैसेः जड़/तना, पत्ती, छाल, फल, फूल, बीज आदि भरपूर पोषक तत्वों युक्त, स्वास्थयवर्द्धक एवं विभिन्न औषधीय गुणों वाले होते हैं। इसलिए इसे "miracle plant" तथा "Super food" भी कहा गया है। सहजन के बीजों का उपयोग जल शुद्धिकरण में अत्यंत प्रभावी है।
- कुछ विशेषज्ञों के अनुसार सहजन को दुनिया का सबसे उपयोगी वृक्ष कहा जा सकता है, जो कि भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाकर अन्य पादपों की तीव्र वृद्धि और अच्छी फसल में भी लाभदायक है।
- **पोषकीय गुणः-** सहजन का उपयोग प्रभावी dietry supplement, antioxidant, anticancer antiinflammatory, antibiotic तथा antimicrobialagent के रूप में किया जाता है।
- सहजन जड़ से लेकर फूल और पत्तियों तक सेहत का खजाना है। इसमें सेलेनियम, कैल्शियम, पौटेशियम, फॉस्फोरस, मैग्निशियम, आयरन, मैंगनीज तत्व, विटामिन A, B complex, c, e, k, omega-3 fatty acids, B- carotene, antioxidants तथा अन्य phytonutrients प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। जिनका मानव शरीर पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता।
- सहजन में पाये जाने वाले Phytochemicals में Vanilin, omega-3 fattyacids, steroids carotenoids terpenoids flavonoids, alkaloids, ascorbates, tocopherols, B-sitosterol moringine, kaenpferol, quercetin chlorogenic acid, anthroquinones, saponins प्रमुख है।
- सहजन की पत्तियाँ और हरी फलियाँ पोषकीय रूप से अधिक गुणकारी होती हैं और अधिक उपयोग की जाती है। पत्तियों की तुलना में फलियों में विटामिन तथा खनिज लवण कुछ कम मात्रा में पाए जाते हैं। जबकि विटामिन C की मात्रा तुलनात्मक रूप से अधिक होती है।
- पत्तियों में Phenolic compounds तथा flavonoids प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, जो कि antioxidant, anti carcinogenic, immunomodulatory, antidiabetic, antiartherogenic तथा thyroid regulation का कार्य करते हैं।
- सहजन में anticancerous agent जैसे- glucosinolates isothiocyanates, glycosides योगिक पाए जाते हैं।
- सहजन में Phytosterols जैसे Stigmosterol, sitosterol तथा Kampesterol पाए जाते हैं। जो कि प्रसुता महिलाओं में estrogen हॉर्मोन के स्राव को बढ़ाके दूध निर्माण को बढ़ाते है।
- इसकी पत्तियों तथा फलियों में इतने पोषक तत्व हैं कि W.H.O के मार्गदर्शन में दक्षिण अफ्रीका के कई देशों में कुपोषण पीड़ित लोगों के आहार के रूप में सहजन का उपयोग करने की सलाह दी गई है।
- सहजन को छोटे बच्चों, गर्भवती व प्रसूता महिलाओं एवं वृद्धों के शारीरिक पोषण के लिए वरदान माना गया है।
- सहजन की पत्तियों में 46 प्रकार के antioxidants (जैसे-Quercetin, chlorogenic acid) तथा 92 प्रकार के nutrients पाए जाते हैं। इनमें प्रचुर मात्रा में प्रोटीन पाया जाता है। इनमें 18 प्रकार के Amino acids जिनमें 9 प्रकार के essential amino acids हिस्टीडीन, ल्युसिन, आइसोल्युसिन, लायसिन, मिथियोनिन, फिनाइल एलेनिन, थ्रिओनिन, ट्रिप्टोफेन, वेलिन पाए जाते हैं। पत्तियों में पादप हार्मोन जिएटिन तथा antioxidants प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, जो मनुष्य में एजिंग की क्रिया मंद करते है। पत्तियों में उपस्थित वृद्धि हॉर्मोन-जिएटिन फसल उत्पादन को 25-30% तक बढ़ा देता है।
- सहजन में स्वस्थ आँख व दृष्टि के लिए Vitamin A तथा ß Carotene तथा स्वस्थ रुधिर परिसंचरण के लिए Omega-3 fatty acids प्रचुरता से पाए जाते हैं।
- सहजन से शरीर का शोधन एवं alkalization होता है। इसके पोषक तत्व आसानी से आहार नाल से अवशोषित होकर रुधिर में चले जाते हैं तथा पत्तियों में उपस्थित क्लोरोफिल शरीर से विषैले पदार्थो को बाहर निकालकर P^H संतुलित करता है। सहजन में पाए जाने वाले amino acids तथा Phytochemicals शरीर में विभिन्न हॉर्मोन के स्तर को अनुकुल व नियंत्रित करते हैं।
- आयुर्वेद में इसे 'miracle plant' भी कहा जाता है क्योंकि इस पादप का प्रत्येक भाग चमत्कारी औषधीय गुणों वाला होता है और इससे 300 रोगों का उपचार संभव है।
- सहजन के द्वारा 300 से अधिक बीमारियों का इलाज किया जाता है, जिनमें Ulcer, wound, arthritis, inflammation, heart problems, cancer, stroke, obesity, anemia, liver damage, diabeties, thyroid, hyper tention, eye disease indigestion, constipation, dyspepsia प्रमुख हैं।
- सहजन की पत्तियों को बिना पोषक मूल्यों की हानि के लंबे समय तक सुरक्षित संग्रहित कर सकते हैं, इसके लिए drying तथा freezing तकनीकी का उपयोग किया जाता है, जिसमें drying अधिक प्रभावी तकनीक है।
- सहजन के फूलों का उपभोग चाय बनाने में, जो कि Hypocholesterolemic प्रभाव रखती है।
- सहजन के बीजों से प्राप्त तेल को Ben oil कहते है जिसमें 76% PUFAs Poly unsaturated fatty acids जैसे linoleic acid, linolenic acid तथा oleic acid पाए जाते हैं। अतः यह olive oil का प्रभावी प्रतिस्थापी है।

- सहजन में पाए जाने वाले पोषक तत्वों की मात्रा स्थान, जलवायु तथा अन्य पर्यावरणीय परिस्थितिओं तथा मिट्टी की उर्वरा शक्ति से प्रभावित हो सकती है।
- सहजन के जड़ों की अधिक मात्रा मानव शरीर पर हानिकारक विषैला प्रभाव डाल सकती है, अतः इनका उपभोग प्रचलन में नहीं है।
- 100gm. सहजन की पत्तियों में मात्रात्मक तुलना के आधार पर:-
- 7 गुना अधिक Vita. C संतरे से।
- 4 गुना अधिक Vita. A गाजर से।
- 4 गुना अधिक कैल्शियम दूध से।
- 3 गुना अधिक पौटेशियम केले से।
- 2 गुना अधिक प्रोटीन योगर्ट से या 1 अण्डे जितना प्रोटीन।
- 3 गुना अधिक आयरन पालक से।
- 3 गुना अधिक Vita. E बादाम से पाए जाते हैं।
- सहजन की कच्ची पत्तियों में पोषक मूल्य-प्रति 100gm

(सारणी)

पोषक तत्व	मात्रा
कार्बोहाइड्रेट	8.28 gm.
आहारिय रेशा	2.0 gm.
वसा	1.40 gm.
प्रोटीन	9.40 gm.
जल	78.66 gm.
विटामिन A	378 µgm.
थायमिन (विटामिन B_1)	0.257mg
राइबोफ्लेविन (विटा.B_2)	0.660 mg
नायसिन (विटा.B_3)	2.220mg
पैटाथैनिक अम्ल (विटा.B_5)	0.125mg
विटामिन B_6	1.2mg
फोलेट (विटा. B_9)	40 µmg
विटामिन C	51.7 mg
कैल्शियम	185 mg
लौह तत्व	4 mg
मैग्निशियम	147 mg
मैंगनीज	0.36 mg
फास्फोरस	112 mg
पौटेशियम	337 mg
सोडियम	9 mg
जस्ता (जिंक)	0.6 mg

- सहजन की कच्ची फलियों में पोषक मूल्य-प्रति 100 gm

(सारणी)

पोषक तत्व	मात्रा
कार्बोहाइड्रेट	8.53gm
आहारीय रेशा	3.2gm
वसा	0.20gm
प्रोटीन	2.10gm
जल	88.20gm
विटामिन A	4 µgm
थायमिन (विटा.B_1)	0.0530mg
राइबोफ्लेविन (विटा.B_2)	0.074mg
नायसिन (विटा.B_3)	0.620mg
पैंटाथेनिक अम्ल (विटा.B_5)	0.794mg
विटामिन B_6	0.120mg
फोलेट (विटा.B_9)	44µgm
विटामिन C	141mg
कैल्शियम	30mg
लौह तत्व	0.36mg
मैग्निशियम	45mg
मैंगनीज	0.259mg
फास्फोरस	50mg
पौटेशियम	461mg
सोडियम	42mg
जस्ता (जिंक)	0.45mg

उपयोग की विधि:- सहजन के बीजों को मटर तथा मूंगफली के दानों की तरह कच्चा, तलकर या भूनकर खाया जा सकता है।

- सहजन की हरी फलियों को सलाद के रूप में या सब्जी के रूप में उपयोग किया जाता है।
- हरी पत्तियों को सलाद, सब्जी, ज्यूस, काढ़ा एवं चाय के रूप में उपयोग में लिया जा सकता है। फूलों का उपयोग भी चाय बनाने में किया जाता है।
- सुखी पत्तियों के चूर्ण को संग्रहित कर उन्हें सीधे या काढ़ा बनाके उपयोग किया जा सकता है। वैज्ञानिक तकनीकि से पत्तियों का अर्क तैयार (Extract) कर प्रभावी उपयोग ले सकते हैं।
- सहजन की पत्तियों के चूर्ण को किसी भी भोज्य पदार्थ या पेय पदार्थ के साथ मिला के उसकी पोषकीय गुणवत्ता को बढ़ाया जा सकता है। जैसे-दूध के साथ।
- विशेषज्ञों के अनुसार सहजन की कच्ची सामग्री अधिक उपयोगी होती है, गर्म करने या पकाने से इसके पोषक तत्व कम हो जाते हैं। कच्ची सामग्री से तैयार किया गया अर्क (Extract) अधिक उपयोगी व गुणकारी होता है।
- प्रतिदिन 5gm-20gm मात्रा सुखी पत्ती चूर्ण का उपयोग बच्चों और व्यस्कों में कुपोषण के अंत में अत्यंत प्रभावी सिद्ध हो सकता है।
- सहजन के अतुलनीय पोषकीय, औषधीय एवं स्वास्थयवर्द्धक गुणों को देखते हुए इसे 'कल्पवृक्ष' की संज्ञा दी जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं। भारतवर्ष में आमजन विशेष रूप से बच्चों में कुपोषण का प्रमुख कारण प्रोटीन खनिज लवण तथा विटामिन की कमी है। जिसके निवारण में सहजन अपने उच्च स्तरीय पोषकीय एवं औषधीय गुणों के कारण अत्यंत उपयोगी तथा कारगर साबित हो सकता है, वह भी बिना किसी दुष्प्रभाव के अतः सकारात्मक शोध, प्रभावी प्रबंधन व मूल्यांकन के साथ सहजन का उपयोग कुपोषण के निवारण हेतु किया जाए तो निश्चय ही इससे सकारात्मक क्रांतिकारी परिणाम आएंगे।

वरिष्ठ अध्यापक (विज्ञान)
रा.उ.मा.वि. डांडूसर, बीकानेर (राज.)
मो. 9660727221

बोर्ड परीक्षा तैयारी विशेष

लेखाशास्त्र

❒ विकास चन्द्र 'भारू'

किसी भी विषय की महत्ता अन्य विषयों से कम नहीं होती है, बशर्ते कि उसको ईमानदारी के साथ अपनाया गया हो। वर्तमान समय में देश तथा विदेश के बदलते परिवेश एवं आर्थिक क्रिया-कलापों के बढ़ते क्षेत्र ने वाणिज्य शिक्षा को पुन: मुख्यधारा में ला खड़ा किया है। आज के दौर में जीवन एवं समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अर्थ (धन) प्रधान हो गया है एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे वाणिज्यिक क्रियाओं यथा बीमा, बैंकिंग, डाक, परिवहन, भण्डारण आदि का स्थान बढ़ता जा रहा है। अतएव उक्तानुसार घटित आर्थिक व्यवहारों की समझ एवं रिकार्डिंग के लिए वाणिज्य शिक्षा की महत्ता दिनोंदिन पुनर्स्थापित होती जा रही है।

उक्त के कारण ही वाणिज्य के विद्यार्थी को बेहतर भविष्य निर्माण हेतु लेखाशास्त्र विषय में गहरी समझ एवं गहन अध्ययन की आवश्यकता है। किसी विद्यार्थी के लिए विषय में निपुणता को उसे सम्बन्धित विषय में प्राप्त अंकों के आधार पर मापा जाता है। आज के इस प्रतिस्पर्धी दौर में सफलता के लिए विद्यार्थी को अपने ज्ञान को बेहतर परिणाम के माध्यम से प्रदर्शित करना होता है। अत: किसी भी विषय में प्राप्त अंक ही उस विद्यार्थी का सम्बन्धित विषय में क्षमता का मूल्यांकन है।

आगामी बोर्ड परीक्षा के मद्देनज़र लेखाशास्त्र विषय के अध्ययन एवं शेष बचे समय में अधिकतम अंक प्राप्त करने के सम्बन्ध में प्रस्तुत लेख के माध्यम से चर्चा की जा रही है, आशा है कि यह विद्यार्थियों के बेहतर परिणाम हेतु उपयोगी सिद्ध होगा।

बेहतर अंक प्राप्त करने हेतु सामान्यतः ध्यान रखने योग्य महत्त्वपूर्ण बातें जो सभी विषयों हेतु भी समान रूप से उपयोगी है:-

- अध्ययन हेतु यथासम्भव सम्बन्धित विषय की पाठ्यपुस्तक का ही उपयोग किया जाए न कि पासबुक्स या अन्य किसी प्रकार के गैर प्रामाणिक स्रोत का।
- बेहतर परिणाम हेतु अध्ययन हमेशा बोर्ड द्वारा प्रकाशित विषय के ब्लूप्रिंट के आधार पर ही किया जाए।
- प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व उन्हें अच्छी तरह से पढ़कर यह सुनिश्चित कर लिया जाना चाहिए कि प्रश्न के माध्यम से क्या पूछा गया है।
- प्रश्न की प्रकृति के अनुसार केवल चाहे गई शब्द सीमा में ही उनका उत्तर दिया जाना चाहिए।
- प्रश्नों के उत्तर देने हेतु हमेशा उनका बार-बार लिखकर अभ्यास किया जाना चाहिए।
- प्रश्नों के उत्तर देते समय महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं एवं तथ्यों को गहरा अथवा अण्डरलाइन के साथ प्रदर्शित करना चाहिए।
- गत वर्षों की बोर्ड परिक्षाओं के प्रश्न-पत्रों को हल करने का अभ्यास किया जाना चाहिए।

लेखाशास्त्र विषय में बेहतर अंक प्राप्त करने के सम्बन्ध में ध्यान रखने योग्य महत्त्वपूर्ण बातें:- लेखाशास्त्र विषय के बोर्ड पाठ्यक्रम को तीन भागों में बाँटा गया है जहाँ प्रथम भाग सभी विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य है एवं भाग दो एवं तीन में से किसी एक भाग का विद्यार्थी द्वारा चयन किया जाना है। प्रथम 'भाग-क' जो कि 60 अंकों का प्रतिनिधित्व करता है अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है तथा द्वितीय 'भाग-ख' एवं तृतीय 'भाग-ग' 20 अंकों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनमें से एक का चयन विद्यार्थी द्वारा अपनी रुच्यानुसार किया जाता है। प्रथम 'भाग-क' का पहला खण्ड (पाठ 1 से 4) जो कि साझेदारी लेखांकन से सम्बन्धित है अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है एवं 25 अंकों का प्रतिनिधित्व करता है। इस भाग की तैयारी के लिए सर्वप्रथम इसके सैद्धान्तिक (थ्योरी) भाग का गहनता से अध्ययन किया जाना आवश्यक है एवं अंकित प्रश्नों के हल हेतु गणितीय संक्रियाओं को हल करने का अच्छा अभ्यास होना आवश्यक है जैसे - साझेदारों के नए लाभ विभाजन अनुपात की गणना, ख्याति की गणना, पूंजी एवं आहरण पर ब्याज की गणना आदि को हल करने हेतु गणितीय अभ्यास अत्यावश्यक है। यहाँ पर कुछ बिन्दुओं का संक्षेप में उल्लेख किया जा रहा है विद्यार्थियों को चाहिए कि पहले इनके सम्बन्ध में जनरल प्रविष्टियाँ करके ही उनके आधार पर इन खातों को बनाने का अभ्यास करें-

- **साझेदारों का पूँजी खाता (परिवर्तनशील पूँजी खाता विधि):-**

Dr. Partner's Capital Account Cr.

Particulars	Amount	Particulars	Amount
पूँजी में कमी करने वाली समस्त मदें		**पूँजी में वृद्धि करने वाली समस्त मदें**	
प्रारम्भिक शेष (नाम शेष)		प्रारम्भिक शेष (जमा शेष)	
आहरण		नकद/बैंक खाता	
नकद/बैंक खाता (पूँजी की निकासी)		(अतिरिक्त पूँजी)	
आहरण पर ब्याज		पूँजी पर ब्याज	
लाभ-हानि नियोजन खाता (हानि में हिस्सा)		वेतन	
अन्तिम शेष (जमा शेष) (बकाया राशि)		लाभ-हानि नियोजन खाता (लाभ में हिस्सा)	
		अन्तिम शेष (नाम शेष) (बकाया राशि)	

नोट:- स्थिर पूँजी खाता विधि में दो खाते खोले जाते हैं-पूँजी खाता एवं चालू खाता, जहाँ पर पूँजी खाते का प्रारम्भिक एवं अन्तिम शेष समान रहता है यदि कोई अतिक्ति पूँजी न लगाई जाए एवं पूँजी स्थाई रूप से न निकाल ली जाए। शेष मदें उपर्युक्त की तरह ही चालू खाते में दिखाई जाएगी।

- **लाभ–हानि नियोजन खाता :–**

Dr. Profit & Loss Appropriation Account Cr.

Particulars	Amount	Particulars	Amount
खर्चे एवं हानियाँ		**आय एवं प्राप्तियाँ**	
लाभ–हानि खाते का नाम शेष (शुद्ध हानि)		लाभ–हानि खाते का जमा शेष (शुद्ध लाभ)	
साझेदारों की पूँजी पर ब्याज		साझेदारों के आहरण पर ब्याज	
साझेदारों का वेतन		साझेदारों का पूँजी/ चालू खाता (हानि में हिस्सा/ शेष राशि से)	
साझेदारों का कमिशन			
संचय (हस्तान्तरण)			
साझेदारों का पूँजी/ चालू खाता (लाभों में हिस्सा/ शेष राशि से)			

- **पुनर्मूल्यांकन खाता**

Dr. Revaluation Account Cr.

Particulars	Amount	Particulars	Amount
सम्पत्तियों के मूल्यों में कमी		सम्पत्तियों के मूल्यों में वृद्धि	
दायित्वों के मूल्यों में वृद्धि		दायित्वों के मूल्यों में कमी	
न लिखे गये दायित्व पुनर्मूल्यांकन पर लाभ (शेष राशि)		न लिखी गई सम्पत्तियाँ पुनर्मूल्यांकन पर हानि (शेष राशि)	

साझेदार के प्रवेश पर नए लाभ विभाजन एवं त्याग के अनुपात की गणना:– इस सम्बन्ध में साधारणतया प्रतिवर्ष एक प्रश्न अवश्य ही पूछा जाता है अत: इसकी गणना हेतु निम्न सभी छ: विधियों का उचित अभ्यास किया जाना आवश्यक है–

- जब प्रश्न में केवल नए साझेदार का अनुपात दिया गया हो–
- जब नया साझेदार पुराने साझेदारों से समान अनुपात में अपना हिस्सा प्राप्त कर रहा है–
- जब नया साझेदार पुराने साझेदारों से असमान अनुपात में अपना हिस्सा प्राप्त कर रहा है–
- जब नया साझेदार अपना सम्पूर्ण हिस्सा किसी एक साझेदार से प्राप्त कर रहा हो–
- जब नया साझेदार अपना हिस्सा पुराने साझेदारों से एक निश्चित अनुपात में प्राप्त करता हो–
- जब पुराने साझेदार अपने हिस्से का एक निश्चित भाग नए साझेदार के पक्ष में त्याग करता हो–
- **ख्याति की गणना:–** उक्त की तरह ही ख्याति की गणना के सम्बन्ध में भी साधारणतया प्रश्न पूछे जाते रहे हैं, छात्र ख्याति की गणना विधियों के प्रकारों एवं उप प्रकारों को लेकर असमंजस में रहते हैं अत: इस सम्बन्ध में संक्षिप्त रूप से निम्नानुसार इसके प्रकारों एवं उप प्रकारों को समझा जा सकता है–
- **वर्षों की क्रय विधि:–**
- औसत लाभ आधार–
- सरल औसत लाभ
- भारित औसत लाभ
- अधिलाभ आधार–(अधिलाभ = वास्तविक औसत लाभ – सामान्य लाभ)
- पूंजीकरण विधि :–
- औसत लाभों की पूंजीकरण विधि:–
- अधिलाभों की पूंजीकरण विधि :–
- गुप्त (छिपी हुई) या अनुमानित ख्याति विधि:–
- क्रय प्रतिफल विधि:–
- वार्षिकी विधि:–
- उक्त के अतिरिक्त ही साझेदार के अवकाश ग्रहण एवं मृत्यु पर लेखें अध्याय से एक बड़ा प्रश्न (सामान्यतः आंकिक) आने की सम्भावना रहती है जिसमें फायदे का अनुपात, नए लाभ–हानि अनुपात, ख्याति, अवितरित लाभ–हानि का बंटवारा, बीमा पॉलिसी का लेखा, उत्तराधिकारी के सम्बन्ध में लेखांकन एवं देय राशि के भुगतान की विधियों का प्रमुखता से अध्ययन करना आवश्यक है।
- साझेदारी के समापन अध्याय से साझेदारी और साझेदारी फर्म के समापन में अन्तर, वसूली व पुनर्मूल्यांकन खाते में अन्तर, वसूली खाते का निर्माण तथा न दर्ज हुई सम्पत्तियों एवं दायित्त्व का लेखांकन तथा साझेदार के दिवालिया होने पर लेखे (विशेष रूप से गार्नर बनाम मर्रे नियम)
- कम्पनी लेखांकन जो कुल 12 अंकों का प्रतिनिधित्व करता है, इसमें से भी प्रथम अध्याय कम्पनी लेखे अकेला ही 8 अंक का है एवं विद्यार्थियों के लिए अपेक्षाकृत अधिक सुगम्य भी है। इस अध्याय में आसान सैद्धांतिक (थ्योरी) भाग तथा एक निर्धारित आंकिक प्रक्रिया को सम्मिलित किया गया है जैसे कि किसी कम्पनी द्वारा अंशों को जारी करने के सम्बन्ध में निम्नानुसार प्रारम्भिक प्रविष्टियाँ होगी (यदि धनराशि किश्तों में देय हो) –
- आवेदन प्राप्ति पर:–

Bank A/C	Dr.
To Share Application	A/c

- आवेदन राशि को पूंजी खाते में अन्तरण पर:–

Share Application A/c	Dr.
To Share Capital	A/c

- आवंटन की राशि देय होने पर:

Share Allotment A/c	Dr.
To Share Capital	A/c

To Securities Premium A/c (यदि निर्गमन प्रीमियम पर हो तो प्रीमियम राशि से)

- आवंटन राशि प्राप्त होने पर:–

Bank A/c	Dr.
To Share Allotment	A/c

- प्रथम मांग की राशि देय होने पर:–

Share First Call A/c	Dr.
To Share Capital	A/c

- प्रथम मांग की राशि प्राप्त होने पर:-

Bank	A/c	Dr.
To Share First Call		A/c

- द्वितीय/अंतिम मांग की राशि देय होने पर:-

Share Second/Final Call	A/c	Dr.
To Share Capital		A/c

- द्वितीय/अंतिम मांग की राशि प्राप्त होने पर:-

Bank	A/c	Dr.
To Share Second/Final Call		A/c

- अग्रिम मांग राशि प्राप्त होने पर:-

Bank	A/c	Dr.
To Calls-in-Advance		A/c

- बकाया मांग के लिए :-

Calls-in-Arrears	A/c	Dr.
To Share Allotment / Share First / Second Call		A/c

अत: किसी भी कम्पनी द्वारा जारी किए जाने वाले अंशों के लिए उक्तानुसार ही प्रविष्टियाँ की जानी है परन्तु अधि-अभिदान एवं न्यून अभिदान की स्थिति में राशि की गणना के लिए प्रश्न को अच्छे से पढ़कर गणना सारिणी तैयार कर लेनी चाहिए एवं उसी आधार पर यदि पूछा गया है तो ब्याज की गणना भी समय तत्त्व को ध्यान रखते हुए ही करनी चाहिए। अंशों के निर्गमन के अभ्यास के पश्चात् ऋणपत्रों का लेखांकन सीखने में अपेक्षाकृत अधिक आसान हो जाता है अत: पहले अंशों के निर्गमन को अच्छे से पढ़ लेना आवश्यक है।

कम्पनी के वित्तीय विवरण गत वर्ष अध्ययन किए अन्तिम खातों के सदृश्य ही है, वर्तमान में कम्पनी के वित्तीय विवरणों हेतु कम्पनी अधिनियम की धारा 2013 की धारा 2(40) में उल्लिखित खातों/विवरण पत्रों को शामिल किया जाता है, इस हेतु चिट्ठे के लिए दायित्वों एवं संपत्ति के लिए पृथक्-पृथक् कॉलम न बनाकर एक शीर्ष प्रारूप को अपनाया गया है जिसमें पहले समस्त दायित्वों एवं उनके योग, तत्पश्चात् उसके नीचे समस्त संपत्तियों को दर्शाकर उनका योग किया जाता है। छात्रों को चाहिए कि वे बार-बार लिखते हुए उक्त खातों/विवरण पत्रों का अभ्यास करें तथा इसमें प्रयुक्त शब्दावली को अच्छे से समझें।

- 'संयुक्त साहस खाते' एवं 'प्रेषण खाता' अध्याय क्रमश: 7 एवं 8 अंक अर्थात् कुल 15 अंकों का भार रखते है तथा साधारणतया एक जैसी प्रकृति के होने के कारण समझने में आसान एवं सबसे अधिक अंक अर्जन योग्य अध्याय है। इसमें लेखांकन हेतु यह कॉमन है कि-
- किसी भी खर्चे/व्यय के लिए संयुक्त साहस/प्रेषण खाते को नाम किया जाना है तथा आय/प्राप्तियों के लिए उक्त खातों को जमा किया जाना है।
- यदि व्यय साहसी या प्रेषक द्वारा स्वयं किया गया है तो रोकड़/बैंक खाता जमा एवं आय/प्राप्ति भी स्वयं के द्वारा की गई है तो रोकड़/बैक खाते का नाम किया जाएगा।
- यदि व्यय संयुक्त साहसी या प्रेषणी द्वारा किया गया है तो उसका खाता जमा एवं आय/प्राप्ति भी संयुक्त साहसी या प्रेषणी के द्वारा की गई है तो उनके खाते को नाम किया जाएगा।

इस प्रकार उक्त सामान्य तथ्यों को ध्यान में रखते हुए अन्य आवश्यक समायोजनों की सहायता से खातों का निर्माण करने का अभ्यास करना चाहिए।

- गैर व्यापारिक संस्थाओं तथा पेशेवर व्यक्तियों के लेखे अध्याय 8 अंक भार का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें से आय व्यय खाते मे दिखाए जाने वाली चन्दे की राशि की गणना या उपभोग की गई सामग्री की राशि की गणना में से एक प्रश्न साधारणतया प्रतिवर्ष बोर्ड परीक्षा में पूछा जाता रहा है तथा इस अध्याय से एक-दो प्रश्न सैद्धान्तिक प्रश्न भी प्रश्न-पत्र में शामिल रहता है।
- आगे के दो खण्डों में से 'भाग-ख' में वित्तीय विवरणों का विश्लेषण, अनुपात विश्लेषण एवं लेखाशास्त्र में नैतिकता अध्याय को शामिल किया गया है जो स्कोरिंग तो है परन्तु इसके निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता है। 'भाग-ग' में कम्प्यूटर एवं डाटाबेस से सम्बन्धित तीन अध्यायों को शामिल किया गया है। उक्त भाग 20 अंको का प्रतिनिधित्व करते हैं। गणितीय संक्रियाओं में कमजोर छात्रों को यह सलाह रहती है कि वे 'भाग-ग' का चयन करें ताकि गत अध्यायों के आंकिक प्रश्नों के अभ्यास में ज्यादा समय दे सकें।

इस प्रकार पाठ्यक्रम को मध्यनजर रखते हुए एक कार्ययोजना के साथ अध्ययन किया जाए तो अभी भी परीक्षा के शेष बचे समय में काफी हद तक अच्छे अंक प्राप्त किए जा सकते हैं। परन्तु जैसा कि कहा जाता है कि 'सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता है' अत: एक लक्ष्य के साथ की गई मेहनत ही सफलता और अच्छे अंक प्राप्ति का सूत्र है। फिर भी चलते-चलते निम्न कुछ बातों का जिक्र करना चाहूँगा कि -

- लेखाशास्त्र विषय के प्रति धारणा है कि यह एक गणित जैसा आंकिक विषय है तो यह सरासर मिथ्या है, किसी भी विषय में उसका सैद्धान्तिक पक्ष भी उतना ही महत्त्वपूर्ण होता है जितना कि उसका आंकिक पक्ष। अत: किसी भी अध्याय के आंकिक प्रश्नों को हल करने से पहले उसके सैद्धान्तिक पक्ष को अच्छे से तैयार कर लिया जाना चाहिए।
- गत परीक्षा के प्रश्न पत्र में आए प्रश्नों को हल करने का अभ्यास करते रहना चाहिए।
- नियमित रूप से विषय का दोहरान करते रहना चाहिए ताकि परीक्षा के दौरान अत्यधिक भार न रहे।
- लिखकर प्रश्नों को हल करने की प्रवृति का विकास करें।
- हमेशा विषयाध्यापक के सम्पर्क में रहें तथा कठिन बिन्दुओं पर चर्चा करें।
- विद्यार्थियों को आपस में मिलकर पढ़ने की आदत डालनी चाहिए।

प्राध्यापक-वाणिज्य
राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय
ऊपनी (श्री डूंगरगढ़), बीकानेर
मो: 9414540337

आदेश-परिपत्र : फरवरी, 2019

1. ग्राम पंचायत स्तरीय साक्षरता केन्द्र प्रभारी के रूप में नियुक्त पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी (PEEO) द्वारा साक्षरता केन्द्रों के प्रभावी संचालन के क्रम में।
2. बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना–2019 के सम्बन्ध में।
3. विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजना में राज्य के समस्त अनुदानित/गैर–अनुदानित विद्यालयों को सम्मिलित करने बाबत।
4. सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 के अन्तर्गत लोक सूचना अधिकारी एवं अपीलीय अधिकारी मनोनीत किए जाने के संबंध में।

1. ग्राम पंचायत स्तरीय साक्षरता केन्द्र प्रभारी के रूप में नियुक्त पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी (PEEO) द्वारा साक्षरता केन्द्रों के प्रभावी संचालन के क्रम में।

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा–मा/माध्य/आदर्श वि/विविध/वो–2/2018/193 ● दिनांक : 07.01.2019 ● समस्त संभागीय संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा ● विषय : ग्राम पंचायत स्तरीय साक्षरता केन्द्र प्रभारी के रूप में नियुक्त पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी (PEEO) द्वारा साक्षरता केन्द्रों के प्रभावी संचालन के क्रम में। ● प्रसंग : विशिष्ठ शासन सचिव, स्कूल शिक्षा विभाग, जयपुर का पत्रांक प.13(28) सांख्यिकी/2018/6884 दिनांक 31.12.2018 ● संदर्भः– प्रमुख शासन सचिव स्कूल शिक्षा भाषा तथा पुस्तकालय विभाग एवं पंचायतीराज (प्रारम्भिक शिक्षा) विभाग, राजस्थान के आदेश क्रमांक–प.13(28) सांख्यिकी/2018/3115– 3550 दिनांकः 16.07.2018

उपर्युक्त विषय एवं प्रासंगिक पत्र के संदर्भ में लेख है कि प्रमुख शासन सचिव महोदय स्कूल शिक्षा भाषा तथा पुस्तकालय विभाग एवं पंचायती राज. (प्रारम्भिक शिक्षा) विभाग, राजस्थान के निर्देशानुसार पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी (PEEO) को साक्षरता संबंधी गतिविधियों के प्रभावी क्रियान्वयन, नियमित मॉनिटरिंग एवं समीक्षा हेतु ग्राम पंचायत स्तर पर संचालित साक्षरता केन्द्र का प्रभारी नियुक्त किया गया है। उन्हें साक्षरता कार्यक्रमों की नियमित समीक्षा करने तथा संचालित विभिन्न साक्षरता कार्यक्रमों में संधारित सामग्री/रिकॉर्ड का भौतिक सत्यापन कर व्यवस्थित रूप से संधारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए थे परन्तु समीक्षा के दौरान यह अनुभव किया गया कि उक्त निर्देशों की क्रियान्विति प्रभावी रूप से नहीं हो पाई है।

अतः इस पत्र के माध्यम से आपको निर्देशित किया जाता है कि आप अपने मण्डल क्षेत्राधिकार में उक्तानुसार क्रियान्विति करवाया जाना सुनिश्चित करेंगे तथा समय–समय पर इस कार्य की अपने स्तर पर मॉनिटरिंग भी करेंगे।

● **नथमल डिडेल, आई.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

● **ग्राम पंचायत स्तरीय साक्षरता केन्द्र प्रभारी के रूप में नियुक्त पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी (PEEO) द्वारा साक्षरता केन्द्रों के प्रभावी संचालन के क्रम में।**

● निदेशालय साक्षरता एवं सतत शिक्षा, राजस्थान, जयपुर ● क्रमांकः पं. 13(28)सांख्यिकी/2018/6884 ● दिनांक : 31.12.2018 ● निदेशक माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर। ● विषय : ग्राम पंचायत स्तरीय साक्षरता केन्द्र प्रभारी के रूप में नियुक्त पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी (PEEO) द्वारा साक्षरता केन्द्रों के प्रभावी संचालन के क्रम में। ● संदर्भ : प्रमुख शासन सचिव स्कूल शिक्षा भाषा तथा पुस्तकालय विभाग एवं पंचायतीराज (प्रारम्भिक शिक्षा) विभाग, राजस्थान के आदेश क्रमांकः प.13(28) सांख्यिकी/2018/3115–3550 दिनांक 16.07.18

प्रमुख शासन सचिव महोदय स्कूल शिक्षा भाषा तथा पुस्तकालय विभाग एवं पंचायती राज (प्रारम्भिक शिक्षा) विभाग, राजस्थान के संदर्भित आदेश द्वारा पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी को साक्षरता संबंधी गतिविधियों के प्रभावी क्रियान्वयन, नियमित मॉनिटरिंग हेतु ग्राम पंचायत स्तर पर संचालित साक्षरता केन्द्र का प्रभारी नियुक्त किया गया है। उक्त आदेश के द्वारा उन्हें साक्षरता कार्यक्रमों की नियमित समीक्षा करने तथा संचालित विभिन्न साक्षरता कार्यक्रमों में संधारित सामग्री/रिकॉर्ड का भौतिक सत्यापन कर व्यवस्थित रूप से संधारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए थे। परन्तु समीक्षा के दौरान यह अनुभव किया गया कि उक्त आदेश की क्रियान्विति प्रभावी रूप से नहीं हो पाई है।

अतः अपने अधीनस्थ सभी संयुक्त निदेशक एवं मुख्य जिला शिक्षा अधिकारियों को आदेशित कर संलग्न संदर्भित आदेश की क्रियान्विति करवाया जाना सुनिश्चित करावें।

● संलग्न : संदर्भित पत्र।

● **डॉ. राजेश शर्मा, आई.ए.एस.** विशिष्ठ शासन सचिव, स्कूल शिक्षा विभाग

● निदेशालय साक्षरता एवं सतत शिक्षा, राजस्थान, जयपुर ● आदेश ● क्रमांक : प. 13(28) सांख्यिकी/2018/3115–3550 ● दिनांक 16.07.2018

निदेशालय साक्षरता एवं सतत् शिक्षा विभाग राजस्थान द्वारा समय–समय पर साक्षरता एवं सतत् शिक्षा से संबंधित केन्द्र प्रवर्तित विभिन्न योजनाएँ एवं राज्य मद की योजनाएँ संचालित की जाती रही है। इनमें संपूर्ण साक्षरता, उत्तर साक्षरता, सतत् शिक्षा, शिक्षण एवं व्यवसायिक प्रशिक्षण शिविर तथा साक्षर भारत कार्यक्रम आदि योजनाएँ प्रमुख है। ग्राम पंचायत स्तर पर इन योजनाओं का क्रियान्वयन एवं समन्वयन योजना के प्रावधानों के अनुसार अलग–अलग रूप में होता रहा है।

अब जबकि स्कूल शिक्षा एवं भाषा विभाग द्वारा ग्राम पंचायत स्तर पर विद्यालयों के नियमित संचालन एवं प्रभावी मॉनिटरिंग हेतु पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी (PEEO) कार्यालय की स्थापना कर दी गई है। साक्षरता निदेशालय भी प्रारम्भिक शिक्षा का ही अंग है, इस संदर्भ में साक्षरता संबंधी योजनाओं एवं कार्यक्रमों के संचालन, मॉनिटरिंग एवं समीक्षा का दायित्त्व भी ग्राम पंचायत स्तरीय पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी (PEEO) को दिया जाकर साक्षरता का प्रभारी नियुक्त किया जाता है।

अतः पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी को निर्देशित किया जाता है कि संबंधित ग्राम पंचायत में संचालित साक्षरता संबंधी गतिविधियों की नियमित समीक्षा करे। साक्षरता के कार्यक्रमों में संधारित सामग्री/रिकॉर्ड का भौतिक सत्यापन कर व्यवस्थित रूप से संधारण सुनिश्चित कराएँ। साक्षर भारत कार्यक्रम के अन्तर्गत बेसिक साक्षरता से लाभान्वित नव साक्षरों एवं शेष वंचित असाक्षरों का रिकॉर्ड भी संधारित करावें। भविष्य में संचालित की जाने वाली साक्षरता संबंधी नवीन योजना के क्रम में विस्तृत दिशा निर्देश पृथक से जारी किए जाएँगे।

● **नरेशपाल गंगवार, प्रमुख शासन सचिव,** स्कूल शिक्षा, भाषा तथा पुस्तकालय विभाग एवं पंचायती राज (प्रारम्भिक शिक्षा) विभाग, राजस्थान

2. बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना–2019 के सम्बन्ध में।

● कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा-मा/माध्य/निप्र/डी-।/21901/पप/2019/ 182 दिनांकः 15.01.2019 ● विषयः बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना-2019 के सम्बन्ध में।

माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर के तत्वावधान में प्रदेश के राजकीय विद्यालयों में माध्यमिक कक्षाओं के बोर्ड परीक्षा परिणाम में संख्यात्मक एवं गुणात्मक सुधार हेतु विगत दो वर्षों में अभिनव कार्य योजना 'प्रयास-2017' एवं 'प्रयास-2018' क्रियान्वित की गई थी, जिसके अन्तर्गत कक्षा-10 में परीक्षा परिणाम को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करने वाले तीन अपेक्षाकृत कठिन विषयों गणित, अंग्रेजी तथा विज्ञान में विद्यार्थियों की समझ में अभिवृद्धि हेतु राज्य में विभिन्न स्थानों पर विषय विशेष की कार्यशालाएँ आयोजित कर विशिष्ट शैक्षिक सामग्री का निर्माण किया गया था। निर्मित सामग्री का विशिष्ट लक्ष्य था, कक्षा-10 के अपेक्षाकृत कठिन माने जाने वाले तीनों पूर्वोल्लेखित विषयों की पाठ्य सामग्री को सरल तरीके एवं सुग्राह्य शिक्षण विधा द्वारा विद्यार्थियों तक पहुँचाना, जिससे रटने की प्रवृत्ति से मुक्त होकर विद्यार्थी जटिल लगने वाली विषय वस्तु को आसानी से समझ सके और इस प्रकार अर्जित ज्ञान स्थाई हो सके।

विगत वर्ष कक्षा-10 के पाठ्यक्रम में परिवर्तन के दृष्टिगत उक्त तीनों विषयों के साथ ही शेष तीन विषयों- हिन्दी, सामाजिक विज्ञान एवं तृतीय भाषा (संस्कृत) से सम्बन्धित परीक्षोपयोगी शैक्षिक सामग्री एवं बोर्ड पैटर्न के अनुरूप मॉडल प्रश्न पत्र तैयार करवाए जाकर विद्यार्थी हितार्थ विभाग की आधिकारिक वेबसाइट तथा 'शाला दर्पण पोर्टल' पर उपलब्ध करवाए गए थे तथा समस्त संस्थाप्रधानों को उक्त सम्पूर्ण सामग्री की सहज उपलब्धता कक्षा-10 की बोर्ड परीक्षा में प्रविष्ट होने वाले समस्त विद्यार्थियों हेतु सुनिश्चित किए जाने के निर्देश प्रदान किए गए थे। उक्त समस्त कार्यवाही का समुचित प्रबोधन एवं पर्यवेक्षण हेतु अधीनस्थ अधिकारियों को भी निर्देशित किया गया था।

उपर्युक्तानुसार परीक्षा परिणाम के परिष्कार हेतु सम्पादित नवाचार के प्रतिफल में विगत दोनों वर्षों में माध्यमिक परीक्षा के बोर्ड परीक्षा परिणाम में अनुकूल नतीजों का क्रम इस वर्ष कायम रखने हेतु समस्त संस्थाप्रधानों द्वारा आगामी दो माह की समयावधि में उनके विद्यालय के माध्यमिक परीक्षा के बोर्ड परीक्षा परिणाम में संख्यात्मक वृद्धि के साथ ही गुणात्मक उन्नयन के लक्ष्य संधान हेतु अग्रानुसार कार्यवाही एवं कार्य योजना की क्रियान्विति सुनिश्चित की जानी हैः-

1. **पाठ्यक्रम की पूर्णताः-** इस वर्ष माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की **उच्च माध्यमिक परीक्षाएँ 07 मार्च** तथा **माध्यमिक परीक्षाएँ 14 मार्च, 2019** से प्रारम्भ होने जा रही है, जिनके समय विभाग चक्र भी बोर्ड द्वारा घोषित किए जा चुके हैं। विभागीय निर्देशानुसार बोर्ड परीक्षाओं का पाठ्यक्रम अर्द्धवार्षिक परीक्षा से पूर्व ही पूर्ण करवाया जाता है। उक्तानुरूप समस्त संस्थाप्रधान बोर्ड कक्षाओं में समस्त विषयों का पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के अवबोधन स्तरानुरूप अधिगम की सुनिश्चितता के मानदण्ड से पूर्ण करवाएँगे।
2. **अधिगम स्तर के अनुरूप कठिनाई निवारणः-** बोर्ड कक्षाओं में अपेक्षाकृत कठिन विषयों में विद्यार्थियों के अधिगम स्तर के अनुरूप चिह्नीकरण करते हुए काठिन्य बिन्दुओं के अनुसार उपचारात्मक शिक्षण की सार्थक व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। इस हेतु विद्यालय समय में अथवा विद्यालय समय के उपरान्त समय प्रबन्धन करते हुए अतिरिक्त कक्षाओं का आयोजन आवश्यक रूप से किया जाए। अतिरिक्त कक्षाओं के आयोजन तथा उपचारात्मक शिक्षण की प्रभावी व्यवस्था से विद्यालय के बोर्ड परीक्षा परिणाम में निश्चय ही आशातीत सुधार परिलक्षित होगा। माध्यमिक कक्षा हेतु विभागीय वेबसाइट के लिंक (http://education.rajasthan.gov.in/content/raj/education/secondary-education/en/order/Secondary/prayas-2017.html) पर उपलब्ध 'प्रयास-2018' के तहत निर्मित विशिष्ट शैक्षिक सामग्री तथा मॉडल प्रश्न-पत्रों के माध्यम से समस्त विषयाध्यापकों को विद्यार्थियों की अवबोधन (Understanding) क्षमता का विकास कर उनके अधिगम स्तर (Learning Level) में सुधार हेतु प्रभावी कार्यवाही के लिए पाबन्द किया जाना सुनिश्चित करें।
3. **पुनरावृत्ति एवं यूनिट टैस्टः-** अर्द्धवार्षिक परीक्षा की उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन से प्रत्येक कक्षा में विषयाध्यापक द्वारा

कमजोर अधिगम स्तर वाले विद्यार्थियों का चिह्नीकरण सुगमता से किया जा सकता है। उक्तानुरूप समस्त बोर्ड कक्षाओं में पुनरावृत्ति के साथ-साथ विषयाध्यापक द्वारा यूनिट टैस्ट के माध्यम से उपचारात्मक शिक्षण के उपरान्त विद्यार्थियों द्वारा प्रदर्शित अधिगम लब्धि का मूल्यांकन भी सतत रूप से किया जावे।

4. **प्री-बोर्ड परीक्षा का आयोजनः-** अतिरिक्त कक्षाओं एवं उपचारात्मक शिक्षण के उपागमों द्वारा प्राप्त शैक्षिक लब्धि का मूल्यांकन कार्य योजना के संलग्न प्रदर्शित समय-सारणी के अनुरूप माह फरवरी-2019 के द्वितीय पखवाड़े में बोर्ड कक्षाओं हेतु बोर्ड पैटर्न पर आयोज्य प्री-बोर्ड परीक्षा द्वारा किया जा सकेगा। प्री-बोर्ड परीक्षा में अपेक्षानुरूप प्रदर्शन नहीं कर पाने वाले विद्यार्थियों को उनके विषयवार काठिन्य (Weak Points) के आधार पर परीक्षा तैयारी अवकाश के दौरान विद्यालय में बुलाकर Supervised Study (सम्बन्धित विषयाध्यापक द्वारा विद्यार्थी को सम्मुख बैठाकर) के विशिष्ट उपायों द्वारा शैक्षिक उन्नयन की व्यवस्था सुनिश्चित की जाएगी।

5. **संस्थाप्रधान एवं विषयाध्यापक की भूमिकाः-** परीक्षा परिणाम की गुणात्मकता में पाठ्यक्रम-अध्यापन के प्रभावी एवं सुग्राह्य होने तथा सम्बन्धित विषयाध्यापक की रुचि एवं लगन के साथ-साथ संस्थाप्रधान के प्रभावी पर्यवेक्षण की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। परीक्षा परिणाम में संख्यात्मक सुधार की सुनिश्चितता उपरान्त अगला लक्ष्य गुणात्मक सुधार है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को प्रत्येक विषय में अधिकाधिक अंक (More and More Marks) एवं उत्तम श्रेणी की प्राप्ति हेतु प्रोत्साहित करना है। उक्तानुसार तृतीय श्रेणी में संभावित छात्र द्वितीय श्रेणी, द्वितीय श्रेणी वाला प्रथम श्रेणी, प्रथम श्रेणी वाला विशेष योग्यता, विशेष योग्यता वाला 90% तथा विशिष्ट प्रतिभा सम्पन्न विद्यार्थियों का मेरिट की दिशा में कदम (Steps Towards Merit) उठ सके, इस उद्देश्य से वर्ष 2019 की बोर्ड परीक्षाओं में राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के प्रदर्शन में उत्तरोत्तर सुधार हेतु 'बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना-2019' निर्देशित की गई है। यदि विषयाध्यापक तथा संस्थाप्रधान द्वारा विद्यार्थियों की पहचान प्रभावी तरीके से की जाकर अतिरिक्त कक्षाओं/रेमेडियल क्लासेज के माध्यम से प्रभावी कार्यवाही की जाए, तो निश्चित रूप से बोर्ड/गृह परीक्षा परिणाम में सुधार के साथ-साथ विद्यार्थियों का विद्यालय के प्रति लगाव भी बढ़ेगा।

6. **अधीनस्थ कार्यालयों एवं परिवीक्षण अधिकारियों की भूमिकाः-** 'बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना-2019' के फील्ड में सार्थक एवं प्रभावी क्रियान्वयन हेतु ब्लॉक, जिला एवं संभाग स्तरीय कार्यालयों द्वारा क्षेत्राधिकार में अग्रांकित विवरणानुसार प्रभावी पर्यवेक्षण एवं सघन निरीक्षण अभियान द्वारा उक्त कार्य योजना में अभीष्ट लक्ष्यों की प्राप्ति सुनिश्चित की जाएगी।

(i) ब्लॉक स्तरः- समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी (CBEO) अपने कार्यालय में पदस्थापित अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी-द्वितीय (ACBEO-2) के माध्यम से ब्लॉक क्षेत्राधिकार के समस्त माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 'बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना-2019' की आगामी 02 माह में समुचित एवं सतत क्रियान्विति हेतु प्रभावी कार्य योजना निर्मित करेंगे। उक्त दोनों अधिकारियों द्वारा आवश्यकतानुसार विद्यालयों को पारस्परिक रूप से बाँट कर बोर्ड परीक्षा प्रारम्भ होने से पूर्व क्षेत्राधिकार के समस्त विद्यालय का सघन परिवीक्षण किया जाना सुनिश्चित करेंगे तथा इस दौरान विद्यालय स्टाफ एवं संस्थाप्रधान को विद्यालय के बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु सार्थक एवं वांछित सम्बलन प्रदान करेंगे। उक्त कार्य योजना के क्रियान्वयन एवं सघन निरीक्षण अभियान से संबंधित पत्रावली का समुचित संधारण कार्यालय में आवश्यक रूप से करेंगे, जिससे कि उच्चाधिकारियों द्वारा उनके द्वारा निर्मित कार्य योजना की सार्थकता एवं प्रभाव का सटीक मूल्यांकन किया जा सके। CBEO/ACBEO-2 द्वारा निर्मित कार्य योजना एवं ब्लॉक क्षेत्राधिकार में दैनिक प्रगति की रिपोर्ट मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी को प्रतिदिन प्रेषित की जाएगी।

(ii) जिला स्तरः- समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी (CDEO) कार्यालय में पदस्थापित सहायक निदेशक (AD) के माध्यम से जिला क्षेत्राधिकार में विगत वर्ष न्यून परीक्षा परिणाम वाले माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों का चिह्नीकरण कर उनमें 'बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना-2019' की आगामी 02 माह में समुचित एवं सतत क्रियान्विति हेतु प्रभावी कार्य योजना निर्मित करेंगे। मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी चिह्नित विद्यालयों का बोर्ड परीक्षा प्रारम्भ होने से पूर्व सघन परिवीक्षण किया जाना सुनिश्चित करेंगे तथा इस दौरान विद्यालय स्टाफ एवं संस्थाप्रधान को विद्यालय के बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु सार्थक एवं वांछित सम्बलन प्रदान करेंगे। सहायक निदेशक उक्त कार्य योजना हेतु कार्यालय में प्रभारी अधिकारी की भूमिका का निर्वहन करते हुए न्यून परीक्षा परिणाम वाले चिह्नित विद्यालयों में उक्त कार्य योजना के प्रभावी क्रियान्वयन एवं सघन निरीक्षण अभियान से संबंधित पत्रावली का समुचित संधारण करेंगे, जिससे कि उच्चाधिकारियों द्वारा जिला परिक्षेत्र में उक्त कार्य योजना के संचालन का मूल्यांकन किया जा सके। CDEO/AD द्वारा निर्मित कार्य योजना एवं जिला क्षेत्राधिकार की प्रगति रिपोर्ट संभागीय संयुक्त निदेशक को साप्ताहिक आधार पर प्रेषित की जाएगी।

(iii) संभाग स्तरः- समस्त संभागीय जिला शिक्षा अधिकारी (Zonal JD) अपने शिक्षा संभाग क्षेत्राधिकार में 'बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना-2019' की वास्तविक क्रियान्विति हेतु उत्तरदायी होंगे। उक्त कार्य योजना को परिणाममूलक बनाए जाने हेतु समस्त संभागीय संयुक्त निदेशक अपने कार्यालय में पदस्थापित दोनों अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारियों (ADEO) के माध्यम से आगामी 02 माह में

संभाग क्षेत्राधिकार में बोर्ड परीक्षा परिणाम के परिप्रेक्ष्य में समस्यामूलक (विगत वर्षों में निरन्तर न्यून परीक्षा परिणाम से ग्रसित) विद्यालयों को चिह्नित कर उन विद्यालयों के वर्ष-2019 के बोर्ड परीक्षा परिणाम में समुचित सुधार किए जाने हेतु प्रभावी कार्य योजना निर्मित करेंगे। संयुक्त निदेशक द्वारा चिह्नित विद्यालयों का बोर्ड परीक्षा प्रारम्भ होने से पूर्व सघन परिवीक्षण किया जाना सुनिश्चित किया जाएगा तथा वे इस दौरान विद्यालय स्टाफ एवं संस्थाप्रधान को विद्यालय के बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु सार्थक एवं वांछित सम्बलन प्रदान करेंगे। संयुक्त निदेशक द्वारा उक्त कार्य योजना के दैनंदिन प्रबोधन (Daily Monitoring) हेतु कार्यालय में पदस्थापित दोनों अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारियों को आवश्यकतानुसार प्रभारी अधिकारी की भूमिका निर्वहन हेतु पाबंद करेंगे। प्रभारी अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी न्यून परीक्षा परिणाम वाले चिह्नित समस्यामूलक विद्यालयों में उक्त कार्य योजना के प्रभावी क्रियान्वयन एवं सघन निरीक्षण अभियान से संबंधित पत्रावली का समुचित संधारण करेंगे तथा उप निदेशक (माध्यमिक), कार्यालय हाजा को उक्त कार्य योजना के संचालन से संबंधित प्रगति रिपोर्ट पाक्षिक आधार पर भिजवाया जाना सुनिश्चित करेंगे।

7. कार्य योजना निष्पादन हेतु समय-सारिणी:-

क्र. सं.	सम्पादित की जाने वाली कार्यवाही का विवरण	निर्धारित तिथि/ अवधि
1.	कार्य योजना की क्रियान्विति हेतु निर्धारित अवधि। इस दौरान विद्यालयों में कक्षा 10/12 के समस्त विद्यार्थियों के लिए आवश्यकतानुसार उपचारात्मक शिक्षण तथा गहन अध्यापन कार्यक्रम का नियमित संचालन किया जाए। साथ ही कक्षा 10 हेतु विभागीय वेबसाइट/शाला दर्पण पर उपलब्ध प्रयास 2018 के तहत निर्मित अध्ययन/शैक्षिक सामग्री का व्यापक उपयोग किया जाए।	16.01.2019 से 13.03.2019
2.	संस्थाप्रधान एवं स्टाफ द्वारा कक्षा10/12 के समस्त विद्यार्थियों की शैक्षिक लब्धि के सम्बन्ध में अभिभावकों को अवगत करवाना। बैठक में अभिभावकों को इस कार्ययोजना बाबत विस्तृत जानकारी दिया जाना तथा कार्य योजना की क्रियान्विति अवधि में कक्षा 10/12 की बोर्ड परीक्षा में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों की विद्यालय में शत-प्रतिशत उपस्थिति हेतु अभिभावकों को प्रेरित करना।	पारस्परिक वार्ता द्वारा एवं 26 जनवरी 2019 गणतंत्र दिवस के अवसर पर आयोज्य समारोह /बैठक के दौरान
3.	संस्थाप्रधान वाक्पीठ के दौरान एक सत्र में उक्त कार्य योजना के सार्थक एवं प्रभावी क्रियान्वयन के संबंध में वार्ता/परिचर्चा का आयोजन एवं विगत वर्षों में संख्यात्मक एवं गुणात्मक रूप से उल्लेखनीय बोर्ड परीक्षा परिणाम हेतु चर्चित/बहु प्रशंसित संस्थाप्रधान/विषयाध्यापक के अनुभव/ सुझाव/सक्सैस स्टोरी के रूप में समस्त संस्थाप्रधान से साझा किया जाकर उन्हें प्रेरित करना।	फरवरी-2019 के तृतीय सप्ताह में आयोज्य
4.	समस्त माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में बोर्ड पैटर्न पर प्री-बोर्ड परीक्षा का आयोजन।	फरवरी-2019 के द्वितीय पखवाड़े में।
5.	प्री-बोर्ड परीक्षा में विद्यार्थियों के प्रदर्शन एवं परिणाम के सम्बन्ध में प्रत्येक विद्यार्थी से व्यक्तिशः बातचीत कर उसके काठिन्य (Weak Points) से अवगत करवाना तथा इस हेतु विशेष प्रयास करने हेतु प्रेरित करना।	फरवरी-2019 के अंतिम/मार्च-2019 के प्रथम सप्ताह में
6.	अभिभावक-अध्यापक परिषद की माँ-शिक्षक बैठक (MTM) के दौरान बोर्ड परीक्षा में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों से उनके बच्चे की शैक्षिक स्थिति/लब्धि बाबत विस्तृत विमर्श उपरान्त परीक्षा अवधि में सकारात्मक वातावरण/अभिप्रेरण हेतु अभिभावकों को मार्गदर्शन प्रदान करना।	06 मार्च-2019
7.	बोर्ड परीक्षा हेतु तैयारी अवकाश के दौरान प्री-बोर्ड परीक्षा में विद्यार्थियों के प्रदर्शन के मूल्यांकन पश्चात विषयवार काठिन्य (Weak Points) के आधार पर विद्यार्थियों को विद्यालय में बुलाकर सुपरवाइज्ड स्टडी (संबंधित विषयाध्यापक द्वारा सम्मुख बैठा कर) करवाया जाना।	परीक्षा तैयारी अवकाश के दौरान (कुल अवधि 14 दिवस)

समस्त सम्बन्धितों द्वारा उपर्युक्त निर्देशों की पालना सर्वोच्च प्राथमिकता से सम्पन्न करवाई जानी सुनिश्चित की जावे।

● **नथमल डिडेल, आई.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

3. विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजना में राज्य के समस्त अनुदानित/गैर-अनुदानित विद्यालयों को सम्मिलित करने बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/छात्रवृत्ति/सेल E/विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा/ 2018-19 ● दिनांकः 21.01.2019 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक (मुख्यालय) ● विषय : विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजना में राज्य के समस्त अनुदानित/गैर-अनुदानित विद्यालयों को सम्मिलित करने बाबत। ● प्रसंग : राज्य बीमा व प्रावधायी निधि विभाग जयपुर के पत्रांक GIF/GIS/SSI/Aided. Non Aided/ 2018-19/2277 दिनांक : 26.12.2018 के क्रम में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक पत्र के क्रम में राज्य के समस्त अनुदानित/गैर-अनुदानित (निजी) विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9 से 10 के विद्यार्थियों की दुर्घटना में मृत्यु होने अथवा दुर्घटना के कारण पूर्व या आंशिक आधार पर स्थायी रूप से अपंग हुए विद्यार्थियों के माता-पिता को आर्थिक संबल प्रदान करने के उद्देश्य से राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग (साधारण बीमा निधि) के जिला स्तरीय कार्यालयों द्वारा विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजना क्रियान्वित की जा रही है।

उपर्युक्त शिक्षण संस्थानों पर लागू कल्याणकारी प्रकृति की इस दुर्घटना बीमा योजना के अंतर्गत शिक्षण संस्थान द्वारा प्रीमियम राशि (ई-ग्राम द्वारा) मय विद्यार्थियों की सूची सम्बंधित जिले के राज्य बीमा व प्रावधायी

निधि विभाग कार्यालय में ज़मा करने की दिनांक से आगामी एक वर्ष तक के लिए पॉलिसी शर्तें के अनुसार जोखिम कवर किया जाता है। वर्तमान में इस योजना के तहत दो श्रेणियाँ है - (1) 50/- रुपये प्रीमियम पर बीमाधन 1.00 लाख रुपये तथा (2) 25/- रुपये प्रीमियम पर बीमाधन 50 हजार रुपये। इस योजना के अंतर्गत पॉलिसी की शर्तें राजकीय विद्यालयों हेतु ज़ारी की गयी शर्तों के अनुरूप ही है जो कि बीमा विभाग की वेबसाइट http://sipf.rajasthan.gov.in/GIStudentSafetyAccidentInsurance.aspx पर उपलब्ध है तथा सुलभ सन्दर्भ हेतु पत्र के साथ संलग्न भी की जा रही है।

अतः आपको निर्देशित किया जाता है कि आप अपने अधीनस्थ समस्त अनुदानित / गैर-अनुदानित (निजी) विद्यालयों के कक्षा 9 से 10 के विद्यार्थियों को इस दुर्घटना बीमा के अंतर्गत बीमा करवाना सुनिश्चित करवाते हुए इस कार्यालय को अवगत करावें।

इस कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता से सम्पादित करें।

● संलग्न : उपर्युक्तानुसार

● **नथमल डिडेल, आई.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

4. सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के अन्तर्गत लोक सूचना अधिकारी एवं प्रथमअपीलीय अधिकारी मनोनीत किए जाने के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/सूअप्र/निर्देश/2014-15/101 दिनांक 18.12.2018 ● आदेश ● विषयः सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के अन्तर्गत लोक सूचना अधिकारी एवं प्रथम अपीलीय अधिकारी मनोनीत किए जाने के संबंध में।

सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के अन्तर्गत निदेशालय प्रारंभिक शिक्षा तथा निदेशालय माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर स्तर से पूर्व में जारी समस्त आदेशों को प्रत्याहारित कर, स्कूल शिक्षा की नवीन एकीकृत शिक्षा संकुल व्यवस्था के अनुरूप संलग्नानुसार लोक सूचना अधिकारी एवं प्रथम अपीलीय अधिकारी मनोनीत किए जाते हैं। यह आदेश तत्काल प्रभाव से प्रभावी होंगे।

● **(श्याम सिंह राजपुरोहित) IAS** निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

● **(नथमल डिडेल) IAS** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग हेतु मनोनीत लोक सूचना अधिकारी एवं प्रथम अपीलीय अधिकारी

क्र.सं.	लोक सूचना अधिकारी (स्वयं के कार्यालय हेतु)		प्रथम अपीलीय अधिकारी
	माध्यमिक शिक्षा	प्रारम्भिक शिक्षा	
1.	अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन) माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर	-	निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
2.	-	अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन) प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर	निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
3.	प्रधानाचार्य, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (आई.ए.एस.ई.) बीकानेर/अजमेर	-	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
4.	प्रधानाचार्य, राजकीय शारीरिक शिक्षा, महाविद्यालय, जोधपुर	-	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
5.	उप निदेशक, समाज शिक्षा राजस्थान, बीकानेर	-	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
6.	प्रधानाचार्य, सादुल स्पोर्ट्स स्कूल, बीकानेर	-	निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
7.	समस्त संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा संभाग मुख्यालय (माध्यमिक शिक्षा के प्रकरण)	-	निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
8.	-	समस्त संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा संभाग मुख्यालय (प्रारम्भिक शिक्षा के प्रकरण)	निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
9.	-	पंजीयक, शिक्षा विभागीय परीक्षाएँ, बीकानेर	निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
10.	मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, जिला मुख्यालय (माध्यमिक शिक्षा के प्रकरण)	मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, जिला मुख्यालय (प्रारम्भिक शिक्षा के प्रकरण)	संबंधित संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा संभाग मुख्यालय
11.	जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक मुख्यालय	जिला शिक्षा अधिकारी, प्रारम्भिक मुख्यालय	संबंधित मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी जिला मुख्यालय
12.	जिला शिक्षा अधिकारी (विधि-माध्यमिक) जयपुर/जोधपुर	जिला शिक्षा अधिकारी (विधि-प्रारम्भिक) जयपुर/जोधपुर	संबंधित मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी जिला मुख्यालय
13.	-	प्रधानाचार्य, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाईट)	संबंधित मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, जिला मुख्यालय
14.	मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक शिक्षा	मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी	संबंधित मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी,

	के प्रकरण)	(प्रारम्भिक शिक्षा के प्रकरण)	जिला मुख्यालय
15.	प्रधानाचार्य/प्रधानाध्यापक, राउमावि./रामावि. (विशिष्ट विद्यालयों सहित)	पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी (पी.ई.ई.ओ.) (प्रारम्भिक शिक्षा के प्रकरण)	संबंधित मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, (ब्लॉक मुख्यालय)
16.	व्यवस्थापक, राजकीय गुरुनानक भवन संस्थान, जयपुर	–	संबंधित मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, (ब्लॉक मुख्यालय)

● **श्याम सिंह राजपुरोहित, IAS** निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर। ● **नथमल डिडेल, IAS** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

माह : **फरवरी, 2019**

विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम

प्रसारण समय : **दोपहर 12.40 से 1.00 बजे तक**

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
04.02.2019	सोमवार	बीकानेर	10	हिन्दी	परीक्षामाला	
05.02.2019	मंगलवार	उदयपुर	10	संस्कृत	परीक्षामाला	
06.02.2019	बुधवार	जयपुर	8	गणित	परीक्षामाला	
07.02.2019	गुरुवार	जोधपुर	8	सामाजिक विज्ञान	परीक्षामाला	
08.02.2019	शुक्रवार	बीकानेर	8	हिन्दी	परीक्षामाला	
09.02.2019	शनिवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम	बसंत पंचमी/सर ती जयंती (उत्सव)		
11.02.2019 से 13.02.2019 तक तृतीय परख						
14.02.2019	गुरुवार	जयपुर	10	सामाजिक विज्ञान	परीक्षामाला	
15.02.2019	शुक्रवार	जोधपुर	5	हिन्दी	परीक्षामाला	
16.02.2019	शनिवार	बीकानेर	8	विज्ञान	परीक्षामाला	
18.02.2019	सोमवार	उदयपुर	10	गणित	परीक्षामाला	
19.02.2019	मंगलवार	जयपुर	5	अंग्रेजी	परीक्षामाला	
20.02.2019	बुधवार	जोधपुर	8	विज्ञान	16	वायु एवं जल प्रदूषण व नियंत्रण
21.02.2019	गुरुवार	बीकानेर	5	पर्यावरण अध्ययन	परीक्षामाला	
22.02.2019	शुक्रवार	उदयपुर	8	अंग्रेजी	परीक्षामाला	
23.02.2019	शनिवार	जयपुर	8	विज्ञान	13	सूचना प्रौद्योगिकी
25.02.2019	सोमवार	जोधपुर	8	संस्कृत	परीक्षामाला	
26.02.2019	मंगलवार	बीकानेर	5	हिन्दी	15	पन्ना का त्याग
27.02.2019	बुधवार	उदयपुर	5	गणित	परीक्षामाला	
28.02.2019	गुरुवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम	स्वामी दयानंद जयंती/राष्ट्रीय विज्ञान दिवस (उत्सव)		

● **निदेशक,** शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग राजस्थान, अजमेर।

फरवरी-2019

रवि		3	10	17	24
सोम		4	11	18	25
मंगल		5	12	19	26
बुध		6	13	20	27
गुरु		7	14	21	28
शुक्र	1	8	15	22	
शनि	2	9	16	23	

शिविरा पञ्चाङ्ग फरवरी, 2019

फरवरी 2019 ● कार्य दिवस–22, रविवार–04, अवकाश–02, उत्सव–04 ● 01–02 फरवरी– राज्य स्तरीय शैक्षिक सम्मलेन, **04 फरवरी–**समुदाय जागृति दिवस–SmSA। **09 फरवरी–**वसन्त पंचमी/सरस्वती जयन्ती (उत्सव), गार्गी पुरस्कार समारोह, बालिका दिवस आयोजन। **11 से 13 फरवरी–**तृतीय परख का आयोजन, **14 फरवरी–**मातृ–पितृ पूजन दिवस (उत्सव), **फरवरी के तृतीय सप्ताह में–**सत्रान्त की संस्थाप्रधान वाक्पीठ (प्रा.वि./उ.प्रा.वि./मा.वि./उ.मा.वि.) का आयोजन (18 से 23 फरवरी की अवधि में), **28 फरवरी–**स्वामी दयानन्द जयन्ती (उत्सव), राष्ट्रीय विज्ञान दिवस (उत्सव) (RSCERT), **नोट :– 1.** माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोज्य कक्षा 10 एवं 12 की परीक्षा में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों हेतु 14 दिवस का परीक्षा पूर्व तैयारी अवकाश रहेगा।

क्षमता सवंर्धन हेतु

प्रशिक्षण क्यों, किसे व कैसे

❒ डॉ. डी.डी. गौतम

किसी भी संस्थागत कार्मिक की कार्य-कुशलता काबिलियत पर निर्भर करती है, जबकि काबिलियत अनुभव एवं ज्ञान पर निर्भर करती है और ज्ञान व्यक्ति विशेष की अभिरुचि और अभिवृत्ति पर निर्भर करता है। यदि अद्यतन ज्ञान के अभाव में किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व दक्षता व कुशलता में कमी महसूस होती है तो इन कमियों के समाधान की नितान्त आवश्यकता होती है। इसके लिए व्यक्तिगत अथवा सामूहिक अवसर उपलब्ध करवाने की जिम्मेदारी संस्था के प्रबंधकों की होती है। जिससे अधीनस्थ कार्मिकों को अपडेट एवं अपग्रेड करने का प्रयास किया जा सके, जिससे उनकी समझ में अभिवृद्धि के साथ-साथ कौशल विकास को सुनिश्चित किया जा सके।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। किसी भी आयाम/कार्यक्षेत्र में समय के साथ बदलाव की स्थिति उत्पन्न होती है, इन बदलावों को वर्तमान से भविष्य में समावेश की आवश्यकता महसूस होती है। जिससे अद्यतन की स्थिति सुनिश्चित की जा सके। मानव संसाधन विकास के अन्तर्गत उच्च कौशलों के विकास हेतु कमजोर पक्षों के निराकरण के साथ-साथ समाधान की आवश्यकता होती है। जिसमें विशेष उद्देश्यों को समाहित करते हुए क्षमता संवर्धन का कार्य किया जाता है। ज्ञान का संचार एवं आदान-प्रदान का कार्य मौखिक, लिखित, साक्षात्कार, वार्ता, प्रशिक्षण, कार्यशाला अथवा आमुखीकरण के माध्यम से सम्भव है। इनमें प्रशिक्षण, सम्प्रेषण का एक ऐसा प्रभावी माध्यम है, जिसमें एक ही समय एवं स्थान पर सामूहिक तौर पर किसी कौशल, दक्षता एवं ज्ञान में अभिवृद्धि के प्रयास किए जा सकते हैं। इसके द्वारा दक्षताओं में महसूस होने वाली कमियों अथवा कमजोर पक्षों का निराकरण कर अकुशलता से कुशलता में विकसित किया जा सकता हैं। वर्तमान एवं भविष्य की आवश्यकता में सामंजस्य स्थापित करते हुए ज्ञान के साथ-साथ समझ में गुणात्मक वृद्धि की जा सकती है।

प्रशिक्षण का आशय 'प्रशिक्षण एक अधिगम प्रक्रिया है जो कि किसी भी संस्था और उसमें कार्यरत कार्मिकों के कौशल विकास के लिए सेतु का कार्य करती है। इसके द्वारा निरंतर व्यक्तिगत अथवा सामूहिक तौर पर क्षमता संवर्धन का मार्ग प्रशस्त होता है। प्रशिक्षण एक सुव्यवस्थित /योजनानुसार संगठित प्रक्रिया है, जिसमें दक्ष/प्रशिक्षकों के द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को उनकी आवश्यकताओं एवं निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सामूहिक प्रयास किया जाता है। इसके माध्यम से वर्तमान समय में हो रहे नवाचार/बदलाव के अनुरूप सामंजस्य स्थापित करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। जिससे आधारभूत बदलाव के समन्वय का मार्ग प्रशस्त हो सके। सम्प्रेषण के माध्यम से अल्प समय में कौशल विकास एवं नवीन ज्ञान सृजन के साथ-साथ क्षमता संवर्धन का प्रयास किया जा सकता है। प्रशिक्षण के माध्यम से अकुशल, अल्पकुशल और अप्रशिक्षित मानवीय संसाधनों को भविष्य की आवश्यकताओं के मद्देनजर भावी पीढ़ी के रूप में तैयार किया जा सकता है। प्रशिक्षणों के आयोजन पूर्व सम्भागियों की योग्यता, रुचि और जिज्ञासा को संकलित कर एक विजन डॉक्यूमेन्ट तैयार किया जाए, जिसमें विषय आधारित प्रशिक्षण की आवश्यकता, उपयोगिता एवं महता की वरीयता के आधार पर सूची-बद्ध करें। प्रशिक्षण आयोजन में समय, स्थान, सुविधा और संसाधनों की उपलब्धता के आधार पर उद्देश्यों का निर्धारण किया जाए क्योंकि उद्देश्यों की सम्प्राप्ति के आकलन उपरान्त ही आयोजन की सफलता/असफलता का निर्धारण किया जा सकता है। अत: प्रशिक्षण में समेकित रूप में सामान्य उद्देश्य निम्नानुसार निर्धारित किए जा सकते हैं -

प्रशिक्षण के उद्देश्य :-

- ज्ञान में अभिवृद्धि करना।
- कौशल विकास को सुदृढ़ बनाना
- कमजोर पक्षों का निराकरण कर कार्य-कुशलता का विकास।
- नवीन तकनीक एवं विधाओं का उपयोग।
- व्यक्तिगत गुणों का विकास।
- दक्षता अभिवृद्धि।
- स्वावलम्बन विकास।
- कार्यकुशलता विकास।
- सामंजस्य के गुणों का विकास।
- नेतृत्व क्षमता का विकास।
- प्रबंधकीय कार्यकुशलता का विकास।
- प्रशासनिक क्षमताओं/दक्षता का विकास।
- कार्य क्षमता में गुणवत्ता वृद्धि।
- व्यवहारगत परिवर्तन के साथ-साथ सहभागिता कौशल विकास।
- सृजनशीलता एवं मौलिकता का विकास।
- अन्तः-चेतना का विकास।
- दायित्त्व निर्वहन एवं भागीदारी की समझ।
- सकारात्मक बदलाव की समझ का विकास
- समस्याओं के समाधान की समझ का विकास इत्यादि।

प्रशिक्षणों के प्रकार:- किसी भी कार्यक्षेत्र की आवश्यकता, संभावनाओं, समस्या निवारण के आधार पर विषयवस्तु को ध्यान में रखकर निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण आयोजित किए जा सकते है। प्रशिक्षण किसे, कैसे और क्यों का निर्धारण, आवश्यकता पर निर्भर करता है। कई बार सम्भागियों के स्तर अथवा कार्यक्षेत्र के आधार पर भी वर्गीकृत किए जा सकते है।

1. नवनियुक्त प्रशिक्षण।
2. सेवारत प्रशिक्षण।
3. अनौपचारिक प्रशिक्षण।
4. औपचारिक प्रशिक्षण।
5. व्यावसायिक प्रशिक्षण।
6. तकनीकी प्रशिक्षण।
7. गुणवत्ता प्रशिक्षण।
8. बुनियादी प्रशिक्षण।
9. कौशल विकास प्रशिक्षण।
10. प्रबंधकीय प्रशिक्षण।
11. प्रदर्शन विकास प्रशिक्षण।
12. दलीय प्रशिक्षण।
13. संस्थागत प्रशिक्षण।
14. व्यक्तिगत विकास प्रशिक्षण।
15. शिक्षक प्रशिक्षण।

प्रशिक्षण के चरण :-

- आवश्यकता का आकलन।

- उद्देश्यों का निर्धारण।
- पहल करना।
- रणनीति निर्माण एवं क्रियान्वयन।
- प्रतिपुष्टि एवं समीक्षा।
- फॉलोअप

प्रशिक्षण आयोजन की प्रभावशीलता एवं सार्थकता:– प्रशिक्षणों का उद्देश्य क्या हो? क्या सभी संस्थाओं के कार्मिकों को एक ही प्रकार का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए? क्या सभी को एक विषय/कौशल प्रशिक्षण दिया जाए? शायद ऐसा बिल्कुल नही। प्रशिक्षण आयोजनकर्त्ता को पहले यह तय करना होगा कि वर्तमान में तकनीक, विधाओं एवं व्यवस्थाओं में हो रहे बदलावो तक समावेशित किया जाना है। साथ ही व्यक्तिगत कार्यकुशलता में आ रही कठिनाइयों और चुनौतियों की पहिचान कर इनको सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए समाधान हेतु प्रशिक्षण आयोजित किए जाए। यहाँ यह आवश्यक है कि कार्यक्रम में नवीनता, रोचकता एवं सृजनशीलता के पर्याप्त अवसर उपलब्ध करवाए जाए। इसके साथ–साथ प्रशिक्षणार्थियों को स्वयं करके सीखने के पूर्ण अवसर प्रदान किए जाएं। आयोजन को प्रभावशाली बनाने के लिए आवश्यक संसाधन की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए, जिससे उद्देश्य प्राप्ति के साथ–साथ बदलाव के अवसर उपलब्ध हो सके। प्रशिक्षणों में यह नितान्त आवश्यक है कि प्रशिक्षणार्थियों में अपेक्षित बदलाव एवं कौशल विकसित करने के उद्देश्यों के अनुरूप आयोजन की प्रशिक्षण अवधि का निर्धारण किया जाए। यदि आवश्यकता महसूस हो तो दीर्घकालीन अवधि के प्रशिक्षणों का आयोजन करते हुए उनमें निरन्तरता भी रखी जाए।

किसी भी विषय एवं उद्देश्यों हेतु आयोजित प्रशिक्षण के आयोजन से पूर्व संभागियों की योग्यता, पूर्व ज्ञान, क्षमता, दक्षता, आवश्यकता, रुचि और जिज्ञासाओं को संकलित करते हुए प्रशिक्षणार्थियों की प्रोफाइल तैयार की जाए। इसके साथ–साथ संभागियों की समान समझ एवं समान सोच के अनुरूप इनके दलों का निर्धारण करते हुए तदनुरूप प्रभावी रणनीति तैयार की जाए। यदि संभागियों को बार–बार एक ही प्रकार की विषयवस्तु पर आधारित प्रशिक्षणों में सम्मिलित किया जाता है तो इससे आयोजन की उपयोगिता एवं महत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इससे प्रशिक्षणों की रोचकता एंव प्रभावशीलता भी समाप्त होती है। यदि आयोजनकर्त्ता प्रशिक्षण संस्था आयोजन पूर्व यह सुनिश्चित कर ले कि कार्यक्रम में सम्मिलित संभागियों का स्तर एवं उनकी आवश्यकता क्या है? क्या इसमें बदलते क्रम में संभागी भाग ले रहे हैं? अर्थात् प्रशिक्षणों में नवीनता एवं आवश्यकता को समाहित करते हुए आयोजन किया जाना चाहिए, जिससे प्रशिक्षणों की उपयोगिता एवं सार्थकता सिद्ध हो सके। साथ ही तदनुरूप प्रशिक्षण मुहैया करवाएँ तो उद्देश्य की प्रभावी एवं सफल प्राप्ति हो सकती है।

प्रशिक्षण की सार्थकता हेतु आयोजन पूर्व तैयारी:– किसी भी प्रकार के कार्यक्रम के आयोजन पूर्व प्रभावी योजना तैयार कर क्रियान्वयन किया जाना होता है। प्रशिक्षणों के आयोजन पूर्व तैयारी एवं क्रियान्वयन हेतु निम्नांकित आयामों को सम्मिलित किया जाना चाहिए।

- आवश्यकतानुसार विषय वस्तु आधारित मॉड्यूल।
- मॉड्यूल अनुरूप कार्ययोजना एवं समय सारिणी का निर्माण।
- मॉड्यूल सन्दर्भ सामग्री अनुरूप आयोजन अवधि का निर्धारण।
- मॉड्यूल में सरलता से जटिलता वाले सत्रों का व्यवस्थित क्रम।
- लेखकों, सन्दर्भ व्यक्तियों/दक्ष प्रशिक्षकों का चयन।
- प्रशिक्षण दलों में प्रशिक्षणार्थियों की संख्या का निर्धारण।
- प्रशिक्षण एवं विषयवस्तु से संबंधित आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता।
- संभागियों के अनुभव साझा करने एवं प्रदर्शन के अवसरों की उपलब्धता ।
- प्रेरणादायी एवं भयमुक्त वातावरण निर्माण।
- कार्ययोजना एवं क्रियान्वयन का आकलन एवं समीक्षा।
- संभागियों की व्यक्तिगत प्रदर्शन के समान अवसर प्रदान करने के प्रयास।
- दक्ष विषय विशषज्ञों द्वारा परिवीक्षण।
- संभागियों को सक्रिय सहभागिता के पर्याप्त अवसर का प्रावधान।
- आवश्यकतानुसार संदर्भ सामग्री/सत्रों में परिवर्तन के अवसर की उपलब्धता।
- नवीन एवं आधुनिक तकनीकी/आयामों का अधिकाधिक समावेश।
- समूह बनाकर स्वयं के अनुभवों/बेस्ट प्रेक्टिस को साझा करने के अवसर इत्यादि।

प्रशिक्षणों हेतु विषय विशेषज्ञों/ दक्ष प्रशिक्षकों की योग्यताएँ:–दक्ष प्रशिक्षकों/ विषय विशेषज्ञों का चयन, प्रशिक्षण की विषयवस्तु, कार्यशैली व कार्यकुशलता एवं संभागियों के स्तर को ध्यान में रखकर किया जाए। प्रशिक्षणों में यथा सम्भव मॉड्यूल लेखकों को ही दक्ष प्रशिक्षकों के रूप में नियुक्त किया जाए। दक्ष प्रशिक्षकों में निम्नांकित दक्षताओं का समावेश अपेक्षित है।

- आदर्श व्यवहार, प्रभावी व्यक्तित्व, कुशल सम्प्रेषण, कौशल व संवेदनशील।
- स्वयं को अपडेट व अपग्रेड की क्षमता ।
- कार्य योजना निर्माण, क्रियान्वयन व विषयवस्तु की दक्षता में निपुण।
- सकारात्मक सोच का व्यक्तित्व।
- संख्यात्मक एवं गुणात्मक समझ के प्रति अग्रसर।
- तकनीकी उपयोग में पारंगत।
- तर्कशील एवं चिन्तक।
- आवश्यकतानुसार बदलाव के प्रति सकारात्मक।
- सम्प्रेषण कौशल में दक्ष।
- विषयवस्तु के प्रभावी प्रदर्शन में दक्ष।
- स्वयं आकलन की समझ।
- संभागियों को सहभागिता के अवसर उपलब्ध करवाने की समझ।
- आवश्यकतानुसार पूर्व एवं पश्च परख निर्माण में योग्य।
- नियमित समीक्षा एवं तदनुसार बदलाव की समझ।

प्रशिक्षण सन्दर्भ सामग्री निर्माण के घटक:– प्रशिक्षणों हेतु उपयोग में लिए जाने वाले मॉड्यूल एवं सन्दर्भ सामग्री को तैयार करते समय यह ध्यान में रखा जावे कि सम्भागियों में विषय–वस्तु एवं प्रशिक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया जा सके। जिससे प्रशिक्षणों में समस्त संभागियों की सहभागिता

सुनिश्चित की जा सके। इससे प्रशिक्षणों के प्रति उनका रूझान उत्पन्न हो। इसके लिए सामग्री को तैयार करते हुए निम्न आयामों को सम्मिलित किया जाना अपेक्षित है।

- प्रायोगिक गतिविधियों का समेकन।
- अन्तश्चेतना विकास की पर्याप्त समझ।
- सर्जनात्मक एवं मौलिक चिन्तन के अवसर।
- व्यवहारगत परिवर्तन का आकलन एवं प्रतिपुष्टि।
- परिस्थिति एवं परिवेश का समावेश।
- सरल भाषा एवं रोचक प्रसंगों का समावेश।
- प्रशिक्षणार्थियों की कठिनाइयों के समाधान के अवसर।
- डिजीटल तकनीक एवं महत्त्व।
- स्वयं करके सीखने के पर्याप्त अवसर।
- अनुभवों को साझा करने हेतु सहभागिता के अवसर।

प्रशिक्षण के दौरान सावधानियाँ: प्रशिक्षणों के आयोजन को प्रभावी एवं उद्देश्यपूर्ण बनाने के लिए अनेक घटक समाहित है, जिनको सम्मिलित करने से प्रशिक्षणों के आयोजनों की सार्थकता सिद्ध हो सकती है। इसके अन्तर्गत कई महत्त्वपूर्ण विषयों को समाहित किया जाना अति आवश्यक है। जैसे :-

- सभी प्रशिक्षणार्थियों/संभागियों की सहभागिता सुनिश्चित हो।
- सभी को निष्पक्ष रूप से प्रदर्शन के समान अवसर प्राप्त हो।
- विषयवस्तु में लचीलापन जिसमें परिवेश के अनुसार बदलाव की सम्भावना हो।
- विषयवस्तु/मॉड्यूल की भाषा सरल रुचिकर व स्पष्ट हो।
- सत्रों के अन्तर्गत प्रेरणादायी प्रसंगों का अधिकाधिक समावेश।
- आलोचनात्मक टिप्पणियों से बचाव।
- प्रशिक्षण समय विभाग चक्र अनुसार सत्रों का संचालन।
- संभागियों से प्राप्त प्रतिपुष्टि का समावेश एंव निरन्तरता।
- समय, स्थान, मानवीय संसाधनों, आधुनिक तकनीकी उपकरणों की पर्याप्त उपलब्धता।
- प्रशिक्षक एवं प्रशिक्षणार्थियों के मध्य सहज संवाद की स्थिति।
- प्रशिक्षणार्थियों की समस्या समाधान को सर्वोच्च प्राथमिकता।
- आवश्यकतानुसार संभावित बदलाव को प्राथमिकता।
- मनोबल अभिवृद्धि के प्रेरक सत्रों का संचालन।
- प्रशिक्षणार्थियों के समझ एवं स्तर अनुसार संप्रेषण।
- प्रशिक्षण हेतु बदलते क्रम में प्रशिक्षणार्थियों का चयन।
- आगामी कार्ययोजना निर्माण एवं क्रियान्विति।

फॉलोअप:- किसी भी कार्यक्रम की सफलता उसकी निरन्तरता पर निर्भर करती है। प्रशिक्षणों के आयोजन पश्चात् कार्यक्षेत्र में कई कठिनाइयों/चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में प्रशिक्षण प्राप्त प्रशिक्षणार्थियों के क्षमता संवर्धन हेतु एक निश्चित अन्तराल में अल्प अवधि के फॉलोअप कार्यक्रमों का आयोजन का प्रबंधन हो। अत: यथासम्भव आवश्यकताओं एवं कार्यक्षेत्र में आ रही चुनौतियों/कठिनाईयों का संकलन तथा निराकरण के अवसर प्रदान किए जाए, जिससे व्यक्तिगत अथवा सामूहिक कार्यकुशलता में अभिवृद्धि करते हुए सकारात्मक परिणाम एवं उद्देश्यों की प्राप्ति हो सके।

क्षमता संवर्धन हेतु विभिन्न आयाम:- किसी भी विषयवस्तु की समझ प्रभावी व स्थाई बनाने के लिए परम्परागत संसाधनों के अलावा आधुनिक तकनीकी के उपयोग के अवसर उपलब्ध करवाने चाहिए। इसके अन्तर्गत ई-कन्टेन्ट, सन्दर्भ पुस्तिकाए, पत्र-पत्रिकाएँ, वीडियो कान्फ्रेस, वेबपोर्टल, यू ट्यूब, व्हाट्सअप एवं हाईक ग्रुप इत्यादि के माध्यम से क्षमता संवर्धन के निरंतर प्रयास किए जाने चाहिए।

Knowledge is Power
अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी
कार्यालय संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा
भरतपुर संभाग, भरतपुर
मो: 9413671118

प्रेरक प्रसंग

एक जंगल में एक महात्मा रहते थे। वे बड़े अतिथिभक्त थे। नित्यप्रति जो भी पथिक उनकी कुटिया के सामने से गुजरता था, वे उसे रोककर भोजन दिया करते थे और उसकी सेवा भी करते थे। एक दिन पथिक की प्रतीक्षा करते-करते शाम हो गई, परंतु उन्हें कोई अतिथि न मिला। उस दिन नियम टूट जाने की आशंका से वे व्याकुल होने लगे। तभी उन्होंने देखा कि एक सौ साल का वृद्ध व्यक्ति थका-हारा चला आ रहा था। महात्मा जी ने उसे रोककर उसके पैर धुलाए और भोजन परोसा। वह व्यक्ति बिना भगवान को भोग लगाए और धन्यवाद दिए भोजन करने लग गया।

यह देखकर महात्मा जी आश्चर्यचकित हो कर बोले-''आपने भगवान को भोग नहीं लगाया?'' वह व्यक्ति बोला-''मैं भगवान को नहीं मानता।'' महात्मा जी उसकी यह बात सुनकर बड़े क्रुद्ध हुए और उसके सामने से भोजन की थाली खींच ली। बिना यह सोचे कि रात में वह इस जंगल में कहाँ जाएगा, उन्होंने उसे कुटी से बाहर कर दिया। उस रात महात्मा जी को भगवान स्वप्न में दिखाई दिए। वे उनसे बोले-''तुमने उस वृद्ध व्यक्ति के साथ जो व्यवहार किया, उसने तुम्हारे अतिथिसत्कार के सारे पुण्य को क्षीण कर दिया है।'' महात्मा बोले-''प्रभु! मैंने तो उसे इसलिए निकाला; क्योंकि उसने आपका अपमान किया था।'' प्रभु बोले-''ठीक है कि वह मेरा नित्य अपमान करता है, परंतु मैंने तब भी उसे सौ वर्ष तक भोजन कराया है। तुम उसको एक रात न करा सके।'' भगवान की बातें सुनकर महात्मा जी की आँखें खुल गईं और वे बिना किसी भेदभाव के सबकी सेवा करने लगे।

साभार : अखण्ड ज्योति, सितम्बर 2018, पृष्ठ संख्या 30

''जैसे बादल पृथ्वी से जल लेकर फिर पृथ्वी पर बरसा देते हैं, वैसे ही सज्जन भी जिस वस्तु को ग्रहण करते हैं उसका दान भी करते है'' – कालिदास

ज्ञान संकल्प पोर्टल

राजकीय विद्यालयों का बदलता स्वरूप

❒ दिलीप परिहार

राजकीय विद्यालयों को वित्तीय सम्बल प्रदान करना तथा आधारभूत संरचना के सुदृढ़ीकरण हेतु स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा **ज्ञान संकल्प पोर्टल** एवं **मुख्यमंत्री विद्यादान कोष** स्थापित किया गया है। इस पोर्टल की सहायता से भामाशाह/दानदाता/औद्योगिक इकाइयाँ शिक्षा के प्रसार में अपना सहयोग प्रदान कर सकती हैं। इस ऑनलाइन प्लेटफॉर्म की सहायता से सी.एस.आर. कम्पनियों/दानदाताओं व क्राउड फण्डिंग के माध्यम से राजकीय विद्यालयों में आवश्यक संसाधन उपलब्ध हो रहे हैं जिससे शैक्षिक गुणवत्ता में बढ़ोतरी हो रही है। दानदाताओं/सीएसआर कम्पनियों के सहयोग से विद्यालयों की तस्वीर बदलने का कार्य ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से हो रहा है।

इसी क्रम में विभिन्न विद्यालय भवनों का निर्माण किया जा रहा है और विद्यालय को आवश्यक भौतिक सुविधा सम्पन्न बनाया जा रहा है। ऐसे ही कुछ विद्यालयों और विद्यालय भवनो का निर्माण करने वाले भामाशाहों/सी.एस.आर. कम्पनियों का विवरण निम्नानुसार है:-

1. राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय, शिशोदा (राजसमन्द):- राउमावि. शिशोदा, राजसमन्द जिले के खमनौर ब्लाक में स्थित है। मंगल चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा श्री सोहनलाल जी धाकड़ द्वारा अपने पैतृक गाँव शिशोदा के राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय, शिशोदा के नवीन भवन का निर्माण करवाया जा रहा है। इस प्रोजेक्ट की अनुमानित लागत 05 करोड़ 60 लाख रुपये है, यह प्रोजेक्ट दिनांक 24.05.2018 को समसा, कार्यालय जयपुर में राज्य स्तरीय कमेटी द्वारा स्वीकृत किया गया। वर्तमान में विद्यालय भवन का निर्माण कार्य प्रगति पर है विद्यालय भवन निर्माण के पीछे ट्रस्ट की भावना हजारों विद्यार्थियों की सेवा करना एवं अपने माता-पिता को सच्चा उपहार क्या हो सकता है कि उनके पुत्रों द्वारा उनको उपहारस्वरूप विद्यालय का नामकरण श्रीमती कंकुबाई सोहनलाल जी धाकड़

प्रस्तावित कर अत्याधुनिक संसाधनों से परिपूर्ण भवन का उनके हाथों से शिलान्यास दिनांक 22.09.2018 को करवाया गया। आज के समय में यह उदाहरण श्रवण द्वारा माता-पिता को चारों धाम की यात्रा करवाने जैसा सुख देने जैसा प्रतीत होता है। निश्चित रूप से **मंगल चेरिटेबल ट्रस्ट** का यह कार्य शिशोदा ग्राम के सरकारी विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक होगा। राजसमन्द ही नहीं बल्कि पूरे राजस्थान में शिक्षा के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगा।

मंगल चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई के इस कार्य हेतु शिक्षा विभाग उनका हृदय से आभार व्यक्त करता है।

2. श्रीमती गीता देवी बागड़ी राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, नापासर (बीकानेर):- यह बालिका विद्यालय बीकानेर जिले के नापासर ग्राम में स्थित है वर्तमान में विद्यालय में 891 बालिकाओं का नामांकन है। सी.एम. मूँधड़ा मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई के ट्रस्टी श्री के.एल. मूँधड़ा ट्रस्ट द्वारा राजकीय बालिका विद्यालय के लिए भवन की आवश्यकता को देखते हुए आधुनिक सुविधा सम्पन्न नवीन भवन निर्माण का कार्य करवाया जा रहा है। इस नवीन भवन निर्माण प्रोजेक्ट की अनुमानित राशि 03 करोड़ 35 लाख रुपये है। वर्तमान में विद्यालय भवन का निर्माण कार्य प्रगति पर है। नवीन सुविधा सम्पन्न विद्यालय भवन बालिकाओं के लिए वरदान सिद्ध होगा और इससे बालिकाओं को सुविधा युक्त शैक्षिक वातावरण मिलेगा, जो उनके सुनहरे भविष्य के निर्माण में सहायक हो सकेगा। इस कार्य हेतु शिक्षा विभाग उनका हृदय से आभार व्यक्त करता है।

3. इचरजी देवी पटावरी राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय, मोमासर, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर):- यह बालिका विद्यालय बीकानेर जिले के श्रीडूगरगढ़ ब्लॉक के मोमासर ग्राम में स्थित है। वर्तमान में श्री सुमेरमल पटावरी ट्रस्ट के श्री के.एल. जैन द्वारा विद्यालय भवन निर्माण का कार्य करवाया जा रहा है। भवन निर्माण की अनुमानित राशि 01 करोड़ रुपये से अधिक है, भामाशाह श्री के.एल. जैन के अथक प्रयासों से राजकीय आदर्श विद्यालय के नवीन आधुनिक सुविधाओं से सम्पन्न भवन का निर्माण हो रहा है। भौतिक सुविधा सम्पन्न विद्यालय बालिकाओं को सीखने के नए अवसर प्रदान करेगा जिससे अध्ययनरत बालिकाओं के आदर्श भविष्य का निर्माण हो सकेगा। इस कार्य हेतु शिक्षा विभाग उनका हृदय से आभार व्यक्त करता है।

4. राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, टपूकड़ा, तिजारा (अलवर):- अलवर जिले के ब्लॉक तिजारा के राजकीय

मोमासर (बीकानेर)

बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, टपूकड़ा जिसमें वर्तमान में अध्ययनरत बालिकाओं के नामांकन एवं वर्तमान भवन की कमी को देखते हुए होण्डा कार्स इण्डिया लिमिटेड, टपूकड़ा अलवर द्वारा कम्पनी की ओर से किए जाने वाले सामाजिक सरोकार के कार्यों के अन्तर्गत बालिका विद्यालय भवन निर्माण का प्रस्ताव विभाग को भेजा जिसमें अनुमानित लागत 07 करोड़ रुपये से नवीन भवन का निर्माण का कार्य करवाया जाएगा जिसमें अत्याधुनिक संसाधन एवं बालिकाओं के सर्वांगीण विकास हेतु सभी संसाधन उपलब्ध होंगे। इस तरह का उदाहरण राजस्थान के अन्य राजकीय विद्यालयों में कम्पनियों की तरफ से किए जाने वाले कार्यों का एक आदर्श उदाहरण बनेगा। जिससे अन्य कम्पनियों के लिए भी यह प्रेरणा का कार्य करेगा एवं शिक्षा के क्षेत्र में सी.एस.आर. कम्पनियों के द्वारा करवाए जा रहे कार्यों को बढ़ावा मिलेगा।

साथ ही होण्डा कार्स इण्डिया लिमिटेड, टपूकड़ा अलवर को इस कार्य हेतु शिक्षा विभाग उनका हृदय से आभार व्यक्त करता है।

5. राजकीय आदर्श बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, रानोली (सीकर):– सीकर जिले के रानौली निवासी, श्री बनवारी लाल आसट सोनी पुत्र स्व. श्री किशोरी लाल जी आसट, हाल निवास – हैदराबाद द्वारा राजकीय बालिका विद्यालय में कक्षा – कक्षों व लैब की आवश्यकता, विद्यालय की लगातार बढ़ती छात्र संख्या व क्रमोन्नत होने पर संसाधनों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए संस्था प्रधान, शाला स्टाफ एवं SDMC के प्रयासों सें अनुमानित 50 लाख की लागत से निर्माण का कार्य करवाया। इस पुनीत कार्य की प्रेरणा भामाशाह बनवारी लाल जी को उनके पड़दादा श्री, दादाश्री एवं पिताश्री के आदर्शों एवं सही मार्गदर्शन से मिली, जो कि उन्हें बचपन से ही उनके पूर्वजों द्वारा प्रतिदिन प्रात: स्मरण करवाया करते थे–

- धर्म की जड़ हमेशा हरी (Green) रहती है।
- नेकी, ईमानदारी व सच्चाई के घोड़े हमेशा चलते ही रहेंगे, कभी थकेंगे नहीं।
- पेट तो जानवर भी भरते हैं, लेकिन इन्सान वही है जो किसी के दुख–दर्द में काम आए।

इस प्रेरणा के साथ विद्यालय के प्रस्ताव को भामाशाह द्वारा स्वीकार्य करते हुए पिछले 15 सालों से जमा पूँजी की राशि को इस कार्य हेतु दान देने के लिए शिक्षा विभाग उनका हृदय से आभार व्यक्त करता है।

विशेष:– कुछ ऐसे दानदाता भी हैं जो अपनी जन्म भूमि/पैतृक गाँव से दूर रहकर भी वहाँ के राजकीय विद्यालयों में सहयोग कर रहे हैं ऐसे ही कुछ दानदाता/संगठन जिन्होंने जनवरी माह में 2 लाख या 2 लाख से अधिक की राशि पोर्टल के माध्यम से दान दी, साथ ही पिछले वर्ष 2018 में प्रति माह औसत 15 लाख रुपये से अधिक की राशि एवं अब तक 01 करोड़ 79 लाख रुपये ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प **डोनेट टू ए स्कूल** के माध्यम से प्राप्त हुई है। इस विकल्प द्वारा राजस्थान के किसी भी विद्यालय में राशि दान दी जा सकती है जो कि 80 जी के अन्तर्गत आयकर छूट में शामिल है।

क्र. स.	नाम दानदाता	विद्यालय का नाम	सहयोग की राशि
1	गिरधारी लाल जांगिड़	रामावि. गोकुलपुरा पिपराली (सीकर)	5 लाख 60 हजार रुपये
2	शकुन्तला देवी चेरिटेबल ट्रस्ट	राउमावि. माण्डा (पाली)	2 लाख रुपये

विभिन्न सी.एस.आर. कम्पनियों/ भामाशाहों द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे कार्य सराहनीय है। शिक्षा के सर्वांगीण विकास एवं उन्नयन हेतु सी.एस.आर. कम्पनियाँ/ भामाशाह सदैव तत्पर रहते है। इससे आज विद्यालयों का स्वरूप बदल रहा है। राजस्थान के गाँव–गाँव एवं ढाणी–ढाणी तक सुविधा सम्पन्न शैक्षिक वातावरण का निर्माण हो रहा है। यह सब सरकार के साथ साथ भामाशाहों/ सी.एस.आर. कम्पनियों के सहयोग से ही संभव हो पा रहा है। इस लेख की सहायता से हम शिक्षा के क्षेत्र में योगदान देने वाले सभी भामाशाहों/ सी.एस.आर. कम्पनियों और विभिन्न संगठनों को उनके अमूल्य सहयोग की भावना की सराहना करते हैं और शिक्षा के क्षेत्र में योगदान देने वाले दानदाताओं/ कम्पनियों/संगठनों का विभाग की तरफ से हृदयपूर्वक आभार व्यक्त करते हैं। दानदाताओं/कम्पनियों/संगठनों से हम यह अपेक्षा करते हैं कि भविष्य में भी इसी प्रकार का सहयोग जारी रखेंगे साथ ही अपने जैसे अन्य भामाशाहों/कम्पनियों को ज्ञान संकल्प पोर्टल पर दान करने की सरलता और विशेषताओं से अवगत कराते हुए अधिकाधिक लोगों को पोर्टल से जोड़ेंगे, ताकि शिक्षा के क्षेत्र में सभी के सहयोग से राजस्थान के शैक्षिक वातावरण को बेहतर बनाया जा सके। प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा के सभी विद्यालयों को एक साथ सरकार द्वारा आवश्यक सुविधाएँ जुटा पाना कठिन है, लेकिन इसमें समाज एवं सभी का साथ एवं सहयोग से निश्चित रूप से राजस्थान शिक्षा का परिदृश्य को बदलने में कामयाब होंगे।

पानी को बर्फ में, बदलने में वक्त लगता है!!
ढले हुए सूरज को, निकलने में वक्त लगता है!!
थोड़ा धीरज रख, थोड़ा और जोर लगाता रह!!
किस्मत के जंग लगे दरवाजे को, खुलने में वक्त लगता है!!
बिखेरेगी फिर वही चमक, तेरे वजूद से तू महसूस करना!!
टूटे हुए मन को, संवरने में थोड़ा वक्त लगता है!!
जो तूने कहा, कर दिखाएगा रख यकीन!!
गरजे जब बादल, तो बरसने में वक्त लगता है!!

सहायक निदेशक (CSR)
मा.शि. राजस्थान, बीकानेर
मो. 9001739911

परीक्षा विशेष

दसवीं बोर्ड परीक्षा की तैयारी 'दीक्षा ऐप' के साथ

❒ नीरज काण्डपाल

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर की माध्यमिक परीक्षा आगामी 14 मार्च से शुरू हो रही है। विज्ञान तथा गणित विषय परीक्षा परिणाम की दृष्टि से सदैव विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के लिए चुनौतीपूर्ण रहते हैं। राजस्थान में विज्ञान व गणित की नवीं तथा दसवीं की पाठ्यपुस्तकों में QRCode के माध्यम से विषय संबंधित उच्च गुणवत्ता की सहायक पाठ्य सामग्री दीक्षा पोर्टल तथा दीक्षा ऐप पर उपलब्ध हैं जो कि विषय के दक्ष शिक्षकों के द्वारा निर्मित है। दीक्षा पोर्टल तथा दीक्षा ऐप के माध्यम से विज्ञान तथा गणित विषय की तैयारी करने से विद्यार्थी दसवीं बोर्ड परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त कर सकते है।

शिविरा के दिसम्बर, 2018 के अंक में प्रकाशित आलेख में दीक्षा पोर्टल के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की गई थी। मानव संसाधन विकास मंत्रालय (MHRD), भारत सरकार द्वारा राजस्थान सहित पाँच राज्यों में दीक्षा पोर्टल (https://diksha.gov.in) प्रारम्भ किया गया है। इस पोर्टल के द्वारा विद्यार्थियों के लिए विषय से संबंधित सहायक पाठ्य सामग्री तथा पाठ्य पुस्तकें ऑनलाइन उपलब्ध है। संस्थाप्रधानों तथा शिक्षकों के लिए विद्यालय प्रबन्धन उन्नयन व व्यावसायिक उन्नयन हेतु पाठ्यक्रम दीक्षा पोर्टल पर उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। दीक्षा पोर्टल पर शिक्षकों के लिए विषय से संबंधित सहायक सामग्री के निर्माण की सुविधा भी उपलब्ध हैं। राजस्थान के लिए दीक्षा पोर्टल DIKSHA RISE Portal (https://diksha.gov.in/rj) के द्वारा उपलब्ध है।

दीक्षा पोर्टल पर उपलब्ध समस्त Teaching and Learning contents QR Code के माध्यम से दीक्षा ऐप पर उपलब्ध है। सत्र 2018-19 हेतु कक्षा 9 व 10 की विज्ञान व गणित की पाठ्य पुस्तकों में QR Code के माध्यम से विषय के कठिन बिन्दुओं से संबंधित सहायक सामग्री उपलब्ध है। यह पाठ्य सामग्री बोर्ड परीक्षा की तैयारी में अत्यन्त उपयोगी है। कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा हेतु विज्ञान व गणित से सम्बंधित Teaching and Learning contents QR Code के माध्यम से दीक्षा ऐप (DIKSHA APP) के द्वारा प्राप्त की जा सकती है।

दीक्षा ऐप (DIKSHA APP) के उपयोग का तरीका

GOOGLE PLAY के द्वारा दीक्षा ऐप को डाउनलोड किया जा सकता है। डाउनलोड करने के पश्चात् सर्वप्रथम भाषा का चयन किया जाता है। इसके बाद विद्यार्थी या शिक्षक रोल का चयन कर राज्य का चयन किया जाता है। इसके पश्चात पुन: भाषा का चयन कर कक्षा का चयन किया जाता है। चयनित कक्षा से सम्बधित सभी विषय दिखाई देने लगते हैं। इसके पश्चात दीक्षा ऐप पर वांछित विषय का चयन करने पर विषय से सम्बधित विभिन्न Teaching and Learning contents दिखाई देने लगते हैं। इच्छित Teaching and Learning contents को डाउनलोड कर उपयोग किया जा सकता है। एक बार डाउनलोड करने के बाद Teaching and Learning contents को ऑफलाइन भी उपयोग किया जाना सभंव है।

QR Code के माध्यम से Teaching and Learning contents प्राप्त करना

दीक्षा ऐप में ऊपर दायीं तरफ QR Code के माध्यम सें विषय से सम्बधित सहायक पाठ्य सामग्री/कन्टेट प्राप्त करने की सुविधा उपलब्ध है। कक्षा 9 व 10 की विज्ञान व गणित की पाठ्य पुस्तको में दिए गए QR Code को स्कैन कर सीधे ही सहायक पाठ्य सामग्री प्राप्त की जा सकती है। दीक्षा ऐप में ऊपर दायीं तरफ फिल्टर ऑप्शन उपलब्ध है इसका उपयोग कर बोर्ड, कक्षा, विषय, माध्यम व विषय सामग्री के प्रकार के आधार पर आवश्यक पाठ्य सामग्री को खोजा जा सकता है।

कक्षा 10 की विज्ञान तथा गणित से संबंधित सहायक पाठ्य सामग्री दीक्षा पोर्टल व दीक्षा ऐप पर उपलब्ध है। जिसे फिल्टर अथवा QR Code को स्कैन कर प्राप्त किया जा सकता हैं। दीक्षा पोर्टल पर उपलब्ध पाठ्य सामग्री पाठ्य पुस्तकों के कठिन बिन्दुओं को ध्यान में रखकर निर्मित की गई है तथा सम्बधित दक्ष विषयाध्यापकों के द्वारा निर्मित है। इन कन्टेट्स में पाठ्यपुस्तकों में दिए गए कठिन बिन्दुओं को सरल तरीके से समझाया गया है। जिससे विद्यार्थी विषय वस्तु का अवबोध सरलता से कर सकता है तथा विद्यार्थी के लिए जरूरी भी है। इनका उपयोग कर विद्यार्थी कठिन बिन्दुओं को आसानी से समझ सकते हैं तथा 10 वीं बोर्ड परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त कर सकते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों को दीक्षा ऐप को डाउनलोड करने व सहायक पाठ्य सामग्री/कन्टेट के उपयोग में मदद कर गुणवत्तापूर्ण परीक्षा परिणाम प्राप्त करने में अपना योगदान दे सकते हैं।

व्याख्याता
शालादर्पण अनुभाग, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय
राजस्थान, बीकानेर।
मो. 8107847570

परीक्षा विशेष

विज्ञान : प्रायोगिक परीक्षा की उपादेयता

❒ राजेन्द्र कुमार स्वामी

'ज्ञान की प्राप्ति केवल प्रेक्षण और प्रयोग करने से ही होती है' –फ्रांसिस बेकन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति –1986 के अनुसार कक्षा 10 तक सामान्य शिक्षा के उपरान्त ही व्यावसायिक क्षेत्र का चयन करने के उद्देश्य से वैकल्पिक विषयों का चयन कर अध्ययन किया जाता है। तकनीकी क्षेत्र के लिए विज्ञान संकाय का चयन किया जाता है। विज्ञान की शिक्षा ग्रहण करना अपने आप में विशेष ज्ञान की अनुभूति कराती है। इस विशेष ज्ञान को अर्जित करने के लिए विज्ञान विषय के पाठ्यक्रम को दो भागों में विभक्त किया गया है (1) सैद्धान्तिक (2) प्रायोगिक। अत: विज्ञान विषय में सैद्धान्तिक परीक्षा के साथ-साथ प्रायोगिक परीक्षा भी आयोजित की जाती है। लेकिन वर्तमान समय में प्रायोगिक परीक्षा के आयोजन की प्रकृति व अंकभार आदि के कारण इनकी उपादेयता पर प्रश्नचिह्न लगने लगे हैं। इस संबंध में मुख्यत: दो विचार हैं।

प्रथम:–ज्ञान के लिए प्रयोग-प्रयोग विज्ञान विषय का आधार है। बिना प्रयोग विज्ञान विषय की सार्थकता नहीं है। प्रयोग करने से ही छात्र में आत्मविश्वास, वस्तुनिष्ठता, सत्यता जैसे गुणों का विकास संभव हो पाता है। विद्यार्थी जीवन में किए जाने वाले छोटे-छोटे प्रयोगों द्वारा नए प्रयोगों/अन्वेषणों की आधारशिला रखी जाती है। प्रयोगों द्वारा विद्यार्थी ने क्या सीखा यह जानने के लिए प्रायोगिक परीक्षाओं का होना अतिआवश्यक है। प्रायोगिक परीक्षाओं के अंकभार होने के कारण छात्र व शिक्षक इसमें अधिक रुचि लेते हैं।

दूसरा:– प्रायोगिक परीक्षाएँ केवल अंक प्राप्त करने का साधन हैं-वर्तमान परिदृश्य में इन परीक्षाओं को संदेह की दृष्टि से देखा जाने लगा है। कुछ लोगों का मानना है कि केवल रिकॉर्ड बनाना, कुछ निर्धारित गतिविधियाँ करना, मौखिक प्रश्न (Viva Voice) जैसी

औपचारिकताओं की पूर्ति कर इससे अंक प्राप्त किए जाते हैं। इसमें प्रयोगों का मूल उद्देश्य गौण हो गया है। बहुत से गैर शासकीय व शासकीय विद्यालयों में सुसज्जित प्रयोगशालाओं के अभाव के बावजूद विद्यार्थियों को प्रायोगिक परीक्षाओं में अच्छे अंक दिए जाना इस तथ्य की पुष्टि करते है। उच्च अंकों के प्राप्त करने की दौड़ में अर्थ का भी खुला प्रयोग समाचार पत्रों के माध्यम से पढ़ने व सुनने को मिलता है।

निष्कर्षत: प्रायोगिक परीक्षाओं में कुछ खामियाँ होने के बाद भी इनके महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा अंक भार कम करके जिले का ही बाह्य परीक्षक नियुक्त करने जैसे महत्त्वपूर्ण कदम उठाए है जो सराहनीय कदम है। इसमें और अधिक सुधार करने हेतु निम्नानुसार परिवर्तन करने की आवश्यता है।

1. बाह्य परीक्षक राजकीय विद्यालयों के केवल वे शिक्षक हो जो वर्तमान में उस विषय का अध्यापन करवा रहे हैं।
2. विज्ञान प्रयोगशाला विहीन विद्यालयों में प्रयोगशालाएँ बनवाई जाए तथा विज्ञान प्रयोगशाला सामग्री व उपकरणों हेतु प्रतिवर्ष पर्याप्त बजट आंवटित हो।
3. गैर शासकीय विद्यालयों के प्रायोगिक परीक्षाओं के केन्द्र परिवर्तित किए जाने चाहिए।
4. इन परीक्षाओं में विज्ञान की समझ रखने वाले निरीक्षणकर्त्ता लगाए जाए ताकि निरीक्षण अधिक प्रभावी हो सके।
5. बाह्य परीक्षक पूर्ण निष्ठा, निष्पक्षता व सदाचरण के साथ इन परीक्षाओं को आयोजित करवाए ताकि इनकी उपादेयता बनी रहे।

नोडल अधिकारी एवं प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि. खण्डेला (सीकर) राज
मो:7073695195

बाल-मनोविज्ञान

मोबाइल और इंटरनेट में उलझा बचपन

❐ दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश'

शिवम् कक्षा-सात का छात्र है। स्कूल से आने के बाद वह कम्प्यूटर से चिपक जाता है। मम्मी लाख कहे, वह नहीं सुनता। छुट्टी वाले दिन उसे दोस्तों के साथ गपशप करने या बाहर खेलने जाने की फुर्सत नहीं होती है। वह इंटरनेट पर व्यस्त रहना पसन्द करता है। उसकी मम्मी रजनी गुप्ता पहले खुश होती थी कि बेटा नई टेक्नॉलाजी सीख रहा है, किन्तु अब यही बात उसे परेशान करने लगी है।

रजनी देख रही है कि कम्प्यूटर और मोबाइल में गेम खेलने के बाद शिवम् किसी से बात करना तक पसन्द नहीं करता। पहले रिश्तेदारों के आने पर उनसे मिलता-जुलता था। उनके बच्चों के साथ हँसता-खेलता था, लेकिन अब ऐसी कोशिश करता है कि कमरे से बाहर न निकलना पड़े। घर में भी सबसे नपा-तुला व्यवहार रखता है। कुछ कहने पर चिढ़कर जवाब देता है। रजनी जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में मनोविज्ञान की प्रवक्ता है इसलिए बाल मनोविज्ञान के रग-रग की जानकार रजनी को बेटे के व्यवहार का यह बदला हुआ प्रारूप खतरे की घण्टी प्रतीत होने लगा है।

यह कोई विरला नमूना नहीं है। शहरी और कस्बाई क्षेत्र के मध्यम वर्ग में हर तीसरे-चौथे घर में शिवम् जैसे बच्चे हैं या फिर तैयार हो रहे हैं। यह किशोर वय के आरम्भिक दौर के बच्चे हैं। इनमें अपने आयु वर्ग के बच्चों वाली स्वाभाविक चपलता और चंचलता नहीं होती। यह कम बोलते हैं। खान-पान और खेलकूद के प्रति इनमें रुचि, उमंग और उत्कंठा कम दिखती है। कम्प्यूटर पर बैठकर इंटरनेट सर्फिंग या फिर मोबाइल फोन का बटन टीपते हुए खाली समय बिताना इन्हें पसन्द होता है। यह जब कम्प्यूटर पर बैठते हैं या मोबाइल पर गेम खेलते हैं तो उन्हें आसपास की सुध नहीं रहती।

कई अभिभावक अपने 12 से 15 वय वर्ग के बच्चों में सयानों जैसी गम्भीरता की शिकायत करते हैं। बाजार जाने पर कई बार बच्चे माँ-बाप के साथ बाहर घूमने या खरीददारी करने के

बजाय कार में बैठकर लैपटाप और मोबाइल पर व्यस्त रहना पसन्द करते हैं। घर में कुछ पूछने पर ये अत्यन्त संक्षिप्त जवाब देते हैं।

पहली नजर में इलेक्ट्रानिक गैजेट्स में खोये बच्चे भले ही एडवांस या इंटेलेक्चुअल लगते हों, किन्तु बाल मनोविज्ञान के पंडितों ने इस स्थिति को 'इंटरनेट एडिक्शन' का नाम दिया है। यह बच्चों को आत्मकेन्द्रित बनाता है। इंटरनेट एडिक्ट बच्चे अपनी बात किसी के साथ शेयर नहीं करते। अपने आप में गुम रहते हैं। प्रकृति और परिवेश से इनका वास्ता कम रहता है।

उपर्युक्त जो स्थितियाँ हैं, बच्चों के स्वाभाविक विकास को गलत ढंग से प्रभावित करने वाली है। बच्चों के समग्र विकास में संवाद की प्रमुख भूमिका होती है। संवाद बच्चे और बच्चे के बीच, बच्चे और अभिभावक के बीच या फिर बच्चे और अध्यापक के बीच हो सकता है। आपसी संवाद बच्चों को उसके परिवेश, सामाजिक-सांस्कृतिक परम्पराओं, संस्कारों, जीवन-मूल्य, आचार-विचार और समाज स्वीकृत व्यवहार के प्रति सतत् चेतनशील बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता आया है। संवेदना और सौन्दर्यबोध के विकास में संवादहीनता सबसे बड़ी बाधा है। संवादहीनता की स्थिति बच्चे को जड़ बनाती है।

इंटरनेट एडिक्शन के लिए अभिभावक भी बराबर के जिम्मेदार हैं। वे बच्चों के बाहर जाने या मित्रों के साथ गपशप पर रोक-टोक तो करते हैं, मगर स्वयं उन्हें समय नहीं दे पाते। इस स्थिति में बच्चा कम्प्यूटर या मोबाइल से समय काटता है। धीरे-धीरे यह निर्भरता लत में बदल जाती है। अब अगर अभिभावक उसे इंटरनेट के इस्तेमाल से मना करते हैं तो झूठ बोलकर साइबर कैफे का सहारा लेने से भी नहीं चूकता।

इंटरनेट सर्फिंग से बच्चों का संज्ञानात्मक पक्ष खूब सम्पन्न होता है, किन्तु इससे एकाकीपन और संवादहीनता की स्थिति भी पनपती है। इससे बच्चों का भावात्मक पक्ष कमजोर पड़ जाता है। यह बच्चे लक्ष्य के प्रति संघर्ष की क्षमता, सहकार, पारस्परिक सहभागिता, सामुदायिक चेतना जैसे गुणों के अभाव में अच्छे या जिम्मेदार नागरिक शायद ही बन पाएँ।

अगर आपके बच्चों में इस प्रकार के लक्षण दिख रहे हैं, तो सावधान हो जाएँ। यह सजग होने का समय है। बच्चों से संवाद स्थापित करके उसके मन में झाँकें और देखें कि वह कौन सी स्थिति थी, जब वह इंटरनेट और मोबाइल जैसे गैजेट्स की दुनिया में खोने लगा। हो सकता है, इसके लिए मनोचिकित्सक की सेवाएँ लेनी पड़ जाए, किन्तु इस बिन्दु को पकड़ने के बाद ही आप बच्चों को एडिक्शन यानी लत से मुक्त कर पाएँगे।

आज की तारीख में अभिभावकों का यह दायित्व बनता है कि वे बच्चों से सघन संवाद बनाए रखें। उन्हें बाहर खेलने-कूदने और समवयस्क मित्रों के बीच समय काटने से रोके नहीं! साथ ही उन्हें इंटरनेट वगैरह के इस्तेमाल के लिए भी प्रेरित करें। इस प्रकार इलेक्ट्रानिक गैजेट्स बच्चों के लिए लत के निमित्त नहीं, बल्कि व्यक्तित्व विकास के संसाधन बन जाएँगे।

पोस्ट आफिस-जासापारा,
गोसाईंगंज-228119, सुलतानपुर (उ.प्र.)
मो: 09450143544

रपट

सादुल स्पोर्ट्स स्कूल

पाई ओलंपिक का भव्य आगाज

❒ सत्यपाल गोदारा

सादुल स्पोर्ट्स स्कूल बीकानेर में पाई ओलम्पिक का भव्य शुभारंभ माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्रीमान् नथमल जी डिडेल व बीकानेर जिला कलक्टर श्रीमान् कुमार पाल गौतम के आतिथ्य में हुआ। मुख्य अतिथि निदेशक महोदय व जिला कलक्टर महोदय का खिलाड़ियों ने मार्चपास्ट कर स्वागत किया। राजस्थान पत्रिका के शैक्षणिक अनुभाग पत्रिका इन एजुकेशन द्वारा सादुल स्पोर्ट्स स्कूल के सानिध्य में पाई ओलंपिक बीकानेर के सबसे बड़े आयोजन में 7000 से अधिक विद्यार्थियों और खेल प्रेमियों की उपस्थिति रही। खेलों के इस महाकुंभ के पहले दिन कबड्डी, तीरंदाजी, फुटबॉल, बास्केटबॉल, बैडमिंटन, ताइक्वांडो और खो-खो के मुकाबलों में खिलाड़ियों ने प्रतिभा का प्रदर्शन किया। मैदान का हर कौना खिलाड़ियों के जोश से लबरेज था। हर कोई उत्साहित था। माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्रीमान् नथमल डिडेल, जिला कलक्टर श्रीमान् कुमार पाल गौतम ने टारगेट पर तीर छोड़कर खेलो का आगाज किया। इस अवसर पर निदेशक महोदय व जिला कलक्टर महोदय के साथ सादुल स्पोर्ट्स स्कूल के उपप्रधानाचार्य अजयपाल सिंह शेखावत,व्याख्याता गिरधारी गोदारा, आर.एस. वी ग्रुप के सीएमडी. सुभाष स्वामी, सिंथेसिस इंस्टीट्यूट के निदेशक जेठमल सुथार, राजस्थान पत्रिका बीकानेर के शाखा प्रभारी संजय कक्कड़ ने अतिथियों के साथ गुब्बारे आसमान में छोड़कर पाई ओलंपिक का शुभारंभ किया। रंगीन गुब्बारे आसमान में उड़े तो हजारों खिलाड़ियों की तालियों से मैदान गुंजायमान हो गया। उप प्रधानाचार्य अजयपाल सिंह शेखावत व्याख्याता गिरधारी गोदारा, पत्रिका शाखा के प्रभारी संजय कक्कड़ ने सभी का स्वागत करते हुए पाई ओलंपिक के महत्त्व को परिभाषित किया। कार्यक्रम का संचालन रविन्द्र हर्ष ने किया।

प्रतियोगिता के पहले दिन तीरंदाजी में अंडर 14 में रामपाल चौधरी, अंडर 18 में मनीष विश्नोई और छात्रा वर्ग में सिमरन तंवर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। यह खेल 16 जनवरी से 20 जनवरी तक आयोजित हुए। खेलों में प्रवेश निःशुल्क रखा गया।

पाई ओलंपिक में शामिल शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के 115 स्कूलों के लगभग 7000 विद्यार्थियों ने ध्वज व बैनर लेकर मार्च पास्ट किया। मार्च पास्ट में विद्यार्थी जैसे-जैसे आगे बढ़ रहे थे, पूरे मैदान में नए जोश का संचार हो रहा था। बैंड की मधुर स्वर लहरियाँ भी नए वातावरण का निर्माण कर रही थी।

खेलों की शुरूआत के बाद निदेशक महोदय सादुल स्पोर्ट्स स्कूल के निरीक्षण हेतु पहुँचे। उन्होंने स्कूल में संचालित विभिन्न खेलों के बारे में जानकारी ली। इसके बाद विद्यालय में शैक्षणिक गतिविधियों का निरीक्षण किया। निरीक्षण के बाद निदेशक महोदय ने संपूर्ण स्टाफ की मिटिंग ली। आवासीय गृहपति धन्ने सिंह ने विद्यालय में संचालित पाँच छात्रावासों की स्थिति व जरूरतों से अवगत करवाया। कबड्डी कोच बोदूराम रेवाड़ ने विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा खेलों में किए गए प्रदर्शन से अवगत करवाया। निदेशक महोदय प्रदर्शन से संतुष्ट हुए व खेल प्रशिक्षकों को धन्यवाद दिया। टेबल टेनिस कोच गोपाल सिंह व हैंडबॉल कोच आत्माराम भादू ने खिलाड़ियों की गणवेश व खेल सुविधाओं की राशि में बढ़ोतरी करवाने हेतु निवेदन किया। उपप्रधानाचार्य अजयपाल सिंह शेखावत ने गवर्निंग काउंसिल में लिए गए निर्णयों की पालना हेतु निदेशक महोदय से निवेदन किया व विद्यार्थयों हेतु मैस भत्ते की राशि बढ़ाने के लिए विशेष आग्रह किया।

इसके बाद व्याख्याता गिरधारी गोदारा ने निदेशक महोदय को संपूर्ण स्टाफ का परिचय करवाया व अजयपाल सिंह शेखावत की अगुवाई में विद्यालय कैम्पस का निरीक्षण करवाया। उपप्रधानाचार्य सहित संपूर्ण स्टाफ को निदेशक महोदय के निरीक्षण व संवाद से ऊर्जा मिली व नए जोश का संचार हुआ।

शैक्षणिक गतिविधियों का परिचय व्याख्याता सत्यपाल गोदारा ने करवाया। उन्होंने बताया कि पिछले सत्र में विज्ञान वर्ग में खेलों के साथ-साथ दो छात्रों-साहिल चौधरी व शैलेन्द्र शेखावत ने 96.80 प्रतिशत अंक प्राप्त कर जिला मैरिट में स्थान प्राप्त किया। उन्होंने निदेशक महोदय को यह भी बताया कि साहिल चौधरी का बिना किसी कोचिंग के प्रथम प्रयास में IIT मुंबई में प्रवेश हुआ। निदेशक महोदय ने इस पर विद्यालय प्राचार्य व स्टाफ को बधाई दी।

सादुल स्पोर्ट्स स्कूल का संचालन राज्य सरकार व गवर्निंग काउंसिल द्वारा होता है। गवर्निंग काउंसिल के अध्यक्ष माध्यमिक शिक्षा निदेशक होते हैं, इस नाते निदेशक महोदय का सादुल स्पोर्ट्स स्कूल से विशेष लगाव है। स्टाफ मीटिंग में उन्होंने कहा कि यह राजस्थान का एकमात्र स्पोर्ट्स स्कूल है जो सीधे निदेशक महोदय के नियंत्रण में आता है। यहाँ का प्रधानाचार्य उप निदेशक स्तर का होता है। इस विद्यालय में 5 छात्रावास संचालित हैं। इन सब विशेषताओं व उपलब्ध संपूर्ण सुविधाओं को देखते हुए खेलों में इस स्कूल के खिलाड़ियों से राजस्थान का नाम रोशन करने की आशा करता हूँ।

पाई ओलंपिक का दूसरा-दूसरे दिन पत्रिका इन एज्युकेशन और हिन्दुस्तान जिंक की संयुक्त मेजबानी में आयोजित दूसरे दिन रोमांचक मुकाबले देखने को मिले। जहाँ विभिन्न

खेलों में सेमीफाइनल और फाइनल मुकाबले भी हुए, वहीं कुछ मुकाबले अगले दिन आरंभ हुए। बीकानेर में आयोजित होने वाला यह पहला आयोजन है, जब एक ही बैनर तले इतने खिलाड़ियों की भागीदारी रही। एथलेटिक्स (ट्रेक एण्ड फील्ड) के सभी खेल सादुल स्पोर्ट्स स्कूल में सुबह 10 बजे से आयोजित हुए। इसके अलावा कूडो 19-20 जनवरी को महिला मंडल स्कूल, स्केटिंग 20 जनवरी को सादुलगंज स्केटिंग रिंग, कराटे विद्या विहार स्कूल, रस्साकस्सी व कुश्ती सादुल स्पोर्ट्स स्कूल में आयोजित हुए।

पाई ओलंपिक में खिलाड़ियों ने अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए पदकों पर निशाने लगाए। सादुल स्पोर्ट्स स्कूल में खेले गए मुकाबलों में फुटबॉल और एथलेटिक्स में रोचक प्रदर्शन देखने को मिला। वहीं शतरंज और कूडो में भी खिलाड़ियों का मनोबल ऊँचा था। महिला मंडल स्कूल में कूडो प्रतियोगिता शुरू हुई जिसमें बड़ी संख्या में खिलाड़ियों की भागीदारी रही वहीं बॉस्केटबॉल में भी खिलाड़ियों ने अपना दमखम दिखाया। इसके अलावा एथलेटिक्स के रिले मुकाबले भी शानदार रहे।

सादुलगंज स्थित स्केटिंग रिंग में हुए मुकाबलों में विभिन्न वर्गो में नन्हे और युवा स्केटरों ने अपने संतुलन और गति का प्रदर्शन किया। पाई ओलंपिक में वॉलीबाल छात्र 19 वर्ष में सादूल स्पोर्ट्स स्कूल के छात्र विजेता व राआउमावि. बरसिंहसर उपविजेता रहे। छात्रा 19 वर्ष में राआउमावि. बरसिंहसर विजेता व महारानी स्कूल उपविजेता रही। छात्र 14 वर्ष में सादुल स्पोर्ट्स स्कूल विजेता व राआउमावि. बरसिंहसर उपविजेता रहे।

बैडमिंटन अंडर 14 वर्ष छात्र वर्ग में कार्तिक गौड़ (दिल्ली पब्लिक स्कूल), अंडर 14 वर्ष छात्रा में पूनम स्वामी (आर्मी पब्लिक स्कूल), अंडर 18 वर्ष छात्र में मोहित भाटी (सादुल स्कूल), अंडर 18 वर्ष छात्रा में जिया राव (एसएस कॉन्वेंट स्कूल) प्रथम रहे।

फुटबाल अंडर 14 में बीबीएस स्कूल विजेता, अंडर 19 में एमएम स्कूल विजेता रही।

बॉस्केटबॉल अंडर 14 छात्रा में सोफिया स्कूल विजेता, अंडर 14 छात्र में बाफना स्कूल विजेता, अंडर 19 छात्रा में सोफिया स्कूल विजेता, अंडर 19 छात्र में बाफना स्कूल विजेता, अंडर 19 छात्रा में सोफिया स्कूल विजेता, अंडर 19 छात्र में बाफना स्कूल विजेता रहे।

खो-खो में छात्रा वर्ग जूनियर वर्ग में व्यास कॉलोनी विजेता, छात्रा वर्ग सीनियर वर्ग में महारानी किशोरी देवी विजेता रही। छात्र जूनियर वर्ग में सादुल स्पोर्ट्स स्कूल विजेता, छात्र वर्ग सीनियर वर्ग में सादुल स्पोर्ट्स स्कूल विजेता रही। पाई ओलंपिक के विजेताओं को स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक समारोहपूर्वक प्रदान किए जाएँगे। पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन बाद में किया जायेगा।

व्याख्याता, सादुल स्पोर्ट्स स्कूल, बीकानेर
मो.: 9413076050

रपट

एल्युमिनी मीट

गुरु वंदन एवं पूर्व विद्यार्थी संगम

❐ लक्ष्मी चौधरी

सादुल स्पोर्ट्स स्कूल बीकानेर के साथी सखा एल्युमिनी मीट में गुरु वंदन एवं पूर्व विद्यार्थी संगम में मिलकर अभिभूत हुए। विद्यालय के सहपाठी, बचपन के साथी एक साथ उत्साह से एकत्रित हुए। सखा एक दूसरे के गले मिले और पुरानी बातों तथा यादों को ताजा किया। अपने गुरुजनों के चरण स्पर्श किए। गुरु वंदन एवं पूर्व विद्यार्थी संगम का यह अनूठा आयोजन 6 जनवरी 2019 को सादुल स्पोर्ट्स स्कूल में आयोजित किया गया। बीकानेर जिले के राजकीय विद्यालयों में यह अनूठा आयोजन विद्यालय परिवार एवं उप प्रधानाचार्य अजयपाल सिंह शेखावत की पहल व संपूर्ण विद्यालय परिवार के सहयोग से आयोजित किया गया। सखा सम्मलेन में बीकानेर के अलावा, दिल्ली, मुंबई, चंडीगढ़, हैदराबाद, जयपुर, जोधपुर सहित दूरदराज से भी अनेक पूर्व विद्यार्थी आए। अपने सखाओं और गुरुजनों से मिलकर गद्गद हुए। स्कूल के सहपाठी सखाओं में कोई प्रशासनिक सेवा में है तो कोई डॉक्टर, कोई सैन्य अधिकारी है तो कई उद्योगपति बन गए। समारोह

में पधारे पूर्व विद्यार्थी अनिल आहुजा ने कहा कि ऐसा आयोजन बीकानेर में अपने आप में पहला आयोजन है। उन्होंने समारोह की भव्यता, व्यवस्था आदि के लिए विद्यालय परिवार व आयोजन समिति को साधुवाद दिया।

शिक्षा में सहयोगः- समारोह के मुख्य अतिथि शाला के पूर्व शिक्षक गिरिश कुमार दुबे ने पूर्व विद्यार्थियों से आग्रह किया कि विद्यालय आपका अपना है। आपने किन अभावों में शिक्षा ग्रहण की यह आपको पता है। वर्तमान में आपका कोई भाई-बहिन सुविधाओं के अभाव में शिक्षा से वंचित न रहे, इसके लिए आपको भरपूर योगदान देना चाहिए।

इनका किया सम्मान- समारोह में आए पूर्व विद्यार्थियों ने गुरुजनों गिरिश जी दुबे, नवीन शर्मा, घनश्याम सिंह, जे.के. तोमर, श्रवण पालीवाल का पूर्व विद्यार्थियों व विद्यालय परिवार ने सम्मान किया। इस आयोजन में व्याख्याता गिरधारी गोदारा, रतन लाल छलाण, व.अ. अनिल कुमार, संदीप सिंघल सहित समस्त विद्यालय स्टाफ का विशेष योगदान रहा।

व.अ., सादुल स्पोर्ट्स स्कूल, बीकानेर (राज.)
मोः 7976476728

रपट

स्मार्ट क्लासेज

आधुनिक तकनीक से विद्यार्थी पाठ्यक्रम का अच्छे व प्रभावी ढंग से अध्ययन कर सकेंगे- हरीश चौधरी

❒ रामदयाल केसवर

बाड़मेर के सुदूर ग्रामीण क्षेत्र में स्थित राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय खोखसर, पं. सं. गिड़ा में 13 जनवरी 2019 को स्थानीय विधायक व राजस्व मंत्री राजस्थान सरकार श्री हरीश चौधरी ने क्षेत्र की प्रत्येक पंचायत समिति के एक-एक राजकीय विद्यालय को मॉडल विद्यालय के रूप में विकसीत करने की कड़ी में 'स्मार्ट क्लासेज' का शुभारम्भ किया। श्री हरीश चौधरी ने राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के अध्ययन को सुगम बनाने के लिए प्रोजेक्ट के तोर पर खोखसर के राजकीय विद्यालय का चयन किया। चौधरी ने विकासशील सोच को फलीभूत करने की प्रथम पहल के रूप में 'स्मार्ट क्लासेज' की स्थापना करवाई, साथ ही गरीमामय समारोह में 'स्मार्ट क्लासेज' का शुभारम्भ किया। इस दौरान

राजस्व मंत्री श्री चौधरी ने कहा कि 'स्मार्ट क्लासेज' में एलईडी स्क्रीन के माध्यम से आधुनिक तकनीक द्वारा राजकीय विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थी पाठ्यक्रम का अध्ययन अच्छे व प्रभावी ढंग से कर सकेंगे। श्री चौधरी ने कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों से 'स्मार्ट क्लासेज' के सम्बन्ध में संवाद किया और उनसे मन लगाकर पढ़ने की बात कही। गिड़ा पंचायत समिति के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में उभरते विद्यालय राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खोखसर का गत चार वर्षों से शत प्रतिशत परीक्षा परिणाम के साथ ही सम्पूर्ण जिले में उत्कृष्ट परीक्षा परीणाम रहा है। वर्तमान में इस विद्यालय में लगभग 850 का नामांकन होते हुए भी अनुशासन देखते ही बनता है इस पर श्री चौधरी ने विद्यालय स्टाफ की भी प्रशंसा की। इस अवसर पर गिड़ा प्रधान श्री लक्ष्मण राम डेलू, ग्राम पंचायत सरपंच श्री राधेश्याम, CBEO गिड़ा श्री लच्छाराम, RP श्री जुंजाराम, प्रधानाचार्य रामदयाल केसवर, व.अ. डूंगरराम, व.शा.शि. राधेश्याम मीना, स्मार्ट क्लासेज प्रभारी गोपाल कृष्ण डेलू, विद्यालय स्टाफ व समस्त छात्र-छात्राएँ उपस्थित थे।

प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि खोखसर, पं.स. गिडा (बाड़मेर)
मो. 9413522821

राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल

'एकलव्य' एवं 'मीरा' पुरस्कार शिक्षा राज्यमंत्री के कर कमलों से

❒ मोहन गुप्ता 'मितवा'

शिक्षा संकुल के प्रशासनिक भवन में राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल द्वारा माह अक्टूबर-नवम्बर में आयोजित कक्षा 10 एवं कक्षा 12 के परीक्षा परिणामों की घोषणा माननीय शिक्षा राज्यमंत्री राजस्थान सरकार श्री गोविन्द सिंह डोटासरा द्वारा कम्प्यूटर पर क्लिक करके की गई। परीक्षा परिणाम जारी करने के साथ तीन घोषणाएँ माननीय शिक्षा राज्य मंत्री ने की-**1.** एकलव्य व मीरा पुरस्कार की राशि राज्य स्तर पर 21 हजार रुपये तथा जिला स्तर पर 11 हजार रुपये करने **2.** राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल के सभी संदर्भ केंद्रों को 5.50 करोड़ की लागत से कम्प्यूटरीकृत किए जाने **3.** विभागीय अधिकारियों के प्रयासों से स्टेट ओपन के शुल्क को आयकर मुक्त किए जाने के कारण प्राप्त राशि का उपयोग विद्यार्थियों के हित में किए जाने की घोषणा शिक्षा राज्यमंत्री ने अपने

उद्बोधन में की।

समारोह में परीक्षा परिणामों के कक्षा 12 में टॉपर रहे छात्र तरूण शर्मा पुत्र श्री राजकुमार भीलवाड़ा तथा कक्षा 10 के टॉपर छात्र भागीरथ सिंह पुत्र श्री अभय सिंह ग्राम झांझू श्री डूंगरगढ़ बीकानेर को एकलव्य पुरस्कार तथा मीरा पुरस्कार कक्षा 12 में टॉपर रही छात्रा याशिका औदिच्य पुत्री श्री धर्मेन्द्र औदिच्य कांकरोली राजसमन्द तथा कक्षा 10 में टॉपर रही छात्रा सावित्री लोढ़ा पुत्री श्री वीरमचन्द मनोहरथाना झालावाड़ को सम्मानित कर प्रदान किया गया।

समारोह में शिक्षा सचिव श्री भास्कर ए. सावंत, माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्री नथमल डिडेल, स्टेट ओपन स्कूल के निदेशक श्री कमलेश आबूसरिया द्वारा शिक्षा राज्यमंत्री को पुष्पगुच्छ एवं साफा पहनाकर स्वागत किया। इससे पूर्व डोटासरा ने शिक्षा संकुल परिसर में स्थापित डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्ण की आदम कद प्रतिमा पर पुष्प समर्पित कर उन्हें नमन् किया। समारोह के अंत में स्टेट ओपन स्कूल के सचिव श्री सुभाषचन्द शर्मा ने परीक्षा परिणामों में हुए सुधार का उल्लेख करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। समारोह में विभाग के कई अधिकारीगण एवं अभिभावकगण उपस्थित रहे।

मितवा स्टूडियो
नाहरगढ़ रोड, चांदपोल बाजार, जयपुर
मो. 9414265628

रपट

60वां रोवर मूट व 46वीं रेंजर मीट

❒ नीरज जैन

राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड के तत्त्वावधान में जयपुर के जगतपुरा स्थित स्काउट गाइड प्रशिक्षण केन्द्र पर 26 से 30 दिसम्बर, 2018 तक 60वां रोवर मूट व 46वीं रेंजर मीट का आयोजन किया गया, जिसमें प्रदेश के सभी जिलों से लगभग 600 रोवर रेंजर ने सहभागिता की।

मूट/मीट का शुभारम्भ बुधवार 26 दिसम्बर को स्काउट गाइड संगठन के स्टेट कमिश्नर (स्काउट) एवं प्रमुख शासन सचिव स्कूल शिक्षा भास्कर ए. सावंत के मुख्य आतिथ्य, स्टेट कमिश्नर (हैडक्वाटर्स) एवं प्रबन्ध निदेशक राजस्थान रोडवेज सांवरमल वर्मा की अध्यक्षता एवं स्टेट कमिश्नर (रोवर) व कुलपति महात्मा ज्योतिराव फूले विश्वविद्यालय तथा स्टेट कमिश्नर (कार्यक्रम व क्रियान्वयन) आर. एस. शेखावत के विशिष्ट आतिथ्य में समारोह पूर्वक आयोजित हुआ।

इस अवसर पर श्री सावंत, श्री वर्मा, श्री पंवार एवं अन्य पदाधिकारियों ने भी संभागी रोवर रेंजर को प्रेरणास्पद संबोधन से प्रेरित किया और शिक्षा और स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान केन्द्रित करने का आह्वान किया तथा संभागियों से रूबरू हुए। रोवर रेंजर ने सांस्कृतिक प्रस्तुति प्रदान कर सभी का मन मोह लिया।

शिविरावधि में 17 गतिविधियाँ व प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। पोस्टर बनाना,

निबन्ध लेखन, साहसिक गतिविधि, बिना बर्तन खाना बनाना, सामान्य ज्ञान आदि में संभागियों ने अपनी योग्यता का परिचय दिया। शिविर के दौरान शिविरार्थियों को सड़क सुरक्षा, उत्तम स्वास्थ्य, नशा उन्मूलन आदि विषयों पर वक्ताओं द्वारा मोटीवेशनल स्पीच भी दी गई।

साहस का दिया परिचय : मूट/मीट का दूसरा दिन साहसिक गतिविधियों के नाम रहा। विभिन्न प्रकार की साहसिक गतिविधियों ने रोमांच और साहस के अनूठे संगम को साकार किया। इन साहसिक प्रतियोगिताओं में रोवर्स रेंजर्स ने सहभागिता कर अपनी निडरता, आत्मविश्वास एवं विषम परिस्थितियों से लड़ने के जज्बे का परिचय दिया।

साहसिक गतिविधि प्रतियोगिताओं के अन्तर्गत कमाण्डो ब्रिज, मंकी ब्रिज, कमाण्डो क्रॉसिंग, बेलेन्सिंग, मंकी क्रोलिंग, टायर वाल, टायर चिमनी, टायर टनल, टचिंग पाइन्ट, गन शूटिंग, तीरंदाजी, ब्लाइण्ड ट्रेल, रस्से पर चढ़ना, टेण्ट लगाना, पेड़ पर चढ़ना, बिना बर्तन के खाना बनाना आदि रोचक एवं साहसिकता से भरी गतिविधियों में प्रतिभागी रोवर रेंजर्स ने पूरे उत्साह के साथ सहभागिता की।

'स्वस्थ युवा-सुरक्षित भविष्य' रैली : शिविर के तीसरे दिन स्वस्थ युवा-सुरक्षित भविष्य विषयक चेतना रैली निकाली गई, जिसे प्रदेश के माननीय चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. रघु शर्मा ने हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। रैली पश्चात रोवर रेंजर ने झालाना पेंथर सफारी का आनन्द उठाया एवं वन्यजीव संरक्षण के बारे में क्षेत्रीय वन अधिकारी ज्ञानेश्वर राठी द्वारा विस्तृत जानकारी प्राप्त की।

समापन समारोह : 29 दिसम्बर को अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस उमेश मिश्रा के मुख्य आतिथ्य में मूट-मीट का समापन समारोह पूर्वक आयोजित किया गया।

बी-15, कृष्ण नगर-।,
लालकोठी विधानसभा रोड, जयपुर-302015
मो. 800397220

विद्यार्थियों की दस दिवसीय अन्तर राज्य शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा 2018-19

❒ विजय सारस्वत

माननीय मुख्यमंत्री महोदय राजस्थान सरकार की महती योजना के अन्तर्गत माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर के निर्देशानुसार व कार्यालय संयुक्त निदेशक (स्कूल शिक्षा) उदयपुर के तत्त्वावधाव में राज्य के प्रतिभावान विद्यार्थियों की दस दिवसीय अन्तर राज्य शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा 2018-19 दिनांक-28.12.2018 से 06.01.2019 तक आयोजित की गई।

दिनांक 28 दिसम्बर 2018 को यात्रा दल के समस्त सदस्यों का तिलक लगाकर गुड़-धनिया खिलाकर उदयपुर मंडल के संयुक्त निदेशक श्री भरत कुमार मेहता व बीकानेर माध्यमिक शिक्षा निदेशालय से संयुक्त निदेशक (कार्मिक) श्रीमती नूतनबाला कपिला ने हरी झंडी दिखाकर, यात्रा प्रभारी उप जिला शिक्षा अधिकारी विजय सारस्वत के नेतृत्व में बसों की रवानगी की। यात्रा दल के विद्यार्थियों, मण्डल दल प्रभारियों ने उत्साह, उमंग

के साथ गगनभेदी देशभक्ति नारों से आसमान गुंजायमान कर दिया। यात्रा दल अम्बाजी, अक्षरधाम, स्टेच्यू ऑफ यूनिटी, दमन दीव, सापुतारा, नासिक, त्रयम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग, शिरडी, शनि शिंगणापुर, औरंगाबाद, घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग, अजंता एलोरा, त्रिपुरा सुन्दरी बांसवाड़ा, जयसमन्द, आदि स्थानों की यात्रा कर 5 जनवरी को उदयपुर पहुँचा। 6 जनवरी को उदयपुर दर्शन में ''महाराणा प्रताप गौरव केन्द्र'' फतहसागर, सहेलियों की बाड़ी आदि की सैर करा कर यात्रा को विराम देते हुए यात्रा दल को खीर-पूड़ी खिलाकर विदाई दी।

इन दस दिनों की यशस्वी शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा के दौरान दल ने विभिन्न प्राकृतिक स्थानों, ऐतिहासिक स्मारकों, धार्मिक स्थलों, राष्ट्रीय स्मारकों, पुरातात्विक महत्त्व के स्थानों, नदी, समुद्र, तालाब, पहाड़ों, झीलों आदि की यात्रा की जिससे उनमें पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ अन्य ज्ञान की भी वृद्धि हुई।

बालकों को यात्रा वृतान्त लिखने हेतु दो पेन, एक डायरी, एक फोटोयुक्त परिचय पत्र व एक बैग दिया गया। समस्त उच्चाधिकारियों की शुभकामनाओं व ईश्वरीय कृपा से यात्रा मंगलमयी रही।

उप जिला शिक्षा अधिकारी
एवं यात्रा प्रभारी
कार्यालय संयुक्त निदेशक (स्कूल शिक्षा)
उदयपुर मंडल, उदयपुर

पुस्तक समीक्षा

छोटा-छोटा सुख-दुख

सम्पादक : बुलाकी शर्मा **प्रकाशक** : कलासन प्रकाशन, बीकानेर **संस्करण** : प्रथम, 2018
पृष्ठ : 80 **मूल्य** : ₹100

विचार, व्यवहार व जीवन में परिवर्तनों को अंगीकार करते हुए राजस्थानी कहानी को आधुनिक बनाने का श्रेय यशस्वी कहानीकार सांवर दइया को दिया जाता है। मध्यमवर्गीय समाज की आकांक्षाओं व अवरोधों का यथार्थपरक एवं प्रामाणिक अंकन सांवर जी की कहानियों की अप्रतिम विशेषता है। इस यथार्थ का समुचित खुलासा भी यहाँ जरूरी है। यथार्थ के बहाने समाज का सड़ा-गला पक्ष उघाड़ना उनका ध्येय नहीं था वरन्, इस खतरनाक संसार की असल छवि का प्रकाशन सोद्देश्य था। अपनी चर्चित कृति 'अेक दुनिया म्हारी' पर केन्द्रीय साहित्य अकादमी की ओर से वर्ष 1985 का पुरस्कार अर्पण किए जाने पर नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल में उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा था-'म्हें आ भी मानूं कै जीवण रो गळयोड़ो सूगलो पख ढक्यां-लुकायां गंदगी कम कोनी हुवै। बा तो मांय री मांय बध्यां जावै। पण दिखाया सूं बीं रो इलाज हो सकै। बीं रै लागू पड़ती दवा सोधी जा सकै। आ आस ही म्हारो आधार है।' कहना न होगा, इसी आशा में सांवर जी ने महज 44 वर्ष की अल्प आयु में मायड़ भाषा राजस्थानी को चार कहानी संग्रह 'असवाड़ै-पसवाड़ै', 'धरती कद तांई घूमैली', 'अेक दुनिया म्हारी' और 'अेक ई जिल्द' में अर्पित किए। उनके असामयिक निधन के पश्चात उनके सुपुत्र कवि-आलोचक डॉ. नीरज दइया ने 'पोथी जिसी पोथी' शीर्षक से एक कहानी-संग्रह प्रकाशित किया जिसमें संवाद शैली की कहानियाँ संकलित की गई। हाल ही में कलासन प्रकाशन ने वरिष्ठ साहित्यकार बुलाकी शर्मा के संपादन में 'छोटा-छोटा सुख-दुख' शीर्षक से कथा संग्रह प्रकाशित किया है जिसमें अब तक के संकलनों में अप्रकाशित सांवर जी की दस कहानियों को शामिल किया गया है। किसी साहित्यकार के न रहने पर उसका अनछपा साहित्य बहुत मुश्किल से पाठकों तक पहुँच पाता है। राजस्थानी के मामले में तो ऐसे दर्जनों नाम गिनाए जा सकते हैं जिनके मरणोपरांत उनका अप्रकाशित साहित्य धरा का धरा रह गया है। ऐसे में यह सुखद है कि 1992 में इस दुनिया से विदा होने वाले सांवर जी की अलग-अलग विधाओं में कुल 6 किताबें विगत ढाई दशकों में प्रकाशित होकर पाठकों तक पहुँची है। निश्चय ही इन कृतियों से हमारे समय के अत्यंत महत्त्वपूर्ण रचनाकार सांवर दइया के अवदान का सही मूल्यांकन संभव हो पाएगा। इसमें दो राय नहीं है कि यह महनीय कार्य डॉ. नीरज दइया के संकल्पों का सुफल है।

सांवर जी को राजस्थानी कहानी में कथ्य व शिल्प के स्तर प्रयोगों के लिए जाना जाता है। आलोच्य कृति छोटा-छोटा सुख-दुख के संपादक बुलाकी शर्मा का मानना है कि 'राजस्थानी कहाणी नै दूजी भारतीय भासावां री आधुनिक कहाणियाँ रै बरोबर बैठावण में सांवर दइया आगीवाण रैया। कहाणी में जिया शिल्पगत प्रयोग वां करया विश्वविख्यात ई किणी दूजै कहाणीकार करया हुवैला। वां री कहाणियां नुवां भावबोध सू ओतप्रोत मनोविश्लेषणात्मक है। आमजन री मनगत नै टटोळता थकां वां जीवण रो जथारथ आपरी कहाणियां में राख्यो है।' यह बात दीगर है कि राजस्थानी कहानी को नए तेवर से सम्पन्न करने वाले सांवर जी का समग्र मूल्यांकन अभी होना है। कहीं कुछ लिखा भी गया है तो वहाँ पूर्वाग्रह हावी रहे। सांवर जी ही क्यों, समालोचना के अभाव में नानूराम संस्कर्ता, नृसिंह राजपुरोहित, अन्नाराम सुदामा, करणीदान बारहठ, मूलचंद प्राणेश आदि लेखकों का भी उल्लेखनीय काम करने के बावजूद समुचित मूल्यांकन नहीं हो पाया।

किताब में संकलित कहानियों में रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने के लिए जूझते आम आदमी के जीवन के कई आयामों का अंकन हुआ है। परिवेश का सूक्ष्म व विश्वसनीय अंकन सांवर दइया की कहानियों को निराली पहिचान देती है। बदलते जीवन मूल्य, संबंधों का दोगलापन, बेरोजगारी, अकेलेपन और आर्थिक तंगी से जन्मी उदासी-हताशा की मुखर अभिव्यक्ति इन कहानियों में हुई है। शीर्षक कहानी 'छोटा-छोटा सुख-दुख' में शिक्षकों के जीवन के संघर्षों का अंकन हुआ है। 'उजास' का श्रीलाल अपनी अडिगता से सेठ सुगणचन्द के दबाव के बावजूद जीवणराम के बेटे का साल खराब करने की बात स्वीकार नहीं करता। यह दृढ़ता श्रीलाल ही नहीं, सम्पूर्ण शिक्षक समाज के चेहरे के उजास को बढ़ा देती है। 'ऊजली दीठ' में भी अध्यापकी जीवन के अनुभवों का अंकन हुआ है। 'अठै ई ठीक है' का बनवारी निम्न मध्यमवर्गीय तबके के प्रतिनिधि के रूप में कहानी में आया है जो अपनी सीमित आय के चलते कम सुविधाओं वाले किराए के घर में ही काम चलाना ठीक समझता है। 'चोट' के कथानायक को एक मित्र की चोरी की प्रकृति से कलेजे में लगी चोट काँटे की तरह चुभती महसूस होती है। 'अठै सुख कठै' किताब की ही नहीं, सांवर जी की यादगार कहानियों में से एक है। इस कहानी में गरीबी से उपजी बेबसी और संघर्षों के बीच सुख की तलाश का कलात्मक अंकन हुआ है। इस कहानी का नायक कर्ज के बोझ से मुक्त होने के लिए अपना घर भाड़े देकर खुद परिवार सहित कम किराए के साधारण से घर में रहना शुरू करता है। मगर उस घर में न तो दिन में आराम मिलता है न रात में चैन। पत्नी की बड़बड़ाहट को सहन करते हुए सुख के लिए तरसते व्यक्ति की पीड़ा घनीभूत होकर पाठक को भीतर तक संवेदित कर देती है। 'धंवर छंटगी' सामाजिक भावभूमि की कहानी है। सम्पत्ति के लिए भाइयों में रार नई बात नहीं मगर जगन्नाथ माँ व जीसा को अपने हिस्से में मानकर अपने साथ लेकर रवाना हो जाता है। 'जगन्नाथ बठै सूं उठग्यो। माँ अर जीसा नै सागै चालण खातर पूछ्यो। माँ बोली- अै दोनूं तो तीसूं दिन तळै म्हांनै। अष्टपौर हिस्सै-पांती री बात करै। म्है थारै सागै चालसां..।' हाड़ी, उळझ्यूड़ी मौत, उजास भरी डांडी भी पठनीय कहानियाँ है। जिनमें अनचाही परिस्थितियों के खिलाफ आम आदमी की जूझ का अंकन हुआ है। कहानीकार की मनोविश्लेषण की क्षमता दाद देने योग्य है। नामी नाटककार व आलोचक डॉ. अर्जुनदेव चारण के शब्दों में 'सांवर स्यात राजस्थानी रो पैलो कहाणीकार है जको कहाणी में मिनख रै मन नै समझण सारूं आफळै। सांवर दइया कहाणियाँ में काम सूं कम बोलै। वरनण रै खिलाफ ऊभो

औ रचनाकार राजस्थानी कहाणी नै अेक नूंवी सैली अर अेक नूंवी जमीन दी।''

'छोटा-छोटा सुख-दुख' के रूप में सांवर दइया की कहानियों का प्रकाशन कहानी विधा के पाठकों के लिए तो सुखकारी है ही, आलोचना विधा के लिए भी एक महत्त्वपूर्ण कथाकार के सम्यक मूल्यांकन का अवसर है। इस जरूरी व सार्थक किताब के संकलन-प्रकाशन के लिए संपादक-प्रकाशक साधुवाद के अधिकारी है।

समीक्षक : **डॉ. मदन गोपाल लढ़ा**
प्रधानाचार्य
144, लढ़ा निवास, महाजन, बीकानेर-334604
मो: 9982502969

माँ

लेखक : डॉ. शिवराज भारतीय **प्रकाशक :** कलासन प्रकाशन, बीकानेर **संस्करण : 2018 पृष्ठ :** 40 **मूल्य :** ₹ 50

बच्चा क्या है? उसके हास-परिहास क्या है? उसके सुख-दुःख क्या है? उसके रंजन के तौर तरीके क्या हैं? इन सबको जाने बिना बच्चों के लिए लिखना 'लिखना' नहीं होगा, मात्र मसि-कागद का अपव्ययन होगा। बच्चे को जानने की प्रक्रिया अन्य मामलों से कुछ अलग व हटकर है। इसमें हमें अतीत की ओर लौटना पड़ता है। हमें अपने कई पूर्वग्रहों, मान्यताओं, धारणाओं, मुखौटों आदि के चोलों से मुक्त होना पड़ता है। पीछे लौटना और अपने बनाए साँचों से बाहर निकलना दोनों ही कार्य दुष्कर हैं। जो इन दुष्कर कार्यों को साध लेता है, वह सच्चा बाल साहित्यकार बन पाता है।

बाल साहित्य लेखन की चुनौती को इस तथ्य से भली भाँति जाना जा सकता है कि बाल साहित्य विश्व के प्रौढ़ साहित्य के मुकाबले बहुत कम लिखा गया है। गुणवत्ता के लिहाज से तो यह न्यूनता है। कहना न होगा कि शिवराज 'भारतीय' ने न केवल विपुल मात्रा में बाल साहित्य लिखा है, बल्कि उसकी श्रेष्ठता और समृद्धता का भी अभिवर्द्धन किया है। इन्होंने हिंदी और राजस्थानी दोनों भाषाओं में लिखा है।

उनकी यह प्रकाशित पुस्तक 'माँ' इस अभिवर्द्धन कार्य में एक बहुत महत्त्वपूर्ण कड़ी है। इस हिन्दी कविता संग्रह में कुल बीस कविताओं का संकलन है। ये सभी कविताएँ बच्चों के मन को गुदगुदाने वाली, उन्हें कल्पना लोक में ले जाने वाली, पशु-पक्षियों की दुनिया से रू-ब-रू करवाने वाली तथा मानवीय मनोभावों को निमज्जित करने वाली हैं। संग्रह की कविता 'झूला झूले गुड़िया रानी' झूलों के प्रति बच्चों के प्रेम को दर्शाने वाली है। इसमें कवि बच्चों की सहज मस्ती को उभारते हैं, साथ ही उनमें कुटुम्ब भाव का बीजारोपण भी करते हैं-

सीता गीता गीता आएँ
साथ में भैया को लाएँ।
आओ सब मिल झूले खाएँ,
सावन के संग मौज मनाएँ।

इसी तरह बच्चों को तरह-तरह के छाते बहुत भाते हैं। उन्हें छोटे-छोटे रंग-बिरंगे छाते विशेषकर अच्छे लगते हैं। इसी बालवृत्ति को उजागर करने वाले यह कविता 'मेरा छाता' संग्रह की उल्लेखनीय रचना है। कविता का एक अंश देखिए-

इन्दर राजा जब-जब आते,
काले-काले बादल लाते।
रिम-झिम, रिम-झिम कभी झमाझम,
बारिश खूब-खूब बरसाते।
मेरा साथी मेरा छाता,
तनिक न बारिस से घबराता।
इन्द्रधनुष सा यह तन जाता,
रंग-बिरंगा मेरा छाता।

कविता में आए बादल के रंग कवि को बहुत लुभाते हैं। चूँकि कवि मूल में एक किसान है और बादल का महत्त्व किसान से ज्यादा कौन जान सकता है? इसलिए इस संग्रह में इसी बादल प्रसंग को लेकर 'लाल-सुनहरे बादल प्यारे, 'काश! अगर मैं', 'बरसे पानी', 'बागों में इठलाएँ तितली' जैसी रचनाएँ शामिल की गई है। बच्चों का पशु-पक्षी प्रेम जग जाहिर है। कवि भारतीय को इस प्रेम की गहन अनुभूति है। तभी तो वे बहुत सहज और सरल भाषा में बंदर, तितली, चिड़िया, गाय आदि को लेकर कविताएँ रचते हैं। वे इन कविताओं का मानवीकरण करते हुए पशु-पक्षियों को मानव के रूप में अभिव्यंजित करते हैं:-

फुनगी-फुनगी झूला झूले,
ओस कणों में नहाए तितली।
कभी फूल पर कभी डाल पर,
बैठ-बैठ इठलाए तितली।

बच्चे आगे चलकर कल्पना लोक से निकलते हैं और राष्ट्र निर्माण में भागीदार बनते हैं। कवि बच्चों के इस भविष्य पक्ष को भली भाँति जानते हैं। तभी तो वे गाहे बगाहे तिरंगा, देश हमारा, मुझको सैनिक बनना है, माँ आगे बढ़ते जाएँ जैसी कविताएँ लिखने को उत्प्रेरित होते हैं। अनवरत चलते रहने का भान जगाने वाली कविता 'आगे बढ़ते जाएं' का एक अंश देखिए-

जो भी बैठा उसने खोया,
चलने वाला बढ़ता।
बाधाओं को चीर वीर,
जीवन में आगे बढ़ता।
चलते रहने का निश्चय,
करने वाले चलते हैं।
ऊबड़-खाबड़ राह देखकर,
कभी नहीं डरते हैं।

यहाँ गौरतलब है कि कवि मात्र उपदेश प्रधान कविताएँ ही नहीं रचते, बल्कि बच्चों को गुदगुदाने वाली/हँसी ठिठोली वाली कविताएँ भी रचाते हैं। गप्पोड़ी लाल, कक्कू काका, बन्दर बाबू आदि कविताओं की रचनाओं में यही भाव अभिव्यंजित हुआ है- 'गप्पोड़ी लाल' का एक अंश देखिए-

एक मियां गप्पोड़ी लाल,
मोटे मोटे उनके गाल।
गप्प मारते मोटी-मोटी,
कर देते थे मालामाल।

बाल कविताएँ बच्चों को गुदगुदाने के साथ कल्पनालोक में ले जाने का काम भी करती है। इन कविताओं का कवि जानता है कि बच्चों का बचपन बहुत कल्पनाशील होता है। वह शायद नित नई दुनियां में विचरण करना चाहता है। इसीलिए तो कवि 'काश! अगर मैं' जैसी कविता लिखने को प्रेरित होता है। इस कविता में बच्चा एक साथ बंदर, चंदा, बादल, भंवरा न जाने कितने-कितने रूप धर लेता है और इस रूप में वह तरह-तरह के करतब करने को उद्यत रहता है-

काश! अगर मैं बंदर होता,
इक डाली से दूजी डाली,
और दूजी से तीजी डाली,
उछल-कूद मस्ती में खोता,
काश! अगर मैं बंदर होता!

आखिर में शीर्षक कविता माँ बहुत पठनीय व हृदयग्राही बनी है, जो बच्चों को घर-परिवार और रिश्ते-नाते की महता को प्रकट करने वाली है। साथ ही कविता के मुखपृष्ठ पर माँ-बेटे का चित्र अंकित भी खासा आकर्षक बना है। इसके लिए चित्रकार भरत वर्णवाल, सिरसा बधाई के पात्र हैं। सुंदर छपाई और संयोजन के लिए कलासन प्रकाशन, बीकानेर को भी इस बधाई से अछूता रखना ठीक नहीं होगा। एतदर्थ उनको भी बधाई। आशा है कवि का बाल साहित्य नित नई बुलंदियों को छुएगा उसमें समय के साथ और अधिक पैनापन आएगा। इसी के साथ.... इति शुभम।

समीक्षक : **डॉ. मूलचंद बोहरा**
उपनिदेशक आरटीई,
प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर
मो: 9414031502

मेह बाबो आयो

लेखक : ओम प्रकाश तँवर **प्रकाशक** : सनातन प्रकाशन, जयपुर-302015 **संस्करण**: 2019 **पृष्ठ** : 80 **मूल्य** : ₹ 160

कहानी और लोक का गहरा सम्बन्ध होता है। दरअसल कहानी लोक की कोख से ही पैदा होती है, इसलिए इसमें लोक की धड़कनों को अनुभव किया जा सकता है। यही बात जब बाल कहानी के संदर्भ में की जाए, तो नाता कुछ और भी गहरा हो जाता है। आज इंटरनेट क्रान्ति के दौर में जहाँ आमजन का सम्बन्ध पुस्तकों से टूटता जा रहा है, वहाँ यह तथ्य और भी विचारणीय है। यद्यपि आज हम साहित्य से दूर तो जरूर होते जा रहे हैं, तथापि पुस्तकों और लिखित साहित्य के महत्त्व को आज भी नकारा नहीं जा सकता। यही वह एक माध्यम है जो हमें लोक के साथ दृढ़ता से बाँधे रख सकता है। इस दृष्टि से श्री ओमप्रकाश तँवर की राजस्थानी बाल कहानियों की नवीन पुस्तक 'मेह बाबो आयो' का आना अपने आपमें एक महत्त्वपूर्ण योगदान है।

श्री ओमप्रकाश तँवर की इस कहानी की पुस्तक में बालमन से जुड़ी कुल सोलह कहानियों को संजोया गया है। संकलन की प्रथम कहानी 'मेह बाबो आयो' जिसके नाम पर पुस्तक का नामकरण किया गया है, एक सशक्त कहानी है। इस कहानी में लेखक ने बाल-सुलभ जिज्ञासाओं को आधार बनाते हुए वर्षा की कमी और देरी से समाज में होने वाली बेचैनी को उजागर किया है। भाव यह प्रकट किया गया है कि हम वर्षा का स्वागत करना तो सीखें, भगवान हमारी मदद करने के लिए सदैव तत्पर हैं। आज की भागदौड़ भरी जिन्दगी में जहाँ व्यक्ति अति व्यस्त होकर अपनी संवेदनाओं को गंवा रहा है, वहीं बच्चों का बचपन भी पीछे छूटता सा नजर आ रहा है। 'काळी कुत्ती ब्याई है' कहानी में इसी संवेदना को गली में सद्य प्रसूता एक कुतिया के लिए किए गए प्रयासों के माध्यम से जगाने का काम किया गया है। हम वर्षा तो समय पर चाहते हैं परन्तु इसके लिए वृक्षों का होना भी उतना ही जरूरी है, इस बात को भुलाते जा रहे हैं। लेखक श्री तँवर ने इन्दरदेव री 'सीख' कहानी के माध्यम से हमें बरसात चाहिए तो पेड़ भी लगाने होंगे, की बात याद दिलाई है। आज के संदर्भ में यह कहानी बच्चे की नहीं समाज के हर वर्ग के लिए पठनीय और मननीय है। प्रकृति और प्रकृति के जीव अपना हक नहीं रखते, यह सीख 'उपकार रो बदळो' नामक कहानी में बड़े सरल शब्दों से देने का स्तुत्य प्रयास किया गया है तो 'मिन्नी मांवसी रो गंगा सिनान' कहानी में तीर्थ और संग का महत्त्व दिखाया गया है। अच्छा होता यदि कुत्ते को देखकर बिल्ली के भाग जाने की बजाय सद्संगति के असर से कुत्ते का उससे बैर भाव मिटने की प्रेरणा दी जाती। 'गुड्डे-गुड्डी रो ब्याव' कहानी में जंगल के जानवर पात्रों को आधार बनाते हुए लेखक ने आज के शिक्षित और सभ्य समाज में भी बालक-बालिकाओं की छोटी अवस्था में शादी करने की प्रवृत्ति को नकारने का संदेश दिया है। आज समाज में बालकों की अपेक्षा किस प्रकार से बालिकाएँ पढ़ाई-लिखाई और अन्य क्षेत्रों में आगे बढ़ रही हैं, इसका परिचय आपकी 'मेधावी गरदभकुमारी' कहानी दे रही है, जिसमें गरदभकुमारी अपनी सफलताओं के माध्यम से समाज को एक सकारात्मक संदेश देकर सुखानुभूति कराती है। 'सोगन' कहानी हृदय परिवर्तन की कहानी है। कई बार कई घटनाएँ अपना प्रभाव छोड़ते समय व्यक्ति का हृदय परिवर्तन कर देती हैं। 'सोगन' कहानी का पात्र 'परमो' भी अपने ऊपर मधुमक्खियों से आई विपत्ति से सीख लेकर जानवरों के प्रति सद्भाव बनाए रखने की सीख लेता है। 'सोने रो घड़ो' संगठन के महत्त्व को तो 'वो ई टाबर साचो' कहानी जल्दी सोने और जल्दी उठने के महत्त्व को रखते हुए बालमन पर सकारात्मक असर छोड़ने में सफल होगी। 'भूरी बकरी' बाल कहानी जरूरत में दूसरों के काम आना और समाजकंटकों से घबराने की अपेक्षा उनसे डटकर मुकाबला करने की प्रेरणा देती है। 'राजा रो जलम दिन' रक्तदान की प्रेरणा देने और रक्तदान के प्रति फैली भ्रांतियों को दूर करने वाली कहानी है, तो 'डॉक्टर हाथी अस्पताळ' वाहन चालकों को यातायात के नियमों को मानकर सुरक्षित रहने के लिए प्रेरित करती है। 'मधुबण में खेलकूद' कहानी में जीवन में खेलकूद की जरूरत को बताने का प्रयास किया गया है तो इसी क्रम में 'पाणी है अणमोल' कहानी पानी के समझपूर्ण उपयोग की सीख दे रही है। 'तीरथ जातरा' कहानी के माध्यम से लेखक श्री तँवर ने जंगल के जानवरों को प्रतीक रूप में प्रस्तुत करते हुए आज के समय में समाज के वरिष्ठ नागरिकों के लिए राजकीय सहायता से तीर्थयात्रा करने जैसी सरकारी योजनाओं का परिचय दिया है।

'मेह बाबो आयो' बाल कथा-संकलन की सभी कहानियाँ वर्तमान संदर्भ में बच्चों के लिए अत्यंत प्रेरणादायी और उपयोगी रहेगी। लेखक ने अपनी कहानियों में बच्चों को जोड़ने के लिए सरल और बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते हुए सरल संवाद रचकर कहानियों में जान डाल दी है। निश्चय ही यह संकलन वर्तमान में खल रही दादी-नानी की कमी को कुछ हद तक दूर कर सकेगा। पुस्तक में चित्रकार गणेश की कला भी विशेष उल्लेखनीय और श्लाघनीय है। कहानी की विषयवस्तु के अनुरूप ही बने सुन्दर चित्र पाठक को बहुत कुछ बयान कर जाते है। श्री ओमप्रकाश तँवर का प्रयास स्तुत्य है और निश्चय ही इससे राजस्थानी भाषा के साहित्य में श्रीवृद्धि होगी। नए वर्ष में प्रवेश के साथ ही श्री तँवर की बच्चों के लिए यह अनुपम भेंट सदैव स्मरणीय रहेगी।

समीक्षक : **विश्वनाथ भाटी**
प्रधानाचार्य, वार्ड नं. 8, तारा नगर, चूरू
मो: 9413888209

पथरीले पथ का पथिक

लेखक : हुक्मीचन्द शर्मा **प्रकाशक :** श्री चार मरुवा सेवा ट्रस्ट, G-3, लक्ष्मी भवन, नई दिल्ली **प्रकाशन वर्ष :** 2018 **पृष्ठ :** 266 **मूल्य :** ₹ 250

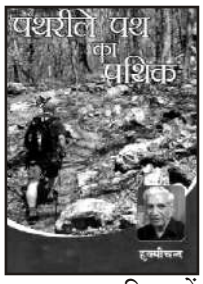

व्यक्ति की प्रकृति सृजन की होती है। व्यक्ति अपनी प्रतिभा का उपयोग सकारात्मक या नकारात्मक सृजन में कर सकता है। सृजनात्मक सृजन उसे शीर्ष पर ले जाता है तथा नकारात्मक सृजन उसे समाज व राष्ट्र की नजरों में गिरा देता है। व्यक्ति अपने सकारात्मक अनुभवों द्वारा जीवन में खुशी ला सकता है। अपने जीवन की दुर्बलताओं को बेझिझक कहना या लिखना उसकी कमजोरी नहीं, अपितु उसका साहस दृष्टिगोचर होता है। ऐसे ही प्रतिमान गढ़े हैं संघर्षमय जीवन जीने वाले हुकमीचन्द शर्मा ने, जिन्होंने अपनी आत्मकथा 'पथरीले पथ का पथिक' में संजोए हैं। इस कृति के लेखक हुक्मीचन्द शर्मा एक अनुभवी व बेबाक बात कहने वाले इन्सान हैं। आत्मकथा में व्यक्ति अपने जीवन के अधिकांश खट्टे-मिट्ठे अनुभवों को संजोने का प्रयास करता है। व्यक्ति को अपने जीवन में अपने उतार-चढ़ाव, सुख-दुःख व अच्छे-बुरे का अनुभव होता है। कौन उसके पक्ष व कौन उसकी आलोचना के पक्ष में खड़ा है इससे ही वह तय करता है कि उसे किस तरफ जाना है। ऐसे भी कई अनुभव होते हैं जिन्हें भूल पाना कठिन होता है। हुक्मीचन्द शर्मा ने इसी प्रकार के अनुभवों को आत्मकथा के रूप में लिखकर पाठकों के साथ विचार साझा किए हैं। लेखक का जन्म उन दिनों हुआ जब भारत की स्वतन्त्रता का आन्दोलन चरम था। लेखक को अपने पिता जी के साथ सरगोधा जाना पड़ा, जहाँ वे नौकरी करते थे। लेखक को भारत-पाक बंटवारे का ज्ञान तो नहीं रहा होगा, लेकिन वे इसके प्रत्यक्ष गवाह हैं। कुछ समय के लिए महात्मा गाँधी का सान्निध्य मिलना उनके लिए गर्व की बात है। इस आत्मकथा में लेखक हुक्मीचन्द शर्मा ने अपने बाल्यकाल से लेकर अब तक ने अनुभवों को जिस बेबाक ढंग से लिखे हैं, यह पुस्तक बार-बार पढ़ने को उद्वेलित करती है। लेखक अपने जीवन में की गई भूलों को बेझिझक लिखता है, चाहे वह भूल एक रुपये के सिक्के को दीपक नीचे छिपाने की हो, रचनाकार ने लिखने में संकोच नहीं किया है।

लेखक अपनी विद्यालयी शिक्षा के बारे में उस समय के शिक्षक के व्यवहार का वर्णन करते हुए कहते हैं कि वे विद्यार्थियों के माता-पिता व छात्रों के साथ कितना आत्मीयता का व्यवहार करते थे। अपने परिवार के सदस्यों, उनकी आदतों, व्यवहार उनकी सादगी व विचारों का बखान लेखक ने अपनी कृति में बखूबी किया है। किशोरावस्था किसी व्यक्ति के जीवन का महत्त्वपूर्ण समय होता है। यही वह अवस्था है जिसमें बालक के तथा उसे सही या गलत रास्ते के चुनाव की जानकारी कम ही होती है। यह संवेदनशील समय होता है। इस उम्र में माता-पिता व गुरुजनों का उचित मार्गदर्शन मिल जाए तो कामयाबी के शीर्ष पर पहुँच सकता है। बचपन की शरारतों, अठखेलियों का वर्णन लेखक ने बिना संकोच के किया है। रेल के टी.टी. के साथ झगड़ा व अन्य उद्दण्डता का लेखा-जोखा सटीक लगा।

लेखक का जीवन अभाव में गुजरा। उस समय बिजली नहीं थी और न ही आज की तरह टी.वी. मोबाइल, इंटरनेट आदि तकनीकी सेवाएँ। काँच की बोतल को चिमनी बना कर उसके प्रकाश में रात को पढ़ना , जैसा मिले वैसा खाना, आदि लेखक के प्रेरणादायी अनुभव हैं। लेखक अपनी माँ के बारे में अपने अनुभवों को लिखते हुए कहते है-'मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि माँ कोमल होती है या कठोर होती है। पर इतना अवश्य ही समझ में आ गया कि माँ तो माँ ही होती है। (पृष्ठ 63)। लेखक की अविस्मरणीय घटना कि बाल्यकाल में चोरी करने के आरोप में माँ द्वारा लेखक की मोगरी से पिटाई, अभी तक तरोताजा है। उनका मानना है आज वे जो भी हैं माँ की बदौलत ही हैं। बी.एससी. तक की पढ़ाई और प्राइवेट स्कूल में नौकरी के अनुभव प्रेरणादायी हैं। इसके बाद प्राइवेट क्षेत्र में नौकरी और भारत के विभिन्न क्षेत्रों के कारोबारी सम्बन्धी यात्राओं को सुन्दर ढंग से शब्दशिल्प की कारीगरी से लिखा है। कोलकात्ता में रहते हुए अपने संघर्षमय जीवन का वर्णन पाठकोपयोगी लगा।

लेखक की जीवन संयत रहा, कभी भी अपने चरित्र पर आँच नहीं आने दी। इस युग में बेदाग चरित्र महानता से कम नहीं है। रचनाकार हुक्मीचन्द ने जीवन में संघर्ष किया, उतार-चढ़ाव देखे, परन्तु चारित्रिक विकास बेदाग रहा। सामाजिक दायित्त्व पूरे करने के लिए विभिन्न स्थानों पर नौकरी करनी पड़े तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होनी चाहिए। व्यक्ति का मान-सम्मान, सामाजिक स्तर, उसका सुखमय पारिवारिक जीवन ही उसके जीवन भर की कमाई होती है। व्यक्ति के जीवन में उसके सामाजिक परिवेश से कुछ अवगुण यथा चोरी करना, बीड़ी-सिगरेट, तम्बाकू आदि व्यसन, समझ आने तक घर कर सकती है। समय रहते इन्हें सुधार लिया जाए तो जीवन सफल हो सकता है। अपने से बड़ों की प्रेरणा व उनके अनुभवों का लाभ उठना व्यक्ति का सौभाग्य होता है।

इस कृति की विशेषता यह है कि यह पुस्तक सकारात्मक सोच को विकसित करती है। इसका मुखावरण पृष्ठ सुन्दर, आकर्षक व गरिमामय है। इस 266 पृष्ठ की आत्मकथा में लेखक ने अपने परिवार सदस्यों व प्रियजनों के चित्र भी प्रकाशित कर अपनी उत्कृष्ट सोच का परिचय दिया है। इस पुस्तक के बारे अपनी भूमिका में वरिष्ठ साहित्यकार श्याम जांगिड़ लिखते हैं ''इस आत्मकथा में यह सराहनीय है कि हुक्मीचन्द जी ने अपने बचपन और युवावस्था की बदफेलियों, उदण्डताएं, चोरी-चकारी आदि का खुले दिल से वर्णन किया है। ब्राह्मण होकर ब्रह्म भोज में सात बार दक्षिणा लेने का वर्णन तक करने से नहीं चूके। अपनी जाति पर भी कई जगहों पर कटाक्ष किए हैं।'' प्राक्कथन में मईनुदीन कोहरी हुक्मीचन्द के बारे में लिखते हैं-''इस पुस्तक को पढ़ने से ऐसा प्रतीत हो रहा है कि इन्होंने अपने सभी संस्मरण निरेपक्ष होकर लिखे हैं और उन्होंने अपने जीवन की सफलताओं व दुर्बलताओं का संतुलित व व्यवस्थित चित्रण करते हुए अपने जीवन के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को निष्पक्षतापूर्ण उद्घाटित किया है।'' इसमें कोई दोराय नहीं कि हुक्मीचन्द का जीवन संघर्षमय रहा है इस पुस्तक को पढ़ने से अनुभवहीन लोगों को प्रेरणा मिलेगी। हुक्मीचन्द का अनुभव रहा है कि संघर्ष ही जीवन है और संघर्ष से ही शीर्ष पर पहुँचा जा सकता है। लेखक हुक्मीचन्द साधुवाद के पात्र हैं जिन्होंने प्रेरणादायी आत्मकथा लिख कर समाज व भटके हुए लोगों को प्रेरणा देने का काम किया है। उनके दीर्घायु व अच्छे स्वास्थ्य की काम के साथ सुन्दर व आकर्षक आत्मकथा लिखने पर बधाई।

समीक्षक : **रामजीलाल घोड़ेला**
प्रधानाचार्य, रा.आ.उ.मा.वि.
आडसर, लूणकरणसर (बीकानेर)
मो: 9414273575

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shalaprangan.shivira@gmail.com** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

विद्यालय स्टाफ द्वारा नौनिहालों को स्वेटर वितरण

बीकानेर– राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय, ऊपनी में आयोजित कार्यक्रम में विद्यालय के विशेष आवश्यकता वाले 121

छात्र-छात्राओं को स्वेटरों का वितरण किया गया। चयनित छात्र-छात्राओं में अधिकांश प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों को शामिल किया गया। व्याख्याता श्री विकास चन्द्र ने कहा कि इस हेतु विद्यालय स्टाफ ने एक-एक हजार रुपये इकट्ठे करके कुल 23,000 की लागत से विद्यालय के 121 बच्चों को स्वेटरों का वितरण किया। इस सम्बन्ध में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रधानाचार्य श्री अनुराग सक्सेना ने छात्रों को सर्दी से विशेष बचाव की सलाह देते हुए नियमित विद्यालय आने एवं आगामी बोर्ड परीक्षा हेतु लगन से पढ़ाई करने को कहा। कार्यक्रम का संयोजन श्री सुनील मीणा एवं श्री नंदलाल जाँगिड़ ने किया। इस अवसर पर शाला स्टाफ लूणाराम ज्याणी, लालचन्द सांखुनिया, रामनारायण गोदारा, श्याम मोहन शर्मा, ओमप्रकाश सिद्ध, शिवचरण मीणा, गोपाल मीना, मोनिका स्वामी, चन्द्रप्रकाश जैन सहित ग्रामवासी एवं अभिभावकगण उपस्थित रहे एवं स्टाफ के इस पुनीत कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

केलवाड़ा में जीवन कौशल शिक्षा कार्यक्रम का आयोजन

कुम्भलगढ़– राजसमन्द जिले के महाराणा कुम्भा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय केलवाड़ा में राजस्थान स्टेट ओपन के 15 दिवसीय पीसीसी. शिविर के तहत संस्थाप्रधान श्री मोहनलाल बलाई के सानिध्य में 31 दिसम्बर, 2018 को चेतना सत्र में 'सामाजिक जुड़ाव' विषयक जीवन कौशल कार्यक्रम का आयोजन किया गया। शिविर प्रभारी श्री ललित श्रीमाली एवं संदर्भ व्यक्ति श्री मोहन शंकर आमेटा ने भी जीवन विकास के सन्दर्भ में विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर संदर्भ व्यक्ति एवं व्याख्याता श्री सत्यनारायण नागोरी को अणुव्रत विश्व भारती, राजसमन्द के 37 वें स्थापना दिवस पर मुनि श्री सुरेश कुमार के मार्गदर्शन में 'टीचर्स सक्सेस स्टोरी प्रतियोगिता' में प्रथम स्थान का खिताब पाने की खुशी में स्वागत अभिनन्दन कर बधाई व शुभकामनाएँ दी।

रड़ोद में स्वेटर वितरण व भामाशाह सम्मान समारोह

जोधपुर– राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रड़ोद, भोपालगढ़, जोधपुर में स्टाफ सदस्यों के सहयोग से गरीब एवं जरूरतमंद छात्र-छात्राओं को स्वेटर वितरित किए गए। स्वेटर वितरण कार्यक्रम का आयोजन स्थानीय ग्राम पंचायत सरपंच प्रतिनिधि एवं भामाशाह श्री दयालराम भडियार एवं ग्रामवासियों की उपस्थिति में किया गया। इस अवसर पर ग्रामवासी श्री पूरणसिंह द्वारा विद्यालय को एक लोहे की आलमारी भेंट की गई। प्रधानाचार्य श्री मनु वर्मा ने सभी उपस्थित ग्रामीणजनों एवं अभिभावकों का स्वागत एवं आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस तरह के कार्यक्रम बालक-बालिकाओं को विद्यालय से जोड़ने के साथ-साथ स्टाफ सदस्यों का बालकों के प्रति संवेदनशीलता प्रकट करते हैं। वरिष्ठ अध्यापक श्री गोपाल सिंह ने इस कार्यक्रम का संचालन किया।

विवेकानंद जयंती को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाई

बीकानेर– राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय शिवनगर बीकानेर में स्वामी विवेकानंद की 156वी जयंती राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में बड़ी धूमधाम से मनाई गई, इस अवसर पर कार्यक्रम की

अध्यक्षता प्रधानाचार्य श्री अनुज अनेजा ने की। कार्यक्रम की शुरुआत स्वामी जी के चित्र के समक्ष दीप जलाकर व माल्यार्पण कर की गई, कार्यक्रम अधिकारी श्री मोहरसिंह सलावद ने छात्रों को स्वामी विवेकानंद के जीवन परिचय के बारे में बताया व कहा कि उनके कथन 'उठो जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो' को ध्यान में रखते हुए अपना लक्ष्य तय करें और उसको प्राप्त कर अपना ओर देश का नाम रोशन करें जिस प्रकार स्वामी जी ने 1893 में शिकागो विश्व धर्म

संसद में देश का नाम रोशन किया उसी प्रकार आप मन लगाकर अपना अध्ययन करें, जिससे जीवन में सफल हो सके। इस मौके पर सभी बच्चों व शिक्षकों ने उनके बताए रास्ते पर चलने का संकल्प लिया। कार्यक्रम को प्रधानाचार्य अनुज अनेजा, व्याख्याता सुभाषचन्द्र न्योल,शिक्षक सुजानसिंह, रणछोड़ सिंह सोढा, बहादुरसिंह, तेजपाल मेघवाल, दयाराम, प्रकाश कुमार सहित छात्र रविन्द्र सिंह, गोपाल दान, स्वरूप सिंह, रूपसिंह, दौलत सिंह, गणपतसिंह, गीता चारण आदि ने विवेकानंद के जीवन पर प्रकाश डाला साथ ही विद्यालय में भाषण प्रतियोगिता में प्रथम गीता चारण, द्वितीय दौलत सिंह, तृतीय रूपसिंह, चित्रकला में प्रथम भवरसिंह, द्वितीय भावना कंवर, तृतीय कविता स्वामी, निबन्ध में प्रथम हरिशपाल, द्वितीय कमला, तृतीय प्रवीण कुमार रहे। सभी को पुरस्कृत किया गया।

विद्यार्थियों को स्वेटर वितरण

लूनकरणसर– निकटवर्ती राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय आडसर में कालू के भामाशाह श्री बजरंग लाल राघाणी एवं श्री शिवलाल राघाणी द्वारा निर्धन विद्यार्थियों को 60 स्वेटरों का वितरण किया गया। इस

अवसर पर प्रधानाचार्य श्री रामजीलाल घोड़ेला द्वारा कालू के भामाशाहों द्वारा उदारता से किए जा रहे जन कल्याण के कार्यों की सराहना करते हुए कालू के भामाशाहों को शैक्षिक उन्नयन में सहयोग देने का आह्वान किया। व्याख्याता श्री ओंकार मल राघाणी ने आगुन्तकों का स्वागत करते हुए निर्धनों की सेवा को ईश्वर की पूजा बताया। इस अवसर पर नन्दलाल, शिवकुमार, ओमप्रकाश, सुलतानाराम, किरण बाला, सीमा कविया, गणेशाराम, मेघनाथ सिद्ध, बिशन नाथ, रामनिवास पारीक ने अपने विचार रखे।

लूनकरणसर में हुआ स्वेटर वितरण कार्यक्रम

लूनकरणसर–राजकीय प्राथमिक विद्यालय भाटों का बास लूनकरणसर, बीकानेर में दिनांक 14 जनवरी, 2019 को श्री सत्यनारायण गोदारा (व्याख्याता, राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय लूनकरणसर) की तरफ से आर्थिक रूप से कमजोर एवं जरूरतमन्द छात्र-छात्राओं को स्वेटर वितरित किए गए। विद्यालय की संस्थाप्रधान श्रीमती शशि वर्मा ने स्वेटर वितरण कार्यक्रम को सराहनीय एवं अनुकरणीय बताते हुए कहा

कि समाज के सभी लोगों को इससे प्रेरणा लेनी चाहिए तथा भामाशाह श्री गोदारा का आभार व्यक्त किया।

स्वर्ण पदक विजेता खिलाड़ियों का सम्मान

बाड़मेर– पुरस्कृत शिक्षक फोरम बाड़मेर द्वारा राष्ट्रीय स्तरीय सॉफ्टबॉल खेलकूद प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक विजेता खिलाड़ियों को सम्मानित किया गया। पुरस्कृत शिक्षक फोरम के जिलाध्यक्ष श्री सालगराम परिहार

ने कार्यक्रम में अंडर 14 वर्ष गोल्ड मेडल विजेता खिलाड़ी- खुशबू, पलक एवं अशोक कुमार को शॉल ओढ़ाकर व माला पहनाकर तथा स्मृति चिह्न प्रदान कर खेल प्रतिभाओं का बहुमान किया। इस अवसर पर शारीरिक शिक्षक महेंद्र कुमार जयपाल, पृथ्वी सिंह, जैसाराम धायल नेशनल अवॉर्डी, समाज सेवी ममता दवे सहित गणमान्य उपस्थित रहे। परिहार ने कहा कि राजस्थान के खिलाड़ियों ने राज्य का नाम राष्ट्र स्तर पर रोशन किया है।

जनसहयोग से मेज और स्टूल के 43 सेट शाला को भेंट

अजमेर– राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय होकरा तहसील पुष्कर में ग्रामवासियों द्वारा 60,000 (अखरे रुपए साठ हजार) रुपए की लागत से बने लोहे की मेज और स्टूल के 43 सेट शाला को जनसहयोग से भेंट किए गए। इस अवसर पर प्रधानाचार्य श्री गोविन्द भारद्वाज ने एसडीएमसी. अध्यक्ष श्री झालासिंह रावत, जिला परिषद सदस्य श्री माणकसिंह, भैंरूसिंह, गुलाबसिंह रावत, पूर्व सरपंच बुद्धसिंह रावत, उपसरपंच मुकेशसिंह, नाहारसिंह, महादेवसिंह, जयसिंह वार्ड पंच नगाराम, हगामसिंह रावत, महिला सदस्य तारा रावत एवं विद्यालय स्टाफ उपस्थित रहे।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

चतुर्दिक समाचार

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

आइएएस टॉपर को हॉवर्ड से मिले 170 में से 171 अंक

नई दिल्ली– किसी परीक्षा को सौ में सौ नंबर पाने के कई उदाहरण मिल जाएँगे, लेकिन शायद ही आपने पूर्णांक से एक अंक ज्यादा पाने की बात सुनी हो। यह उपलब्धि अमरीका के हॉवर्ड यूनिवर्सिटी में पढ़ाई कर रहे 2002 में आइएएस टॉपर रहे आइएएस अधिकारी अंकुर गर्ग ने अपने नाम की है। मैक्रो इकोनॉमिक्स की परीक्षा में उन्होंने असाधारण प्रदर्शन करते हुए 170 में से 171 अंक हासिल किए हैं। यह परीक्षा अंतर्राष्ट्रीय विकास में लोकप्रशासन के दो वर्षीय परा स्नात्तक पाठ्यक्रम का हिस्सा है। अंकुर गर्ग ने 22 दिसंबर, 2018 को फेसबुक पोस्ट में अपनी सफलता का श्रेय पिता को दिया। उन्होंने लिखा, जब मैं स्कूल में था तो मेरे पिता अक्सर कहा करते थे किसी परीक्षा में 10 में से 10 अंक पाना काफी नहीं है। हमेशा 10 में से 11 अंक हासिल करने का प्रयास करो। अंकुर गर्ग ने अपने पोस्ट में परीक्षा में मिले स्कोर कार्ड की तस्वीर भी साझा की।

साभार: राजस्थान पत्रिका 1 जनवरी, 2019

चाहे भूकम्प आ जाए फोन नहीं कटेगा

जयपुर– सेटेलाइट मोबाइल फोन अब तक सेना, रेलवे, आपदा प्रबंधन तक सीमित था लेकिन अब इसे आमजन भी खरीद सकेंगे। बीएसएनएल. ने यह फोन सामान्य उपभोक्ताओं को उपलब्ध नहीं कराने की बंदिश हटा दी है। इसकी खासियत है कि इसमें कॉल ड्रॉप नहीं होंगे लेकिन कॉल दर 35 रुपये प्रति मिनट लगेगी। इनकमिंग कॉल की भी यही रेट देनी होगी। बीएसएनएल. ने 6 माह पहले इसकी शुरुआत की थी। तब इसकी कॉल रेट 60 रुपए प्रति मिनट थी। जिसे घटाकर अब 35 रुपये प्रति मिनट किया गया है। सरकारी एजेंसियों के लिए पहले कॉल रेट 45 रुपये प्रति मिनट थी, जो अब 25 रुपए प्रति मिनट की गई है। हालांकि कुछ रुपए में असीमित मोबाइल कॉल के दौर में यह दर अधिक है लेकिन इसमें चौबीसों घंटे कनेक्टविटी की सुविधा मिलेगी। **साभार: राजस्थान पत्रिका 2 जन. 19 से**

ब्रेल लिपि बनी मददगार, बाधा नहीं है नेत्रहीनता

बीकानेर– कहते हैं हौसला बुलंद हो तो कोई काम असंभव नहीं है। मन में दृढ़ संकल्प हो तो शारीरिक दिव्यांगता भी किसी काम में बाधा नहीं बन पाती। ऐसे ही जज्बे वाले दृष्टिबाधित धनाराम अपने कार्य को पूरी निष्ठा से अंजाम दे रहे हैं। उत्तर पश्चिमी रेलवे के बीकानेर रेलवे स्टेशन स्थित लोको लॉबी में कार्यरत धनाराम ने बताया कि उनके लिए ब्रेल लिपि वरदान साबित हुई है। दृष्टिहीन होने के बावजूद उन्हें इसकी मदद से लिखने-पढ़ने में कोई परेशानी नहीं होती है। रेलवे में मल्टीपरपज खलासी धनाराम ने बताया कि थोड़ी चलने-फिरने में मुश्किल होती है, लेकिन इसके लिए भी विशेष तरह की स्टिक का सहारा मिल रहा है।

साभार: राजस्थान पत्रिका 21 जनवरी 19 से

चाँद के अनदेखे हिस्से पर पहुँचा चीन

बीजिंग– चाँद का वह हिस्सा जो पृथ्वी से कभी नहीं दिखता गुरुवार को चीन ने वहाँ अपना अंतरिक्षयान चांग ई-4 उतार दिया। ऐसा करने वाला चीन दुनिया का पहला देश है। चाँद के इस हिस्से को डार्क साइड (अंधेरी सतह) कहा जाता है। चांग ई-4 को 8 दिसंबर (2018) को धरती से छोड़ा गया था। चीनी अंतरिक्ष एजेंसी के मुताबिक, हमनें एक लैंडर और एक रोवर वाला अंतरिक्षयान सुबह 10.26 बजे चाँद के अनदेखे हिस्से में उतारा है। इसकी मदद से वहाँ पर उसकी सतह और खनिज के बारे में पता लगाया जाएगा। **साभार: रा. पत्रिका 4 जनवरी 2019 से**

इंसानों को मंगल पर ले जाने वाला रॉकेट

फॉल्कन हैवी रॉकेट की सफलता से उत्साहित अमरीकी उद्यमी एलन मस्क बीएफआर/स्टारशिप रॉकेट के निर्माण की योजना पर काम कर रहे हैं। इससे वे इंसानों को मंगल ग्रह पर ले जाना चाहते हैं। मस्क ने ट्विटर पर इसकी कुछ तस्वीरें साझा की है। रॉकेट के दो बड़े भाग तैयार दिख रहे हैं। इस रॉकेट की गति इतनी अधिक है कि यह दिल्ली से न्यूयॉर्क 11765 किमी. दूरी को महज 25 मिनट में तय कर सकता है। स्पेसएक्स के सीईओ एलन मस्क इंसानों के लिए मंगल पर कॉलोनी बसाने की योजना पर भी काम कर रहे हैं। इसका एक प्रोटोटाइप मॉडल उन्होंने फरवरी 2018 में जारी किया था। **साभार: रा. पत्रिका 6 जनवरी 2019 से**

जल्द ही बिना छुए चला सकेंगे स्मार्टफोन

वॉशिंगटन– बाजार में जल्द ही ऐसे स्मार्टफोन उपलब्ध होंगे, जिन्हें चलाने के लिए उन्हें छूना भी नहीं पड़ेगा। अमरीका के संघीय संचार आयोग (एफसीसी) ने गूगल को नए रडार मोशन सेंसर तकनीक आधारित प्रोजेक्ट सोली के परीक्षण की मंजूरी दे दी है। इस तकनीक की मदद से कोई भी व्यक्ति स्मार्टफोन, स्मार्टवॉच या अन्य इलेक्ट्रिक उपकरणों को बिना छुए उन्हें नियंत्रित कर सकेगा। इस बीच यह चिंता भी उभरकर सामने आई है कि यह तकनीक किसी दूसरे के इलेक्ट्रिक उपकरणों में छेड़छाड़ कर सकती है। सेंसर सोली को लेकर 2015 से काम चल रहा है। इस तकनीक से लैस डिवाइस को कलाई पर बाँधकर इस्तेमाल किया जाता है। इसकी मदद से उपयोगकर्ता हवा में हाथ के इशारों का उपयोग कर इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों पर बात कर सकेंगे। **साभार: रा. पत्रिका 4 जनवरी 2019 से**

भविष्य की घटनाओं अनुमान लगा सकते

कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी की शोध के अनुसार मनुष्य भविष्य में होने वाली कुछ घटनाओं का पूर्वानुमान लगा सकते हैं। मनुष्य के मस्तिष्क में दो आंतरिक घड़ियाँ होती है जो सेरेक्लेम, वेसल गैंगलिया से जुड़ी होती है। मस्तिष्क के यह दोनों भाग अल्पकालिक पूर्वानुमान लगाते हैं। मस्तिष्क में सेरेक्लेम से जुड़ा अंतराल समय निर्धारण होता है जो अनुभवों के आधार पर पूर्वानुमान लगाता है, जबकि बेसल गैंगलिया आवर्तन (रिपोर्ट) के आधार पर पूर्वानुमान लगाता है। **साभार: रा. पत्रिका 4 जनवरी 2019 रविवारीय परिशिष्ठ से**

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

जालोर

रा.आ.उ.मा.वि. कोटड़ा (R) तह. रानीवाड़ा में जनसहयोग से निम्न कार्य करवाए गए (1) विद्यालय की चार दीवारी 1000 मीटर का निर्माण लागत चार लाख पचास हजार रुपये, (2) विद्यालय भवन की छत पर मार्बल टुकड़े लगाकर मरम्मत, कक्षा-कक्ष 8X20X25= 4000 वर्ग फुट जिसकी लागत दो लाख रुपये, (3) विद्यालय में चद्दर शैड निर्माण 25x60= 1500 वर्ग फीट लागत- एक लाख पचास हजार रुपये मात्र, (4) विद्यालय में फर्नीचर छात्र-छात्राओं के लिए टेबल-स्टूल 140 जिसकी लागत एक लाख पचास हजार रुपये मात्र।

जोधपुर

रा.उ.मा.वि. नागोरी गेट को श्रीनारायण वेणुगोपाल वैद्य (श्रीराम इलेक्ट्रिकल गोल बिल्डिंग जोधपुर) से 10 ट्यूबलाइट सैट प्राप्त जिसकी लागत 3,000 रुपये तथा 15 सेलो प्लास्टिक कुर्सियाँ प्राप्त जिसकी लागत 10,000 रुपये।

झालावाड़

रा.आ.उ.मा.वि. हरनावदा गजा, तह. पिड़ावा को श्री सत्यनारायण सोनी स्व. पिता की स्मृति में एक लेक्चर स्टैण्ड जिसकी लागत 2,500 रुपये तथा एक वाटर कूलर विद्यालय को सप्रेम भेंट जिसकी लागत 20,390 रुपये, श्री नारायण सिंह सिसोदिया द्वारा 50 विद्यार्थियों को चरण पादुका हेतु 2,500 रुपये एवं 5 निर्धन विद्यार्थियों हेतु शुल्क वास्ते 2,500 रुपये विद्यालय को सप्रेम भेंट। **रा.मा.वि. जतावा तह. मनोहरथाना** में श्री नाथूलाल लोधा द्वारा 2,00,151 रुपये की लागत से एक कमरा का निर्माण करवाया गया तथा बच्चों के स्टूल मेज हेतु 8,800 रुपये प्राप्त हुए।

झुंझुनूं

रा.बा.उ.मा.वि. उदयपुरवाटी में स्व. सेठ श्री जवाहरमल मोदी के सुपौत्र श्री अशोक मोदी द्वारा 2,90,000 रुपये की लागत से सम्पूर्ण भवन की मरम्मत एवं रंग-रोगन करवाया गया तथा सुपौत्र सुशील मोदी तनसुकिया आसाम प्रवासी द्वारा 1,50,000 रुपये की लागत से सम्पूर्ण भवन की मरम्मत एवं रंगरोगन करवाया गया, श्रीमती सुमित्रा मेचू (सेवानिवृत्त अध्यापिका) से एक माइक सैट प्राप्त हुआ। जिसकी लागत मूल्य 11,000 रुपये, S.B.I. शाखा उदयपुरवाटी के द्वारा 50वें स्थापना दिवस पर 121 बालिकाओं को स्वेटर, श्री राधेश्याम नायक (शाखा प्रबंधक) के द्वारा भेंट जिसकी लागत 31,000 रुपये, मो. इकरामुद्दीन लुहार द्वारा 65 बालिकाओं को स्वेटर वितरण जिसकी लागत 21,000 रुपये, मौ. सदीक मणिहार निवासी उदयपुरवाटी द्वारा 30 बालिकाओं को स्वेटर वितरण जिसकी लागत 11,000 रुपये, डॉ. आनन्द शर्मा निवासी पचलंगी द्वारा 10 बालिकाओं को गाइड की ड्रेस दी गई जिसकी लागत 2,100 रुपये, श्री परमेश्वर लाल (सेवानिवृत्त अध्यापक) द्वारा एक प्रिन्टर दिया गया जिसकी लागत 15,000 रुपये, श्री रामबल्लभ खैराड़ी निवासी उदयपुरवाटी द्वारा 40 छात्राओं को गणवेश भेंट जिसकी लागत 11,000 रुपये, श्री अरुण वैद्य निवासी उदयपुरवाटी की ओर से कक्षा 10 की गार्गी पुरस्कार प्राप्त व कक्षा-12 की मेधावी छात्राओं को 3,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। **-व. संपादक**

हमारे भामाशाह

रा.मा.वि., पूर्वी ढहर (चिराना) को श्री सत्यनारायण अग्रवाल (पूर्व सरपंच) अपने पिताजी की स्मृति में 15 छात्र-छात्राओं को विद्यालय गणवेश वितरित, श्री पूरणमल सैनी (आरा मशीन वाले निवासी भूमदड़ा चिराना) से 2 छत पंखे प्राप्त जिसकी लागत 2,500 रुपये, श्री संदीप कुमार (व.अ.) (निवासी परसरामपुरा नवलगढ़) से एक आलमारी भेंट लागत 11,200 रुपये।

जयपुर

रा.बा.उत्कृष्ट उ.प्रा.वि., जैतपुरा पं.स. गोविन्दगढ़ को श्री बन्नाराम जांगिड़ (निवासी सीकर) द्वारा 70 बालिकाओं को स्वेटर वितरित। **रा.आ.उ.मा.वि. आसलपुर** में आसलपुर क्रेशर यूनियन संघ द्वारा 7,00,000 रुपये (सात लाख रुपये) की लागत से मुख्य भवन के पूर्वी, दक्षिणी एवं पश्चिमी तीनों दीवारों का सम्पूर्ण प्लास्तर का कार्य का निर्माण करवाया गया, SDM. सदस्य श्री शिव जी राम कुमावत से वर्तमान सत्र के सभी विद्यार्थियों के लिए परिचय पत्र, टाई-बेल्ट तथा इनके साथ स्थानीय ग्रामीण महोदय सम्पत सिंह (एडवोकेट) ने टाई-बेल्ट योजना में सहयोग प्रदान किया।

भरतपुर

रा.आ.उ.मा.वि. भटावली को श्री गजेन्द्र सिंह व्याख्याता से Sound System प्राप्त हुआ जिसकी लागत 7,600 रुपये, श्री रामफूल मीना तथा B.Ed. Intership के विद्यार्थियों के सहयोग से एक इन्वर्टर तथा एक बैटरी प्राप्त जिसकी लागत 17,000 रुपये।

बीकानेर

रा. नेत्रहीन छात्रावासित उ.मा.वि. नई शिव बाड़ी रोड, पटेल नगर, बीकानेर को श्रीमती नूतनबाला कपिला, संयुक्त निदेशक मा.शि.राज. बीकानेर से एक आटोमैटिक वाशिंग मशीन प्राप्त हुई, श्रीमती सुनीता चावला (सहा. निदेशक मा.शि.राज. बीकानेर) से 14 रजाई 42 तकिए, ब्रेल पेपर प्राप्त, कोचर मण्डल बीकानेर से 5 लॉकर आलमारी एक प्रेशर कुकर, एक गैस स्टोव्ह प्राप्त, मस्त मण्डल सेवा संस्था, गंगाशहर व बीकानेर द्वारा 15 लोहे के पलंग व 25 कम्बल प्राप्त, श्री रामकिशोर मारू से 63 प्लास्टिक के स्टूल प्राप्त, चयन गोस्वामी एन.आर.टी. अमेरिका द्वारा 15 लकड़ी की टेबलें व 6 रजाई प्राप्त, बैंक ऑफ बड़ौदा बीकानेर से 12 लोहे के पलंग प्राप्त, डॉ. राजा बाबू उपकुलपति राज. हेल्थ (स्वास्थ्य) विश्वविद्यालय जयपुर द्वारा 15 गद्दे व बच्चों के थर्मोकोट प्राप्त, डॉ. नीलमणी गुप्ता (एसोसियेट प्रोफेसर) राज. डूंगर कॉलेज बीकानेर से खेलकूद का सामान व ब्रेल पेपर प्राप्त।

सीकर

रा.उ.मा.वि., खाचरियावास प.स. दांतारामगढ़ मे श्री सत्यनारायण सोमानी द्वारा 2,00,000 (दो लाख रुपये लागत से विद्यालय प्रांगण में माँ सरस्वती के मंदिर का निर्माण करवाया गया तथा विद्यार्थियों के बैठने हेतु 45 सैट स्टील फर्नीचर (स्टूल-टेबल) विद्यालय को सप्रेम भेंट जिसकी लागत 50,000 रुपये, श्री श्रवण कुमार कुमावत से 30 लोहे की स्टूल प्राप्त जिसकी लागत 15,000 रुपये।

राजसमंद

रा.आ.उ.मा.वि. गलवा श्री जगदीश चंद्र खटीक (पूर्व प्रधानाचार्य) ने अपने माता-पिता की पुण्य स्मृति में विद्यालय को एक लोहे की आलमारी (6x3) डबल लॉक भेंट जिसकी लागत 5,100 रुपये।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

भूल सुधार

रा.उ.मा.वि. मालवा का चौरा (उदयपुर) श्रीमती मंजू जैन द्वारा विद्यालय विकास हेतु छात्र हित में 10,000 रुपये की जगह एक लाख रुपये का चैक विद्यालय को प्रदान पढ़ें।

शिविरा पत्रिका (मासिक) : फरवरी, 2019 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादकः संतोष शर्मा, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

माननीय राज्यमंत्री शिक्षा (प्रा. एवं मा. शिक्षा) विभाग (स्वतंत्र प्रभार) पर्यटन एवं देवस्थापन विभाग, राजस्थान सरकार श्री गोविन्द सिंह डोटासरा ने शिक्षा संकुल में शिक्षाविद् डॉ. राधाकृष्णन की मूर्ति के समक्ष श्रद्धासुमन अर्पित किए।

प्रमुख शासन सचिव (स्कूल शिक्षा) श्री भास्कर ए सावंत, निदेशक माध्यमिक शिक्षा राज. श्री नथमल डिडेल एवं अधिकारी गण माननीय शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री गोविन्द सिंह डोटासरा का अभिनन्दन करते हुए।

माननीय शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री गोविन्द सिंह डोटासरा शिक्षा संकुल के प्रशासनिक भवन में राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल द्वारा आयोजित कक्षा 10 व 12 के परीक्षा परिणाम की घोषणा करते हुए।

माननीय शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री गोविन्द सिंह डोटासरा अधिकारियों के साथ संवाद करते हुए।

अन्तर राज्य शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा को रवाना करते हुए संयुक्त निदेशक मा.शि.राज. बीकानेर श्रीमती नूतनबाला कपिला, श्री भरत कुमार मेहता संयुक्त निदेशक, उदयपुर, दल प्रभारी एवं विद्यार्थीगण। 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' के साथ भ्रमणकारी दल।

रा.उ.मा.वि. भादरा, हनुमानगढ़ में स्व. श्री धर्मचन्द शर्मा की स्मृति में उनके सुपुत्र श्री रमेश शर्मा द्वारा 4.50 लाख से निर्मित प्याऊ (वाटर कूलर सहित) व सरस्वती मंदिर का लोकार्पण करते हुए अतिथि एवं भामाशाह परिवार।

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/417/2017-19 शिविरा पत्रिका (मासिक) • फरवरी, 2019 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 फरवरी, 2019 पृष्ठ 52 • प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड, प्रशिक्षण केन्द्र, जयपुर में 26 से 30 दिसम्बर 2018 को 60 वां रोवर मूट 46 वीं रेंजर मीट में प्रदेश के माननीय चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. रघु शर्मा तथा स्टेट कमिश्नर (स्काउट) प्रमुख शासन सचिव (स्कूल शिक्षा) श्रीमान भास्कर ए सावंत एवं अतिथिगण ।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खोखसर, बाड़मेर में स्मार्ट क्लासेज का उद्घाटन व अवलोकन करते हुए माननीय राजस्व मंत्री हरीश चौधरी, अतिथिगण एवं विद्यार्थी।

सादुल स्पोर्ट्स स्कूल, बीकानेर के प्रांगण में 16 से 20 जनवरी, 2019 तक आयोजित 'पाई' ओलंपिक का जिला कलेक्टर, बीकानेर श्रीमान कुमार पाल गौतम, निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान श्रीमान नथमल डिडेल एवं अतिथिगण द्वारा शुभारम्भ किया गया ।

राजकीय महारानी बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में राज्य स्तरीय इंस्पायर एवार्ड मानक प्रदर्शनी (22-23 जनवरी, 2018) में 10 से 14 वर्ष के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों (बाल वैज्ञानिकों) द्वारा प्रदर्शित मॉडल का अवलोकन करते हुए निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान श्रीमान नथमल डिडेल एवं अधिकारीगण।